प्रकाशक—
सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट
बीकानेर।

मुद्रक—
सुराना प्रिन्टिङ्ग वर्क्स
४०२, अपर चितपुर
कलकत्ता-७

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ में बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्री के० एम० पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा सस्कृत, हिन्दी एव विशेषत: राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानो एव भाषाशास्त्रियो का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमे प्रारंभ से ही मिलता रहा है।

सस्था द्वारा विगत १६ वर्षो से बीकानेर मे विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तिया चलाई जा रही हैं, जिनमे से निम्न प्रमुख हैं—

१. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस संबंध मे विभिन्न स्रोतो से सस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दो का सकलन कर चुकी है। इसका सम्पादन आधुनिक कोशो के ढंग पर, लबे समय से प्रारभ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके हैं। कोश मे शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ, और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाए दी गई हैं। यह एक अत्यत विशाल योजना है, जिसकी सतोपजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है। आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य मे इसका प्रकाशन प्रारभ करना संभव हो सकेगा।

२. विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भडार के साथ मुहावरो से भी समृद्ध है। अनुमानत पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग मे लाये जाते हैं। हमने लगभग दस हजार मुहावरो का, हिन्दी मे अर्थ और राजस्थानी में उदाहरणों सहित प्रयोग देकर सपादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबंध किया जा रहा है। यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है।

यदि हम यह विशाल सग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह संस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिए भी एक गौरव की बात होगी।

३. आधुनिकराजस्थानीकाशन रचनओं काप्र

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१. कळायण, ऋतु काव्य। ले० श्री नानूराम संस्कर्ता

२. आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उपन्यास। ले० श्री श्रीलाल जोशी।

३ वरस गांठ, मौलिक कहानी सग्रह। ले० श्री मुरलीधर व्यास।

'राजस्थान-भारती' मे भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओ का एक अलग स्तम्भ है, जिसमे भी राजस्थानी कवितायें, कहानिया और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं।

४ 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन सस्था के लिये गौरव की वस्तु है। गत १४ वर्षो से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानो ने मुक्त कठ से प्रशंसा की है। वहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एवं अन्य कठिनाइयो के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन सम्भव नही हो सका है। इसका भाग ५ अङ्क ३-४ 'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक' वहुत ही महत्वपूर्ण एव उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अङ्क एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य-सेवा का एक वहुमूल्य सचित्र कोश है। पत्रिका का अगला ७वा भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। इसका अङ्क १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ का सचित्र और वृहत् विशेपाक है। अपने ढंग का यह एक ही प्रयत्न है।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के सम्वन्ध मे इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन मे भारत एव विदेशो से लगभग ८० पत्र-पत्रिकाएं हमे प्राप्त होती हैं। भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशो मे भी इसकी माग है व इसके ग्राहक हैं। शोधकर्त्ताओ के लिये 'राजस्थान भारती' अनिवार्यतः सग्रहणीय शोध-पत्रिका है। इसमें राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखो के अतिरिक्त संस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्रीनरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचन्द नाहटा की वृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है।

५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसधान, सम्पादन एव प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि को प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियो को सुरक्षित रखने एव सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एव शुद्ध रूप मे मुद्रित करवा कर उचित मूल्य मे वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। सस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रंथो का अनुसधान और प्रकाशन सस्था के सदस्यों की ओर से निरतर होता रहा है जिसका सक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६. पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई सस्करण प्रकाश मे लाये गये हैं और उनमे से लघुतम सस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अ श 'राजस्थान भारती' मे प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध सस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान-भारती मे प्रकाशित हुए हैं।

७. राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखा) की ७५ रचनाओ की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अ क मे प्रकाशित हुई है। उसका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य 'क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन सस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निवध राजस्थान भारती मे प्रकाशित किया जा चुका है।

९. मारवाड क्षेत्र के ५०० लोकगीतो का सग्रह किया जा चुका है। वीकानेर एवं जैसलमेर क्षेत्र के सैकडो लोकगीत, घूमर के लोकगीत, वाल लोकगीत, लोरिया और लगभग ७०० लोक कथाएं सग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतों के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पावूजी के पवाडे और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम 'राजस्थान-भारती' मे प्रकाशित किए गए हैं।

१० वीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखो का विशाल सग्रह 'वीकानेर जैन लेख सग्रह' नामक वृहत् पुस्तक के रूप मे प्रकाशित हो चुका है।

११. जसवंत उद्योत, मुहता नैणसी री ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्र थो का सम्पादन एव प्रकाशन हो चुका है।

१२. जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचद भंडारी की ४० रचनाओ का अनुसंधान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी को काव्य-साधना के सवध मे भी सबसे प्रथम 'राजस्थान-भारती' मे लेख प्रकाशित हुआ है।

१३. जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखो और 'भट्टि वश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

१४. बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रथो का अनुसधान किया गया और ज्ञानसार ग्रथावली के नाम से एक ग्रथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओ का सग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५. इसके अतिरिक्त सस्था द्वारा—

(१) डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज, और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियो के निर्वाण-दिवस और जयन्तिया मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्यिक गोष्ठियो का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमे अनेको महत्वपूर्ण निवध, लेख, कविताएँ और कहानिया आदि पढी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियो तथा भाषणमालाओ आदि का भी समय-समय पर आयोजन किया जाता रहा है।

१६. बाहर से ख्यातिप्राप्त विद्वानो को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्री कृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रन्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिवेरिओ-तिवेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानो के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं।

गत दो वर्षो से महाकवि पृथ्वीराज राठौड आसन की स्थापना की गई है। दोनो वर्षो के आसन-अधिवेशनो के अभिभाषक क्रमश: राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, बिसाऊ और पं० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, हूंडलोद, थे ।

इस प्रकार सस्था अपने १६ वर्षों के जीवन-काल मे, सस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरतर सेवा करती रही है । आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह संभव नही हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लडखडा कर गिरते पडते इसके कार्यकर्त्ताओं ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एव प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओ के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे । यह ठीक है कि सस्था के पास अपना निजी भवन नही है, न अच्छा सदर्भ पुस्तकालय है, और न कार्य को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं, परन्तु साधनो के अभाव मे भी सस्था के कार्यकर्ताओ ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश मे आने पर सस्था के गौरव को निश्चय ही बढा सकने वाली होगी ।

राजस्थानी-साहित्य-भंडार अत्यन्त विशाल है । अब तक इसका अत्यल्प अश ही प्रकाश मे आया है । प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एवं अनर्घ रत्नो को प्रकाशित करके विद्वज्जनो और साहित्यिको के समक्ष प्रस्तुत करना एव उन्हे सुगमता से प्राप्त कराना सस्था का लक्ष्य रहा है । हम अपनी इस लक्ष्य पूर्त्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढता के साथ अग्रसर हो रहे हैं ।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तको के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना सभव नही हो सका । हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक सशोध एव सास्कृतिक कार्यक्रम मंत्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओ के विकास की योजना के अंतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये रु० १५०००) इस मद मे राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल रु० ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशन

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष मे प्रदान की गई है, जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ३१ पुस्तको का प्रकाशन किया जा रहा है ।

१. राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२. राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल
३. अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४. हमीरायण—	श्री भवरलाल नाहटा
५. पद्मिनी चरित्र चौपई—	,, ,, ,,
६. दलपत विलास	श्री रावत सारस्वत
७. डिंगल् गीत—	,, ,, ,,
८. पवार वश दर्पण—	डा० दशरथ शर्मा
९. पृथ्वीराज राठोड़ ग्रंथावली—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
१०. हरिरस—	श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
११. पीरदान लालस ग्रंथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१२. महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३. सीताराम चौपई—	श्री अगरचन्द नाहटा
१४. जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचन्द नाहटा और डा० हरिवल्लभ भायाणी
१५. सदयवत्स वीर प्रबन्ध—	प्रो० मंजुलाल मजूमदार
१६. जिनराजसूरि कृतिकुसुमांजलि—	श्री भंवरलाल नाहटा
१७. विनयचन्द कृतिकुसुमांजलि—	,, ,, ,,
१८. कविवर धर्मवर्द्धन ग्रथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१९. राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२०. वीर रस रा दूहा—	,, ,, ,,
२१. राजस्थान के नीति दोहा—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२. राजस्थान व्रत कथाएं—	,, ,, ,,
२३. राजस्थानी प्रेम कथाएं—	,, ,, ,,
२४. चंदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५ भड्डली—	श्री अगरचन्द नाहटा म:विनय सागर
२६. जिनहर्ष ग्रथावली	श्री अगरचन्द नाहटा
२७. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथो का विवरण	,, ,,
२८. दम्पति विनोद	,, ,,
२९. हीयाली-राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य	,, ,,
३०. समयसुन्दर रासत्रय	श्री भंवरलाल नाहटा
३१. दुरसा आढा ग्रंथावली	श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन संग्रह (संपा० डा० दशरथ शर्मा), ईशरदास ग्रथावली (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासो (प्रो० गोवर्द्धन शर्मा), राजस्थानी जैन साहित्य (ले० श्री अगरचन्द नाहटा), नागदमण (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया), मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रथो का सपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नही हो रहा है ।

हम आशा करते है कि कार्य की महत्ता एव गुरुता को लक्ष्य मे रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमे अवश्य प्राप्त हो सकेगी -जिससे उपरोक्त सपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रथो का प्रकाशन सम्भव हो सकेगा ।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षाविकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मजूर की ।

राजस्थान के मुख्य मन्त्री माननीय मोहनलालजी सुखाडिया, जो सौभाग्य से शिक्षा मन्त्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एव पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने मे पूरा-पूरा योगदान रहा है। अत: हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस वृहद् कार्य को सम्पन्न करने मे समर्थ हो सके । सस्था उनकी सदैव-ऋणी रहेगी ।

इतने थोड़े समय में इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थो का संपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य में जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादको व लेखको के अत्यंत आभारी हैं।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर सग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन सग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियटल इन्स्टीट्यूट बडोदा, भाडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ वृहद् ज्ञान-भडार बीकानेर, मोतीचद खजाञ्ची ग्र थालय बीकानेर, खरतर आचार्य ज्ञान भण्डार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बवई, आत्माराम जैन ज्ञानभडार बडोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशंकर देराश्री, प० हरदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक सस्थाओ और व्यक्तियो से हस्तलिखित प्रतिया प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रन्थो का सपादन संभव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थो का सम्पादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय में ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियो का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छतः स्खलनंक्वपि भवत्येव प्रमादतः, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनो का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावो द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुनः मा भारती के चरण कमलो मे विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पाजलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

निवेदक
लालचन्द कोठारी
प्रधान-मंत्री
सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट
बीकानेर

बीकानेर,
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
सं० २०१७
दिसम्बर ३,१९६०.

कविवर विनयचन्द्र और उनका साहित्य

संसार में दो तरह के प्राणी जन्म लेते हैं। कुछ जन्मजात प्रतिभासम्पन्न होते हैं और कुछ परिश्रमपूर्वक प्रतिभा का विकास करते हैं। साहित्यकारों मे भी हम उभय प्रकार के व्यक्ति पाते हैं। कई कवियों की कविता मे स्वाभाविक प्रवाह होता है, शब्दावली अपने आप उनकी कविता में रत्नों की भाँति आकर जटित हो जाती है जो पाठकों को मुग्ध कर लेती है। कई कवियों की रचनाए शब्दों को कठिनता से बटोर कर संचय की हुई प्रतीत होती है। सुकवि विनयचन्द्र प्रथम श्रेणी के प्रतिभासम्पन्न कवि थे, जिनकी उपलब्ध रचनाओं का संग्रह प्रस्तुत ग्रन्थ मे प्रकाशित किया जा रहा है।

बत्तीस वर्ष पूर्व राजस्थान के महाकवि समयसुन्दर की रचनाओं का अनुसंधान करते हुए बीकानेर के श्री महावीर जैन मण्डल मे सं० १८०४ का लिखा हुआ एक गुटका प्राप्त हुआ जिसमें समयसुन्दरजी की अनेक फुटकर रचनाओं के साथ-साथ उनकी परम्परा के कुछ कवियों की भी रचनाएँ मिली। सुकवि विनयचन्द्र महो० समयसुन्दरजी की परम्परा मे ही थे और उस गुटके के लिखनेवाले भी उसी परम्परा के थे अतः विनयचन्द्र की भी ४ रचनाएँ इस प्रति में प्राप्त हुई जिनमे से नेमिराजुल बारहमासा और राजिमतीरहनेमि सझाय नामक उत्कृष्ट रचनाओं ने हमें इस कवि के प्रति विशेप आकृष्ट किया

उनको राजिमती रहनेमि सझाय को सन् १६७६ ता० १३ जून में आगरा से प्रकाशित होनेवाले श्वेताम्बर जैन वर्ष ४ अंक २५ मे प्रकाशित किया गया उसके बाद खरतर गच्छ के बृहद् ज्ञान-भण्डार का अवलोकन करते हुए महिमाभक्ति भण्डार के बं० नं० ३७ में विनयचन्द्रजी की चौवीसी, बीसी, सज्झायादि की ३१ पत्रों की संग्रहप्रति प्राप्त हुई और जैन गुर्जर कविओ दूसरा भाग सन् १६३१ मे प्रकाशित हुआ उसमें आपके रचित उत्तम-कुमार चरित्ररास, ध्यानामृतरास, मयणरेहा रास, ११ अंग सज्झाय, शत्रुंजय तीर्थयात्रा स्तवन का उल्लेख प्रकाशित हुआ था। हमने आपको प्राप्त समस्त रचनाओं की सूची देते हुए कविवर विनयचन्द्र नामक लेख प्रकाशित किया जिसमे नेमिराजुल बारहमासा भी दिया था। कवि की रचनाओं की संग्रह प्रति से तभी हमने प्रेस कापी तैयार कर रख दी थी जिसे प्रकाशित करने का सुयोग अब प्राप्त हुआ है।

गुरु परम्परा—

खरतरगच्छ की सुविहित परम्परा में मुगल सम्राट अकबर प्रतिबोधक युगप्रधान श्री जिनचन्द्रसूरि प्रसिद्ध और प्रभावक आचार्य हुए हैं। उनके प्रथम शिष्य सकलचन्द्र गणि के शिष्य अष्टलक्षी कर्त्ता महोपाध्याय समयसुन्दरजी की विद्वद् परम्परा मे कविवर विनयचन्द्र हुए है। कविवर स्वयं उत्तमकुमार चरित्र-चौपई मे अपनी गुरु परम्परा का परिचय देते हुए लिखते हैं कि महोपाध्याय समयसुन्दरजी भारी प्रकाण्ड विद्वान थे जैसे—

ज्ञानपयोधि प्रबोधवा रे, अभिनव ससिहर प्राय , सु०
कुमुदचन्द्र उपमा वहै रे, समयसुन्दर कविराय , ८ सु०
तत्पर शास्त्र समर्थिवा रे, सार अनेक विचार , सु०
वलि कलिंदिका कमलनी रे, उल्लासन दिनकार , ६ सु०

इनके शिष्य विद्यानिधि वाचक मेघविजय हुए। जिनके शिष्य हर्षकुशल भी अच्छे विद्वान थे जिन्होंने विहरमान वीसी का रचना करने के अतिरिक्त महोपाध्याय समयसुन्दरजो को ग्रन्थरचना में भी सहाय्य किया था। इनके शिष्य उ० हर्षनिधान हुए जिनकी चरणपादुकाएं सं० १७६७ मिति आपाढ़ सुदि ८ के दिन शिष्य वा० हर्षसागर द्वारा प्रतिष्ठित बीकानेर रेल दादाजी में विराजमान है। हर्षनिधानजी के लिए कविवर ने लिखा है कि ये अध्यात्म-योगी थे, यतः—

'परम अध्यातम धारवा रे जो योगेन्द्र समान।'

इनके तीन शिष्य थे, प्रथम वा० हर्षसागर द्वारा सं० १७२६ का० कृ० ६ को लिखित पुण्यसार चतुष्पदी (सेठिया लाइब्रेरी, वीकानेर) प्राप्त है। इनकी चरणपादुकाएँ भी सं० १७८५ वै० सु० ८ सोम के दिन प्रतिष्ठित बीकानेर के रेल दादाजी मे है। इनके नयणसी व प्रतापसी नामक दो शिष्य थे। हर्षनिधानजी के द्वितीय शिष्य ज्ञानतिलक व तीसरे पुण्यतिलक थे ये तीनों साहित्यादि ग्रंथों के विद्वान थे। ज्ञानतिलक रचित ३-४ स्तोत्र व फुटकर संग्रह का गुटका विनयसागरजी के संग्रह मे है। कविवर विनयचन्द्र इन्हीं ज्ञानतिलकजी के शिष्य थे। सं० १७६६ मिती

वैशाख सुदी १४ को बीकानेर में साध्वी हर्षमाला के लिए प्रतिलिपि की हुई एकादशांग स्वाध्याय की प्रशस्ति इसी ग्रन्थ के पृ० ६८ में प्रकाशित है।

हर्षनिधानजी के तृतीय शिष्य पुण्यतिलक थे जिनके शिष्य महोपाध्याय पुण्यचन्द्र हुए। इनके शिष्य पुण्यविलासजी ने अपने शिष्य पुण्यशील के आग्रह से सं० १७८० में मानतुग मानवती रास (ढाल ५० गाथा १४४२) लूणकरणसर में निर्माण किया जिसकी दो प्रतियां लालभवन, जयपुर में है। पुण्यविलासजी के दूसरे शिष्य मानचन्द्र थे। नन्दीपत्रानुसार इनकी दीक्षा सं० १७७४ को पत्तन में हुई थी इसमें पं० माना पं० पुण्यशील लिखा है अतः पुण्यशील और माना एक ही व्यक्ति प्रतीत होते है। सं० १८०४ वाला उपर्युक्त गुटका इन्हीं मानचन्द्र द्वारा लिखा हुआ है जिसमें कविवर समयसुन्दरजी की कृतियाँ और विनयचन्द्रजी की चार कृतियाँ लिखी हुई है। प्रशस्ति इस प्रकार है :—'सम्वत् १८०४ वर्षे मिति माह वदि १ तिथौ जंगम युगप्रधान पूज्य भट्टारक श्रीमच्छ्री जिनचन्द्रसूरीश्वराणा शिष्य मुख्य पंडितोत्तम प्रवर सकलचन्द्रजी गणि शिष्य महोपाध्याय श्री ५। श्री समयसुन्दरजी गणि। शिष्य मेघविजयजी गणि। वाचकोत्तम वर हर्षकुशलजी गणि। पाठकोत्तम हर्षनिधानजी शिष्य दक्ष पुण्यतिलकजी गणि। महोपाध्याय श्री

१—देखो बीकानेर जैन लेख संग्रह लेखांक २०८०।

२—देखो बीकानेर जैन लेख संग्रह लेखांक २०५३।

५ श्री पुण्यचन्द्रजी गणि तत्शिष्य पंडितोत्तमप्रवर श्री पुण्य विलासजी गणि। तदन्तेवासी पंडित मानचन्द्र लिखितं॥ श्री मरोट मध्ये॥ सुश्रावक पुण्यप्रभावक मुंहता दुलीचन्दजी तत्पुत्र जैतसीजी तत्पुत्र सुखानन्द पठन हेतवे। आचंद्रार्कौ यावत् चिरंनन्दतु।

जन्म—

कविवर का जन्म कब और किस प्रान्त में हुआ यह जानने के लिए अभी तक कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं हुआ है पर गुजरात मे रह कर हिन्दी रचना व राजस्थानी शब्द-प्रयोग देखते हुए प्रतीत होता है कि इनका जन्म राजस्थान में ही हुआ होगा। आपने अपनी रचनाओं मे जिन राजस्थानी लोक गीतों की देसियां प्रयुक्त की हैं, यह भी हमारी धारणा को पुष्ट करने वाली हैं। आपके हृदय के उद्गार, भक्ति आदि देखते यह निश्चित है कि आपने जैन कुल में जन्म लिया था। आपकी प्रथम रचना उत्तमकुमार चरित्र चौपाई सं० १७५२ में पाटण में हुई है उस समय आपका ज्ञान और योग्यता देखते कम से कम २५ वर्ष की अवस्था होनी चाहिए तो अनुमान किया जा सकता है कि आपका जन्म लगभग १७२५ से १७३० के बीच में हुआ होगा।

दीक्षा—

दीक्षाकाल जानने के लिए सब से सुगम साधन श्रीपूज्यों के दफ्तर और नंदी अनुक्रम सूची है। उसके अभाव मे हमे

अनुमान के आधार पर ही चलना होगा। अतः आपने लगभग १५ वर्ष की आयु मे दीक्षा ली हो तो सं० १७४०-४५ के बीच में दीक्षाकाल होना चाहिए।

विद्याध्ययन—

दीक्षा लेने के अनन्तर आपने विद्याध्ययन प्रारम्भ किया। आपकी गुरु परम्परा मे साहित्य, जैनागम और भाषाशास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान होते आये हैं। त्याग वैराग्यपूर्ण श्रमण संस्कृति का मुख्य आधार आचारशास्त्र और अध्यात्म था। आपने अपने गीतार्थ गुरुओ की निश्रा मे रह कर पूर्ण मनोयोग पूर्वक विद्याध्ययन किया जो कि आपकी कृतियो से भली भाँति प्रमाणित है। इनकी भाषा कृतियों में संस्कृत शब्दो का प्राधान्य है इससे विदित होता है कि संस्कृत भाषा एवं काव्य ग्रन्थादि का आपने सुचारु रूप से अध्ययन किया था।

विहार और रचनाएँ-

आपका विहार कहाँ-कहाँ हुआ यह जानने के लिए हमारे पास आपकी कृतियों के सिवा कोई साधन नहीं है। आपकी संवतोल्लेख वाली प्रथम बड़ी रचना उत्तमकुमार चरित्र चौपई है जो सं० १७५२ मिती फागुन सुदि ५ गुरुवार के दिन पाटण में विरचित है। इससे ज्ञात होता है कि आप अपने गुरुजनों के साथ राजस्थान से तत्कालीन आचार्य श्री जिनचंद्रसूरिजी के आदेश से गुजरात पधार गये थे। इन श्री जिनचंद्रसूरि जी की

गहुँली इसी ग्रन्थ के पृ० ८४ मे प्रकाशित है जिसमे आपने आचार्य श्री जिनधर्मसूरि के पट्ट पर श्रीजिनचंद्रसूरि के पाट विराजने का उल्लेख किया है। यह पट्ट महोत्सव बीकानेर के लूणकरणसर मे हुआ था अतः इसके बाद आचार्य श्री ने आपके गुरु महाराज को गुजरात मे विचरने का आदेश दिया प्रतीत होता है। इस लघु रचना मे अपने को कवि ने मुनि विनयचद्र लिखा है इसके बाद आपने लघु कृतिया अवश्य ही बनाई होगी क्योंकि उत्तमकुमार चरित्र मे आपने अपने को कई जगह 'कवि' विशेषण से सम्बोधित किया है। पाटण में रहते आपने वाडी पार्श्व स्त० व नारगपुर पार्श्व स्तवनादि की रचना की। इसके बाद सं० १७५५ का चातुर्मास आपने राजनगर किया और विजयादशमी के दिन विहरमान बीसी रचकर पूर्ण की। दूसरा चातुर्मास भी आपने राजनगर मे ही विताया था स्थूलिभद्र बारहमासा गा० १३ की रचना राजनगर में हुई। सं० १७५५ भा० व० १० को राजनगर (अहमदाबाद) मे ११ अंग सज्झायों की रचना एवं विजयादशमी के दिन चौबीसी की रचना पूर्ण की। इस चातुर्मास के पश्चात् आपने आचार्य श्री जिनचन्द्रसूरिजी एवं अपने दादा गुरु श्री हर्षनिधान पाठक व गुरु ज्ञानतिलकादि गुरुजनों के साथ सपरिवार मिती पोषवदी १० के दिन शत्रुंजय महातीर्थ की यात्रा की जिसका उल्लेख आपने इसी ग्रन्थ के पृ० ५० में प्रकाशित शत्रुंजय यात्रा स्त० गा० २१ मे किया है एक और गा० १३ का स्तवन पृ० ५५ मे प्रकाशित है।

इसके अतिरिक्त संखेश्वर पार्श्वनाथ स्त० गा० ११ का पृ० ६४ में छपा है पर आपने यह यात्रा कब की इसका कोई उल्लेख नहीं। इसके पश्चात् आपने कब कहाँ चातुर्मास किये इसका कोई पता नहीं चलता अब तक जो रचनाएँ मिली हैं वे सं० १७५२ से १७५५ तक की हैं। इसके पश्चात् की कोई संवतोल्लेख वाली रचना नहीं मिलने से ठीक ठीक पता नहीं लगता कि आप कब तक विद्यमान रहे पर दीक्षानंदि पत्र में आपके शिष्य विनयमंदिर की दीक्षा सं० १७६६ ज्येष्ठ वदि ५ को बीकानेर में हुई थी लिखा है उस समय तक आप अवश्य ही विद्यमान थे। इन वर्षों में आपने ग्रंथ रचना अवश्य ही की होगी। पर किसी ज्ञान भंडार या उनकी परम्परा के किसी विद्वान के पास रही कहीं मिल जाय तो आपका रचनाओं व जीवनी पर विशेष प्रकाश पड़ सकता है। तीन वर्ष जैसे अल्पकाल की रचनाओ से विदित होता है कि आप उच्च कोटि के कवि थे। एवं और भी बहुतसी रचनाओं का निर्माण किया होगा। इस ग्रन्थ में प्रकाशित प्रधान रचनाएँ इस प्रकार है :—

१—उत्तमकुमार चरित्र चौपई ढाल ४२ गाथा ८४८ सं० १७५२ फा० सु० ५ गु० पाटण

२—विहरमान वीसी स्तवन स्त० २० कलश १ सं० १७५४ विजयादशमी राजनगर

३—११ अंग सज्झाय स० १२ सं० १७५५ भा० वदी १० राजनगर

४—चतुर्विंशतिका स्त० २४ कलश १ सं० १७५५ विजयादशमी, राजनगर

५—शत्रुंजय यात्रा स्त० गाथा २१ सं० १७५५ पौष बदी १० यात्रा

६—फुटकर स्तवन, सज्झाय, बारहमासा, गीत आदि २५ कृतियाँ

इनके अतिरिक्त जैन गुर्जर कविओ भाग २ पृष्ठ ५२३ में :—

१—ध्यानामृत रास । २—मयणरेहा चौपाई ।

एवं जैन गूर्जर कविओ भाग ३ पृ० १३७४ मे—

३—रोहा कथा चौपई का उल्लेख किया है। श्री देसाई ने प्रथम दो रचनाओंका न तो रचनाकाल व आदि अन्त दिया है और न प्राप्तिस्थान ही दिया है। विनयचन्द्र नाम के कई कवि हो गए हैं अतः वे रचना इन्हीं कविवर की हैं या और किसी विनयचन्द्र की, नहीं कहा जा सकता। फिर भी मयणरेहा चौपाई व रोहा कथा चौ० की प्रतियाँ हमारे (श्री अभय जैन ग्रन्थालय, बीकानेर) संग्रह में है उनमे से मयणरेहा चौपाई का रचना काल सं० १८७० एवं रचनास्थान जयपुर है उसके रचयिता विनयचन्द्र स्थानकवासी अनोपचन्द के शिष्य हैं। रोहा कथा चौपाई में विनयचन्द्र के गुरु का नाम रचनाकाल नहीं पाया जाता, पर यह कृति भी स्थानकवासी विनयचन्द्र की ही लगती है। अतः तीन में से दो तो हमारे कविवर विनयचन्द्र से सौ, सवासौ वर्ष पश्चात् होनेवाले स्थानकवासी विनयचन्द्र की रचनाएँ सिद्ध हो जाती है केवल ध्यानामृतरास ही अनिश्चित अवस्था में रहता है सम्भव है वह हमारे कवि विनयचन्द्र

थे। नंदि अनुक्रम पत्र के अनुसार इन विनयमंदिर का पूर्वनाम अमीचद था और सं० १७६६ मिती ज्येष्ठ वदि ५ को बीकानेर में दीक्षा हुई थी। इस प्रशस्ति में से विदित होता है कि कविवर के गुरु वाचनाचार्य एवं कवि स्वयं सं० १७७२ से पूर्व गणि पद विभूषित हो चुके थे। यहाँ उपर्युक्त प्रशस्ति की नकल दी जा रही है :—

"संवत् १७७२ वर्षे मिती ज्येष्ठ सुदी १ रविवारे श्री राजनगरे वा० ज्ञानतिलक गणि शिष्य विनयचन्द्रगणि शिष्य विनयमदिर शिष्य चिरं खुस्यालचंद लिखितं ॥ साध्वी कीर्तिमाला शिष्यणी हर्षमाला पठनार्थं ॥ श्रीरस्तुः ॥ शुभं भवतुः ॥"

भक्ति व काव्य प्रतिभा—

कविवर का हृदय जिनेश्वर भगवान के भक्ति रस से ओत प्रोत था। चौवीसी, वीसी एवं स्तवनादि में आपने बड़े ही मार्मिक उद्गार प्रगट किये हैं। आपने अपनी कृतियों में कहीं सरल भक्ति, कहीं उत्प्रेक्षाएँ और वक्रोक्तिपूर्ण उपालंभ देते हुए विभिन्न रसों की भाव धारा प्रवाहित की है। भाषा प्रौढ और सटंक शब्दयोजना, फबती हुई उपमाएँ पाठकों के मन को सहज ही आकृष्ट करने मे समर्थ है। यहाँ कुछ थोड़े से अवतरण पाठको के रसास्वादनार्थ उद्धत किये जाते हैं।

"नयणे नयण मिलायने रे, जिन मुख रहीयइ जोय
तउ ही तृप्ति नहीं पामियइ रे, मनसा त्रिवणी होय"

[ऋषभदेव स्त०]

जिम गोपी मन गोविन्द रे लाल, गौरी मन शंकर वसइ
वलि जेम कुमुदिनी चंद रे लाल [शातिनाथ स्त०]

नेह अकृत्रिम मंइ कियउ रे, कदे न विहड़इ तेह
दिन दिन अधिकउ उलटइ रे, जिम आषाढ़ी मेह
[कुंथुनाथ स्त०]

श्री मुनिसुव्रत स्वामी के स्तवन में प्रभु को उपालम्भ देते हुए कवि कहता है कि—

हुं रागी पिण तुं अछइ जी, नीरागी निरधार।
मावै नहीं इक म्यान मइ ंजी, तीखी दोइ तरवार॥
जाणपणउ मइं जाणियउ जी, जिनवर ताहरउ आज।
तक ऊपर आव्यउ हतोजी, तैं नवि राखी लाज॥
जे लोभी तुझ सरिखाजी, वंछित नापइ रे अन्त।
मुझ सरिखा जे लालचीजी, लीधा विण न रहंत॥

× × × ×

नेमजी हो मुगति रमणि मोह्या तुम्हे हो राजि,
पिण तिण मां नहिं स्वाद।
नेमजी हो तेह अनते भोगवी हो राजि, छोड़उ छोकरवाद।
[नेमिनाथ गीत पृ० ६०]

कविवर ने उपमाओं एवं लोकोक्तियों को अपनी कृतियों में खचित करके उन्हें हृदयग्राही वना दिया है। यहाँ थोड़े से अवतरण प्रस्तुत किये जाते है :—

"साकर मां काकर निकसइ ते साकर नौ नहिं दोष"
[विमलनाथ स्तवन]

वाल्हा लागौ हो नहिं उपदेश, छाट घडइ जिम चीगटइ
वाल्हा तेतउ, हो न्याय अजेस, कर्म अरि कहो किम कटइ

[धर्मनाथ स्त०]

हा रे लाल निज फल तरुवर नवि भखइ,
सरवर न पियइ जल जेम रे लाल
पर उपगारइ थाय ते, तुं पिण जिनजी हुइ तेम रे लाल

[शातिनाथ स्त०]

"कोइल आंवा गुण लहै रे, पिण स्युं जाणै काग
मूरख पशु जाणै नहीं रे, सेलडी कडव मिठास"

[कुंथुनाथ स्त०]

"जे खल नइं गुल सरिखा जाणइ, ते स्युं नवलो नेह पिछाणइ"

(मल्लिनाथ स्त०)

"देव अवर मीठा मुखे, हृदय कुटिल असमान
जाणि पयोमुख संग्रह्या, ते विषकुम्भ समान"

(नमिनाथ स्त०)

'तरू भावइ तउ छइ इकताई, पिण अंब नींव अधिकाई रे
पंखी जातइ एकज हूआ, पिण काग कोइल ते जूआ रे'

(सूरप्रभ स्तवन)

महिर विना साहिब किसउ हो, लहिर विना स्यउ वाय रे सनेही
सहिर विना स्यउ राजवी हो. इम कलि माहि कहाव रे सनेही

(संखेश्वर पार्श्व स्त० पृ० ६५)

'एक हाथइ रे ताली नवि पड़इ रे' (स्वाभाविक पार्श्व स्त० पृ०७४)

'जिम सौ तिम पचास' 'सौ बाते इक वात' (वाडी पार्श्व स्तवन पृ० ७१)

जिन प्रतिमा स्वरूप निरूपण स्वाध्याय (पृ० १००) मे वायस दुग्ध प्रक्षालन, मुद्‌गशेलिक घनवर्षण, ऊषरभूमि बीजवपन बधिर प्रमाण कथन, श्वान-पुच्छ, जिम काजीयइ दूध, नदी-किनोरवृक्ष आदि उपमाएँ दी गई हैं। स्वयं जिनेश्वर भगवान की अविद्यमानता मे मुमुक्षुओं के लिए जिन प्रतिमा एक पुष्टा-लंवन है। कविवर जिन प्रतिमा को जिन सदृश उपकारी मानते थे और उसे आमन्य करनेवालों का प्रखरता के साथ निराकरण करने के हेतु इस ३६ गाथा की स्वाध्याय का निर्माण हुआ है। ध्यान के लिए जिन प्रतिमा की उपयोगिता वताते हुए कविवर निम्नोक्त भाव व्यक्त करते हैं :—

'जिन प्रतिमा निश्चयपणइ, सरस सुधारस रेलि
चिंतामणि सुरतरु समी, अथवा मोहनवेलि ६
नेह विना सी प्रीतडी, कंठ बिना स्यउ गान
लूण बिना सी रसवती, प्रतिमा विण स्यउ ध्यान ७
तीर्थंकर पिण को नहीं, नहिं को अतिशयधार
जिन प्रतिमा नउ इण अरइ, एक परम आधार ८'

कविवर विनयचन्द्र जैन शास्त्रों के प्रौढ विद्वान थे। उन्होंने ग्यारह अंग सज्झायों मे प्रत्येक अंग—आगम का रहस्य बड़ी ही ओजस्वी वाणी मे श्रद्धा-भक्तिपूर्वक व्यक्त किया है। इन सज्झायों को गाने से जिनवाणीके प्रति आस्था प्रगाढ़ हो जाती

है और वाचक आपकी श्रुत श्रद्धा के प्रति पद-पद पर श्रद्धावनत हो जाता है। ग्यारह अंगों का परिचय प्राप्त करने के लिए तो ये सज्झायें बड़ी ही उपयोगी हैं। अन्तिम सझाय में कवि लिखता है कि—

'पसरी अंग इग्यार नी सहेली हे, मुझ मन मंडप वेलि कि।
सांचू नेह रसइ करी सहेली हे, अनुभव रस नी रेलि कि ॥२॥
हेजधरी जे सभिलइ सहेली हे, कुण बूढा कुण वाल कि।
तउ ते फल लहै फूटरा सहेली हे, स्वादइं अतिहि रसाल कि ॥३॥

कविवर ने प्रकृति-सौन्दर्य को भी जिस सरसता से वर्णन किया है वह अपने ढंग का अनूठा है—'श्रीरहनेमि राजीमति स्वाध्याय तथा श्री स्थूलिभद्र वारहमासा' मे छः ऋतुओं का वर्णन प्रकृति की सौन्दर्य सुषमा तथा जन-मन मे उठता हुआ उल्लास नव रसों के प्रवाह का कवि ने जिस सजीवता से वर्णन किया है उसका रसास्वादन कराने के लिए कुछ पद्य यहाँ उद्धृत करते है :—

रहेनमि राजिमती स्वाध्याय

वर्षा—

सजि वुंदसारी, हर्षकारी भूमि नारी हेत।
झरलाय निर्झर झरत झरझर सजल जलद असेत ॥
घन घटा गर्जित छटा तर्जित भये जर्जित गेह।
टच टचकि टचकत झबकि झबकत विचिविचि वीजकि रेह ॥ २॥
'द्रग श्याम वादर देखि दादुर रटत रस भरि रइन।
वन-मोर वोलइ पिच्छ डोलइ द्विरद खोलइ पुनि नइन ॥ ३ ॥

मदन के माते रग राते रसिक लोक अपार।
बइठि कइ गोख मनइं जोखइं गावत मेघ-मलहार ॥ ५ ॥
पंच रंग चोपें अधिक ओपइं इन्द्र-धनुष सधीर।
बक श्रेणि सोहइ चित्त मोहइ सर सरित के तीर ॥
तहाँ करन क्रीड़ा मुखइ बीड़ा चावती त्रिय जात।
केसरी सारी मूल भारी पहिरि कै हर्ष न मात ॥ ६ ॥

श्री स्थूलिभद्र बारहमास

शृंगार आषाढ़

आषाढइ आशा फली, कोशा करइ सिणगारो जी।
आवउ थूलिभद्र वालहा, प्रियुड़ा करूं मनोहारो जी ॥
मनोहार सार शृंगार-रसमा, अनुभवी थया तरवरा।
वेलड़ी वनिता ल्यइ आलिंगन, भूमि भामिनी जलधरा ॥

हास्य श्रावण

श्रावण हास्य रसइं करी, विलसउ प्रतिम प्रेमइ जी।
योगी। भोगीनइ घरे, आवण लागा केमइ जी ॥
तउ केम आवै मन सुहावै, वसी प्रमदा प्रीतडी।
एम हासी चित विमासी, जोअउ जगति किसी जडी ॥

करूणा वर्षा

झरहरइ पावस मेघ वरसइ, नयण तिम मुख आंसुआं।
तिम मलिन रूपी वाह्य दीसउ, तिम मलिन अंतर हुआ ॥२॥
भादउ कादउ मचि रह्यउ, कलिण कलया वहु लोको जी।
देखी करूणा ऊपजै, चन्द्रकान्ता जिम कोको जी ॥

कोक परि विहू बोक करतो, विरह कलणइ हुं कली।
काढियइ तिहाँ थी वांह झाली, करूणा रसनइ अटकली॥

रौद्र

अकुलाय धरणि तरुणि तरणी, किरण थी, शोषत धरै।
उपपति परइ घन कन्त अलगु, करी घन वेदन करै॥
तिम तुम्हें पणि विरह तापइ, तापवउ छउ अतिघणु।
चांद्रणी शीतल झाल पावक, परइं कहि केतउ भणु॥

वीररस-कातिक

काती कौतुक साभरइ, वीर करइ सग्रामो जी।
विकट कटक चाला घणुं तिम कामी निज धामोजी॥
निज धाम कामी कामिनी वे, लडइ वेधक वयण सु।
रणतूर नेउर खड्ग वेणी, धनुप-रूपी नयण सुं॥

भयानक मगसिर

भयानक रसइ भेदियउं, मगिसिर मास सनूरो जी।
मांग सिरहि गोरी धरइ, चर अरुणि मां सिन्दूरो जी॥
सिन्दूर पूरइ हर्ष जोरइ, मदन झाल अनल जिसी।
तिहा पडइ कामी नर पतगा, धरी रंगा धसमसी॥

अद्भुत हेमन्त व माघ

माघ निदाघ परइ दहै, ए अद्भुत रस देखुं जी।
शीतल पणि जड़ता धणुं, प्रीतम परतिख पेखु जी॥

फाल्गुन

सहज भाव सुगन्ध तैलइं, पिचरकी सम जल रसइं।
गुण राग रंग गुलाल उड़इ, करुण ससबोही वसइ॥

परभाग रंग मृदग गूजइं, सत्व ताल विशाल ए।
समकित तंत्री तंत झणकइ, सुमति सुमनस माल ए॥

चैत (वसन्त)

चैत्रइ विचित्र थइ रही, अंत्रतणी वनरायोजी।
थुड शाखा अंकुरित थइ, सोह वसन्तइ पायो जी॥
पाई वसंतइ सोह जिणपरि, प्रियागमनइं पदमिनी।
सिणगार विन पिण मुदित होवइ, प्रेम पुलकित अंगिनी॥

आगे चल कर कवि ने वैशाख और ज्येष्ठ महीना का भी सुन्दर वर्णन किया है। इसी प्रकार इस ग्रन्थ के पृ० ६१ में प्रकाशित नेमि राजिमती बारहमास में भी प्रकृति और बारहमास का सुन्दर वर्णन किया है पाठकों को स्वयं पढ़कर रचनाओं का रसास्वादन करना चाहिए।

स्नेह निवारणे स्थूलिभद्र सझाय में कहा है कि :—

'नेह थी नरक निवास, नेह प्रबल छइ पास
नेह देह विनाश, नेह प्रबल दुख रास
वाल्हानइ वउलावता रे, पीड़इ प्रेम नी झाल
हीयडो फाटइ अति घणु रे, नाखइ विरह उछाल
वलतां भुँई भारणी हुवैं रे हाँ, अंग तपइ अंगार
आँखडियेँ आसू झरइ रे हा जिमपावस जलधार
मत किणही सु लागज्यो रे, पापी एह सनेह
धूखइ न धुंओं नीसरइ रे हा, वलइ सुरगी देह'

कविवर विनयचन्द्र की समस्त रचनाओं में विस्तृत रचना उत्तमकुमार चरित्र है जिसमे सदाचार को पोषण करने वाला उत्तमकुमार का उदात चरित्र है, जिसका सार यहाँ दिया जा रहा है।

उत्तमकुमार रास सार

प्रारम्भ में एक संस्कृत श्लोक द्वारा विनायक को नमस्कार किया गया है जो प्रति लेखक द्वारा लिखा हुआ है। रास के प्रारम्भ में १३ दोहों में ॐकार, सरस्वती और दादा श्री जिन-कुशलसूरिजी को नमस्कार कर सुपात्रदान के अधिकार में उत्तमकुमार चरित्र रचना प्रस्ताव रखते हुए कवि श्रोताओं से बातचीत और कुमति क्लेश त्याग करने का निर्देश कर चरित्र का प्रारम्भ करता है।

काशी देश स्थित वाराणसी नगरी का वर्णन करते हुए कवि लिखता है कि उस अलकापुरी के समकक्ष नगरी मे ऊँची अट्टालिकाएँ, चारों ओर दुर्ग, चौरासी चौहटे और दण्ड-कलश युक्त जिनालय हैं जिन पर ध्वजाएँ फहराती हैं। इस नगरी के पुरुष देव और स्त्रियाँ अप्सरा तुल्य है। जल से लवालव भरे हुए सरोवरों में हंस आदि पक्षी कल्लोल करते है, फल फूलों से लदे हुए वृक्ष वारहों मास हरे भरे रहते हैं, टहूका करती हुई कोयल एवं अन्य पक्षी गण निर्भीक निवास करते हैं। उस नगरी का राजा मकरध्वज शूरवीर और दयालु था। राजा का वास्तविक गुण क्षमा ही है, यह वतलाने के लिए कवि ने निम्नोक्त दोहा उद्धृत किया है :—

"उदै अटपकै भूप नहीं, पहिरव्या नाही रूप।
खूँद खमै सो राजवी, निरख सहै सो रूप॥"

राजा की राणी लक्ष्मीवती पतिव्रता और चौसठ कलाओं में प्रवीण धर्मिष्ठा सुन्दरी थी। सासारिक सुख उपभोग करते हुए रानी के गर्भ मे शुभ स्वप्न सूचित पुत्र आकर अवतीर्ण हुआ। गर्भकाल पूर्ण होने पर रानी ने सुन्दर पुत्र को जन्म देकर इस दृष्टान्त को चरितार्थ कर दिया कि दीपक से दीपक प्रकट होता है। राजा ने बड़े उत्साह से पुत्र जन्मोत्सव किया घर घर मे तोरण लगाये गए, दान दिया गया। दसोटन करने के वाद उत्तम लक्षण वाले पुत्र का नाम उत्तमकुमार रखा गया। उत्तमकुमार चन्द्रकला की भाति धाय माताओं द्वारा पालित पोषित होकर क्रमशः आठ वर्ष का हुआ। राजा ने उसे पाठशाला में पढने के लिए भेजा। थोड़े दिनों मे वह सारे छात्रों से आगे बढ़ कर समस्त कला कौशल मे निष्णात हो गया।

कुमार बड़ा सदाचारी था, वह सत्यवादी, नोतिवान और दयालु था। वह चोरी, परदारागमन आदि सभी दुर्व्यसनों से विरत, धीर, वीर, गम्भीर दीन दुखियों का उपकारी होने के साथ-साथ अपने इष्ट-मित्रो के साथ खेल कूद में मस्त रहता था।

एक दिन रात मे सोये हुए कुमार के मन मे विचार आया कि मैं अव तरुण हो गया। इस अवस्था मे हाथ पर हाथ घर घर मे वैठे रहना कायर का काम है। कहा भी है कि—

गुण भमतां गुणवंत नें, वैठा अवगुण जोय
वनिता नै फिरिवौ वुरौ, जो सुकुलीणी होय।

अतः मुझे पिता द्वारा उपार्जित लक्ष्मी का उपभोग न कर भ्रमण के हेतु निकल पड़ना चाहिये। वह देशाटन की उमंग में स्वजनों की चिन्ता छोडकर हाथ में तलवार लेकर अपने भाग्य परीक्षा के हेतु प्रवास सें निकल पडा। वह कितने ही जंगल, पहाड़ और नदियों को पार करता हुआ कौतुकवश धूप और लू की गर्मी में सुख-दुख सहन करता हुआ आगे बढ़ता ही गया। उसे कहीं तो भयानक अटवी मिलती तो कहीं हरे भरे वृक्ष और लहराते हुए सुन्दर सरोवर जहाँ कमलों की सौरभ मस्तिष्क को ताजा बना देती। अनुक्रम से अनेक ग्राम नगरो को उल्लंघन करता हुआ उत्तमकुमार मेवाड़ देश की राजधानी चित्तौड़ जा पहुँचा। यहाँ का राजा महासेन प्रबल प्रतापी और समृद्धिशाली होने के साथ साथ धर्मात्मा भी था। सब प्रकार से सुखी होने पर भी राजा सन्तान सुख से वंछित था। दैव की गति विचित्र है, कवि कहता है कि—

"सुखिया देखि सकै नहीं, दोषी दैव अकज्ज
संपति द्यै तो सुत नहीं, इण परि करै निलज्ज
इक अवनीपति सुतबिना, बलि वैश्यां में वास
नदी किनारै रूंखडा, जद तद होइ विणास"

राजा ने सन्तानोत्पत्ति के लिए पर्याप्त उपाय किये पर वह असफल रहा। एक दिन वह वन में घूमने के लिए सपरिवार मन्त्री आदि को साथ लेकर निकला। राजा नीले घोड़े पर आरूढ़ था, उसने गुण लक्षण सम्पन्न घोड़े की बार-बार गति-

भग होते देख कर मंत्री से पूछा—इस घोड़े की किशोर वय में यह दशा क्यों ? राजा के बार बार पूछने पर भी मंत्री आदि कोइ भी जब उसकी जिज्ञासा का समुचित उत्तर न दे सका तो राजा को कष्ट होते देख उत्तमकुमार ने आकर कहा—प्रभो ! मैं परदेशी हूं, पर अपनी मति के अनुसार बतलाता हूं कि इसने भैंस का दूध बहुत पिया है, वह वायुकारक होता है इसी से इसकी गति मे चंचलता नहीं है। राजा ने कहा—वत्स! तुम बड़े ज्ञानी हो, तुमने कैसे जाना ? वस्तुतः यह अश्व बाल्यकाल मे मातृविहीन हो गया तब इसका ऊपरी दूध से ही पालन पोषण हुआ था। उत्तमकुमार के अश्वपरीक्षा-ज्ञान से प्रभावित होकर राजा ने कहा—बेटा। इतने दिन मै निःसन्तान था अब तुम भाग्यवश आ मिले तो यह सब राज पाट सम्भालो, लक्षणों से तुम राजकुमार ही लगते हो। अतः निःसंकोच राज्य भार ग्रहण करो। मैं ज्ञानी गुरु के पास दीक्षित होकर आत्म-साधन करूँगा। उत्तमकुमार ने कहा—अभी तो मैं प्रवास मे हूँ, लौटते समय आपके चरणो मे उपस्थित होऊँगा।

उत्तमकुमार चित्तौड़ से अकेला चल पडा और कुछ दिनो में भरुच्छ (भरौंच) जा पहुँचा। दर्शनीय स्थानों का अवलोकन करते हुए वह मुनिसुव्रत भगवान के मन्दिर मे पहुचा और पूजा स्तुति द्वारा अपना जन्म सफल किया। फिर सरोवर के तट पर जाकर बैठा तो पनिहारिन लोगो से सुना कि कुबेरदत्त व्यवहारी पाचसौ प्रवहण भर के आज ही समुद्र यात्रार्थ रवाने

हो रहा है। कौतुकी उत्तमकुमार भी सांयात्रिक की अनुमति लेकर प्रवहण पर आरूढ़ हो गया। शुभ मुहूर्त में प्रवहण चल पड़े, कुछ दिनों में पीने का पानी समाप्त हो जाने से जल-संग्रह करने के लिए शून्य द्वीप में जहाज रोके गए। सव लोग जब पानी की खोज में उतरे तो भ्रमरकेतु नामक राक्षस अपने साठ हजार साथियों के साथ आकर लोगों को पकड़ कर तंग करने लगा। साहसी उत्तमकुमार तुरन्त द्वीप मे उतर आया और ललकार कर अकेला ही राक्षस सेना के साथ युद्ध करने लगा। उसने जिस वीरता के साथ युद्ध किया, भ्रमरकेतु कायरतापूर्वक भग गया और उसकी सेना तितिर-बितिर हो गई। राक्षस को जीतकर उसने समुद्र तट पर जाकर देखा तो सारे जहाज रवाना हो चुके थे। कुमार ने सोचा—'लोग कितने स्वार्थी और कृतघ्न होते हैं? दूसरे ही क्षण मन में विचार आया कि विचारे भया-कुल होकर भग गए, इसमे उनका कोई दोष नहीं, मेरे पूर्व जन्म के पापों का उदय है। इसके वाद उसने एक वृक्ष पर ध्वजा वाध दी जिससे किसी यात्री-जहाज को दूर से उसकी उपस्थिति मालूम हो जाय। वह भगवान के भजन करता हुआ फलाहार से अपना निर्वाह करने लगा।

एक दिन द्वीप की अधिष्ठातृ देवी ने कुमार के सौन्दर्य पर मुग्ध होकर उससे वहुत ही अनुनय पूर्वक प्रेम याचना की। कुमार ने कहा—माता तुम देवी हो! मैं परनारी सहोदर हूँ! मेरे से तुम्हारा किसी भी प्रकार कार्य सिद्ध नहीं होगा। अतः

नरक परिणामी अनुचित अध्यवसायों को त्याग दो। देवी ने आज्ञा न मानने पर उसे तलवार द्वारा मार डालने की धमकी दी। परन्तु कुमार को अपने निश्चय पर अटल देखकर संतुष्ट चित्त से देवी ने कुमार के शील गुण की स्तवना करते हुए बारह कोटि रत्न वृष्टि की। इसके बाद समुद्र में जाते हुए जहाज देखकर कुमार ने जहाज रोकने के लिए पुकारा। लहकती हुई ध्वजा के सकेत से समुद्रदत्त जहाजों को किनारे लगाकर कुमार से मिला और सारा वृतान्त ज्ञातकर उसे अपने जहाज में बैठा लिया। कुछ दिन मे जल समाप्त हो जाने से व्याकुल होकर सभी यात्रियों ने शास्त्रज्ञ निर्यामक से जल प्राप्ति का उपाय पूछा। उसने कहा—थोड़े समय मे वेल उतरने पर स्फटिक रत्नमय पर्वत प्रगट होगा जिस पर सुस्वादु जल का कुंआ है। पर वहाँ भ्रमर-केतु नामक अति क्रूर और मासभोजी राक्षस रहता है। समुद्र-देवता के समक्ष उसने प्रतिज्ञा कर रखी है कि प्रवहण पर आरूढ यात्री को वह नहीं मारेगा। इस प्रकार बातें चल रही थी कि इतने में पर्वत प्रगट हो गया। सामने कुँआ दीखने पर भी भय के वशीभूत होकर कोई नीचे नहीं उतरा। कुमार ने सबको साहस बन्धाकर जल लाने के लिए प्रेरित किया और सब की सुरक्षा का उत्तरदायित्व अपने पर ले लिया। लोगों ने रस्सी बाँध कर जल-पात्रों को कुँए में डाला पर कुँआ जल से भरा हुआ होने पर भी किसी को एक बून्द पानी नहीं मिला। जब राक्षस के भय से कोई कुँए में उतरकर जलोद्घाटन के लिए प्रस्तुत नहीं हुआ

तो लोकोपकार के हेतु कुमार स्वयं रज्जु के सहारे कुंए में प्रविष्ट हो गया। उसने देखा कि सोने की जाली से समूचा जल आच्छादित है तो तारों को इधर-उधर करके जल निकालना सुगम कर दिया। उसने लोगों को जल भरने के लिए कहा तो सब लोग कुमार के सद्गुणों की प्रशंसा करते हुए जल भरने लगे। कुमार अपने परोपकारी कृत्य के लिए आत्म-सन्तोष अनुभव करने लगा।

कुमार ने कुंए मे कंचनमय सोपान-पक्ति देखी, वह कौतुक-वश उसी मार्ग से आगे बढ़ा और एक भव्य प्रासाद के पास जा पहुँचा जिसके आगन में रत्न जड़े हुए थे उसकी प्रथम भूमि स्वर्ण-मण्डित थी दूसरी भूमि में मणिमाणिक और तीसरी मे मोती चमक रहे थे इसी प्रकार समृद्धिपूर्ण वह सतमंजिला मकान था। जब कुमार तीसरी भूमि मे पहुंचा तो उसने एक वृद्धा को बैठे देखा। वृद्धा ने कुमार को देखते ही कहा—अरे मूर्ख! तुम यहाँ भ्रमरकेतु राक्षस के घर अकाल मौत मरने के लिए क्यों आये हो? कुमार ने राक्षस को अपने से पराजित बताते हुए वृद्धा से परिचय व प्रासाद का रहस्य पूछा, तो उसने कहा—यहाँ से राक्षसद्वीप निकट ही है और वहाँ लंकापति भ्रमरकेतु राज्य करता है। उसे अपनी पुत्री 'मदालसा' अत्यन्त प्रिय है जो अद्वितीय सुन्दरी और गुणवती है। एक दिन भ्रमरकेतु ने अपनी पुत्री के विवाह के सम्बन्ध में नैमित्तिक से पूछा तो उसने कहा—इसका पति वह राजकुमार होगा जो तीन खण्ड का अधिपति होगा। नैमित्तिक

की वात से भ्रमरकेतु यह ज्ञातकर चिन्तित हुआ कि देवकुमर के योग्य मेरी पुत्री को मानव क्यों व्याहेगा ? उसने तत्काल इस सुरक्षित कूपद्वार वाले प्रासाद मे कुमारी मदालसा को मेरे संरक्षण मे रख दिया ताकि उससे कोई भी मनुष्य व्याह न कर सके।

भ्रमरकेतु ने अभी फिर दूसरे ज्योतिपी से मदालसा के व्याह के सम्बन्ध मे प्रश्न किया तो उसने भी उपर्युक्त बात कही। जव प्रतीति के लिए राक्षसेन्द्र ने उसे पूछा तो वह कहने लगा— सायात्रिक जन को मारने के लिए जाने पर द्वीप मे उस अकेले ने तुम्हें जीता है। यह सुनकर भ्रमरकेतु सदलवल उसे मारने की प्रतिज्ञा कर यहाँ से गया है पर आज एक महीना हो गया, कोई खवर नहीं मिली ? वृद्धा से उपर्युक्त वृतान्त सुनकर कुमार सोचने लगा—वह लाख प्रतिज्ञा करे, मेरा कुछ भी नहीं विगाड़ सकता, मै उसे पराजित करके आया हूं, मेरे सामने उसकी क्या विसात है। इतने ही मे मदालसा वहाँ आ पहुँची। वे दोनो परस्पर एक दूसरे के सौन्दर्य को देखते ही मुग्ध हो गए। मदालसा ने ऊपर जाकर वृद्धा को अपने पास तुरन्त वुलाया और पूछा कि तुम्हारे पास शुभलक्षण वाला पुरुप कौन खडा था ? वृद्धा ने जव दोनों का परस्पर प्रेम जाना तो उनका गन्धर्व विवाह करा दिया और मणिरत्नादि विविध वस्तुएँ देते हुए वृद्धा ने उन्हें आशीर्वाद दिया। मदालसा के साथ उत्तमकुमार ने घूम-फिरकर वाग-वगीचे, जलाशय आदि देखे व सुखपूर्वक रहने

लगा। मदालसा भी जैन धर्मपरायण और सुशील थी। कवि ने मदालसा के अप्रतिम सौन्दर्य का वर्णन १२वीं ढाल में किया है (देखो पृ० १३५) धर्मिष्टा नारी के वर्णन में कवि ने निम्न कवित्त कहा है :—

नारी मिरगानयन्न, रंगरेखा, रस राती,
वदे सुकोमल वयण महा भर यौवनमाती।
सारद वचन स्वरूप, सकल सिणगारे सोहै,
अपछर जेम अनूप मुलकि मानव मन मोहै।
कलोल केलि वहु विध करै, भूरिगुणे पूरण भरी,
चन्द्र कहै जिणधरम विण कामिणी ते किण कामरी।

कवि विनयचन्द्र ने यहा प्रथम प्रकाश को १४ ढालों में पूर्ण करते लिखा है कि अपने ज्ञानवृद्धि के हेतु मैंने यह प्रथम अभ्यास किया है।

सिद्ध पद का स्मरण और आत्मतत्व के विचारपूर्वक कवि द्वितीय प्रकाश प्रारम्भ करता है। उत्तमकुमार ने वैरी के स्थान में अधिक रहना अनुचित जान कर मदालसा से विदेश गमनार्थ सीख मांगी। उसने कहा—प्रियतम! मैं तो छाया की भांति तुम्हारे साथ रहूंगी और यहाँ मेरे रहने का कोई प्रयोजन भी तो नहीं है। कुमारी ने अपने पांच रत्न और वृद्धा को साथ लिये और एकमत से तीनों कूप मे आ गए। समुद्रदत्त के आदमी उस समय जल निकाल रहे थे तो रस्सी के सहारे तीनों व्यक्ति वाहर निकल आये। लोगों ने कुमार के मुख से सारा वृतान्त ज्ञात कर

बड़ी प्रसन्नता व्यक्त की और सब लोग प्रवहणारूढ़ होकर रवाना हो गए।

कुछ दिन बाद फिर जहाजों का पानी समाप्त हो गया। जल के बिना लोगों को दुखी देखकर मदालसा ने लोगो का उपकार करने के लिए पतिसे प्रार्थना की। उत्तमकुमार ने कहा—जल बिना सबके ओष्ट सूख रहे हैं, क्या उपाय किया जाय? यदि तुम कुछ कर सको तो सबका दुःख दूर हो। मदालसा ने अपने आभूषणों का करण्डिया खोलकर उसमे से पाच रत्न निकलवाये और उनके गुण बतलाते हुए कहा—प्रियतम! ये पाच रत्न देवाधिष्ठित हैं, इनसे स्वर्णथाल, प्याला, चरी आदि भरे हुए भोजन, मणि रत्नादि के आभूषण, शयनासन, मूँग गेहूँ आदि धान्य तथा अग्नि रत्न से मिष्टान्न सुस्वादु व्यंजन प्राप्त होते हैं। गगन-रत्न से वस्त्र, वात-रत्न से अनुकूल वायु एवं नीर-रत्न को आकाश मे रखकर पूजा करने से वाछित जल वृष्टि होती है। कुमार अपनी धर्मात्मा पत्नी के गुणों से प्रसन्न हो नीर-रत्न को स्तम्भपर बांध कर बड़े समारोहसे पूजा की जिससे मेघवृष्टि हुई और लोगों ने अपने समस्त जलपात्र भर लिए। फिर मार्ग मे धनधान्य की आवश्यकता पड़ने पर कुमार ने दूसरे रत्नों के प्रभाव से विविध उपकार किये। सब लोग अपने उपकारी उत्तमकुमार का बड़ा आदर करने लगे। समुद्रदत्त ने जब से मदालसा को देखा, वह उस पर मुग्ध होकर उसे प्राप्त करने के लिए नाना प्रकार के घात सोचने लगा।

समुद्रदत्त ने उत्तमकुमार के प्रति बड़ी आत्मीयता प्रकट की और उसके साथ इतनी घनिष्ठता पैदा कर ली कि दोनों का अधिकांश समय एक साथ ही व्यतीत होता था। मदालसा ने चेतावनी देते हुए कहा—प्रियतम ! यह सेठ ऊपर से मधुर-भाषी पर अन्तर में बड़ा कलुषित और कपटी है। आप इसका तनिक भी विश्वास न करें, कहीं यह धोखा दे देगा। यतः—

मोर मधुर स्वर करि नै बोले, रंग-सुरंगो होइ।
पूछ सहित विषधर नं खायै, इण दृष्टान्ते जोइ ॥

यह मुझे हरण करने के लिए तुम्हारे से प्रेम दिखाता है है क्योंकि 'दाढ गले सहुनी गुल दीठां, तेहवो नारि शरीर' अतः आप सावधान रहें। काले मस्तक का मानव बड़ा कपटी होता है कवि ने मदालसा के मुख से एक राजकुमार का दृष्टान्त कहलाया है जो अश्वारूढ होकर वन में गया। वनदेव ने वानर का रूप करके राजकुमार को वृक्ष पर आश्रय दिया और रात्रि-मे सिंह के उपस्थित होने पर जब उससे राजकुमार को मांगा तो उसने नहीं दिया पर जब वानर राजकुमार के गोद में सो गया तो सिंह की मांग पर अपने अश्व की रक्षा के बदले वानर को वृक्ष से नीचे फेंक दिया। कवि ने इतनी कथा लिखकर आगे का चार श्लोकों आदि का कथा प्रसंग व्याख्याता को मौखिक विवेचन करने की सूचना दी है। मदालसा ने कहा प्रियतम ! सावधान रहें ताकि भविष्य में पश्चाताप न हो। सौजन्यमूर्ति उत्तमकुमार ने कहा—सेठ धर्मात्मा है ! चन्द्र से अग्नि कैसे

निकल सकती है ? कह कर पत्नी के वचनों पर ध्यान नहीं दिया।

एक दिन समुद्र मे जल कान्तिमय पर्वत आदि कौतुक दिखाने के वहाने अवसर पाकर समुद्रदत्त ने कुमार को समुद्र मे गिरा दिया। उसे समुद्र मे गिरते ही एक वड़े मच्छ ने निगल लिया और गहरे जल मे चला गया। फिर समुद्र-तरंगों के साथ कुमार के पुण्य से वह मच्छ समुद्र तट जा पहुँचा जिसे धीवर ने जाल में पकड़ लिया। जव मच्छ का उदर चीरा गया तो उत्तम-कुमार विना किसी कष्ट से उसमे से निकल गया। धीवर लोगों ने कुमार को अपना स्वामी स्थापन कर दिया और वह उनकी वस्ती मे फलाहार द्वारा अपना जीवन निर्वाह करने लगा।

इधर उत्तमकुमार को समुद्र में गिराकर सेठ कपट-विलाप करने लगा। जब मदालसा ने कोलाहल मे कुमार के समुद्रपतन का सुना तो वह समुद्रदत्त के इस अकृत्य को ज्ञात कर नाना विलाप करते हुए अपना धैर्य्य खो वैठी। वृद्धा ने उसे आत्मघात महा-पाप वतलाते हुए हंस हंसी का दृष्टान्त देकर शान्त किया। निर्लज्ज समुद्रदत्त मदालसा को सान्त्वना देने के वहाने आया और उसकी प्रशंसा करते हुए भावी प्रवल वता कर अन्त में उसे अपनी गृहिणी वन जाने की प्रार्थना की। मदालसा ने शील रक्षा के हेतु छल का आश्रय लेकर उसे कहा कि कुछ दिन ठहरिये, मेरे पति को दस दिन हो जाने दीजिये फिर किसी नगर में जाकर राजा के समक्ष आपका कथन स्वीकार कर

लूंगी। सेठ भी मदालसा के इन वचनों से संतुष्ट हो गया। वृद्धा ने मदालसा के चातुर्य की प्रशंसा की। सेठ के जहाज जब उल्टे मार्ग चलने लगे तो मदालसा ने पवन-रत्न की पूजा की जिससे अनुकूल वायु द्वारा जहाज मोटपल्ली वेलाकुल के तट पर आ लगे। यहाँ का राजा नरवर्म बड़ा धर्मात्मा और न्यायप्रिय था। मदालसा को लेकर सेठ राजसभा मे पहुँचा और राजा को भेंट पुरष्कार से प्रसन्न करके निवेदन करने लगा—राजन्! मुझे यह महिला चन्द्रद्वीप मे मिली है, इसका पति समुद्र में गिर कर मर गया यह पवित्र है और आपकी आज्ञा से मेरी गृहिणी बनेगी। मदालसा ने कहा—मूर्ख! क्यों मिथ्या अंट संट बकता है, अगर राजा न्याय करे तो तुम्हारे दाँत तोड़ दे। उसने फिर राजा को सम्बोधन कर कहा—महाराज! इस पापी ने मेरे पति को समुद्र मे गिरा दिया है, मैंने अपनी शील रक्षा के हेतु इसे भुला कर आपके सामने उपस्थित किया है अब आप जैसे महा-पुरुष अन्याय नहीं करेंगे क्योंकि वैसा होने से मेरु पर्वत कम्पाय-मान हो जाय एवं पृथ्वी पाताल को चली जाय। अतः दुष्ट को यथोचित शिक्षा दें। राजा ने क्रुद्ध होकर समुद्रदत्त के पाँचसौ जहाज जब्त कर लिये और मदालसा से कहा—बेटी! तुम मेरी पुत्री त्रिलोचना के पास उसकी बहिन की तरह आराम से रहो। चिन्ता छोड़कर दान पुण्य करती रहो। यदि किसी तट पर तुम्हारा पति पहुँचेगा तो उसका अनुसंधान करवाया जायगा।

मदालसा को राजा ने धर्मपुत्री करके माना। वह पंच रत्नों

के प्रभाव से दान पुण्य करती हुई सती स्त्रियोचित नियमों का पालन करती हुई काल निर्गमन करने लगी। उसने स्नान, शृंगारादि का त्याग कर दिया और प्रतिदिन नीरस आहार का एकाशना करके भूमि शयन स्वीकार कर लिया। वह पुरुष मात्र की ओर नजर उठाकर भी नहीं देखती एवं निरन्तर नवकार मन्त्र का स्मरण किया करती थी।

एक दिन धीवर लोगों के साथ उत्तमकुमार भी मोटपल्ली आया और नगरी का अवलोकन करता हुआ जहाँ राजा नरवर्मा अपनी पुत्री के लिए प्रासाद बनवा रहा था, वहाँ आकर देखने लगा। कुमार वास्तुशास्त्र मे निष्णात था, उसने स्थान-स्थान पर सूत्रधारों से वास्तु-दोष सुधारने के लिए निराभिमानता से उचित परामर्श दिये जिससे प्रसन्न होकर सूत्रधारों ने कुमार को अपने पास रख लिया। कुमार के सान्निध्य से थोड़े दिनों मे वह सुन्दर प्रासाद बन कर तैयार हो गया।

एक बार राजा नरवर्मा प्रासाद निरीक्षणार्थ आये, वे उत्तमकुमार को उच्चासन पर बैठे देखकर सोचने लगे कि यह रूप और गुण से राजकुमार मालूम होता है। उन्होंने कुमार से परिचय पूछा तो उसने कहा—राजन्। मैं परदेशी हूं और आपके नगर मे निवास करता हूं। राजा महल देखकर चला गया। वसंत ऋतु थी वन-वाटिका की शोभा अवर्णनीय थी, कवि ने ढाल १३वीं मे वसन्त ऋतु का अच्छा वर्णन किया है। राजकुमारी भी क्रीड़ा के हेतु बगीचे मे आई, उसे साँप डस गया। सर्वत्र हाहाकार छा

गया। कुमारी के विष व्याप्त शरीर को राजमहल में लाकर विषापहार के हेतु गारुड़िक लोगों को बुलाया गया। उनके लाख उपाय करने पर भी जब कुमारी निर्विष नहीं हुई तो राजा ने राजकुमारी का विष उतारने वाले को अर्द्धराज्य व कुमारी से पाणिग्रहण कर देने की उद्घोषणा करवा दी। उत्तमकुमार ने पटह स्पर्श किया और उसने मन्त्र विद्या के बल से राजकुमारी त्रिलोचना को सचेत कर दिया। राजा ने अपने वचनानुसार शुभ मुहुर्त्त मे उत्तमकुमार के साथ त्रिलोचना का पाणिग्रहण करा दिया। हस्तमिलाप छुडाने के समय राजा ने उसे अर्द्ध राज्य दे दिया। उत्तमकुमार अपनी प्रिया के साथ नवनिर्मित प्रासाद में रहने लगा। यहाँ दूसरा अधिकार समाप्त हो जाता है।

तीसरे अधिकार के प्रारम्भ में कवि भगवान महावीर को नमस्कार कर श्रोताओं को आगे का सम्बन्ध सुनने का निर्देश करता है। मदालसा ने दासी से कहा—प्रियतम का अबतक कोई पता नहीं लगा अतः वे समुद्र में डूब गए मालूम होते हैं। मैं अब किस आशा से जीवित रहूं? मैंने इतने दिन आंबिल तपश्चर्या की, जिनालय एवं स्वर्ण, रत्नमय प्रतिमाएं बनवाई, त्रिकाल पूजा की। साधु व स्वधर्मियों को दान पुण्य आदि धर्माराधन करते हुए प्रतीक्षा की पर अब तो पाँचों रत्न त्रिलोचना बहिन को सम्भला कर संयम-मार्ग स्वीकार कर लेना ही मेरे लिये श्रेयस्कर है। वृद्धा ने कहा—जिस परदेशी ने त्रिलोचना से व्याह किया है, सारे नगर मे उसकी प्रशंसा सुनाई देती है, मेरी आत्मा

साक्षी देती है कि वह अवश्य तुम्हारा पति ही होगा। यदि आज्ञा दो तो जाकर प्रतीति कर आऊं? वह मदालसा की आज्ञा लेकर त्रिलोचना के घर गई और त्रिलोचना के भाग्य की प्रशंसा करते हुए उसके प्रियतम को देखने की इच्छा प्रकट की। त्रिलोचना ने कहा मेरे प्राणाधार महल में सोये हुए हैं, जाकर देख आओ।. वृद्धा ने उत्तमकुमार को पलंग पर सोये हुए देखा और मदालसा से आकर कहा—मुझे तो तुम्हारे पति जैसा ही लगता है। यह सुनकर मदालसा के हृदय मे प्रेम जगा और उससे मिलने को उत्सुक हुई। फिर दूसरे ही क्षण बिना प्रतीति किये परपुरुष के प्रति आकृष्ट होनेवाले पापी मन को धिक्कारा। इधर उत्तमकुमार ने वृद्धा को देख कर जाते हुए देखा तो त्रिलोचना से पूछा कि अभी महल मे कौन आई थी, मुझे पता नहीं लगा। त्रिलोचना ने कहा—मेरे से भी सौन्दर्य व गुणों मे उत्कृष्ट एक परदेशिन यहां आई है जिसे मैंने बहिन करके माना है वह एकान्त मे रहकर धर्म ध्यान करती है परोपकारिणी तो वह अद्वितीय है उसके पास दिखता तो कुछ नहीं पर न जाने उसके पास क्या सिद्धि है दान पुण्य में अपार धनराशि व्यय कर रही है। पति के वियोग मे उसने शरीर एकदम सुखाकर कृश कर लिया है। यह वृद्धा जो आपको देख गई उसी की सखी है।

कुमार ने जब यह वृतान्त सुना तो उसे अपनी प्रियतमा मदालसा का ख्याल आया और उससे मिलने को उत्सुक हुआ। फिर दूसरे ही क्षण सोचा—उसे न जाने पापी समुद्रदत्त ने कहां

लेजाकर किस विपत्ति में डाला होगा। व्यर्थ ही परस्त्री पर मोह उत्पन्न होने का पश्चाताप करता हुआ मध्यान्हकाल में जिन-पूजा के हेतु कुसुम, चन्दन आदि लेकर जिनालय में गया। वहुत विलम्ब हो जाने पर भी जब कुमार वापस नहीं लौटा तो त्रिलोचना ने चिन्तित होकर दासी को भेजा। खबर मिली कि उसे न तो किसी ने जाते देखा और न आते ही। त्रिलोचना पति-वियोग से दुखी होकर विलाप करने लगी। सर्वत्र खोज कराई गई पर कुमार का कोई पता नहीं लगा।

इसी नगरी मे महेश्वरदत्त नामक वणिक रहता था जिसके ५६ कोटि स्वर्ण-मुद्राएं निधान मे, ५६ कोटि उधार में, एवं ५६ कोटि मुद्राएं व्यापार मे थी। उसके ५०० जहाज, ५०० गोकुल, ५०० हाथी, ५०० घोड़े, ५०० पालकी, ५०० कोठे, ५०० सुभट व पांच लाख सेवक थे। उसके कोई उत्तराधिकारी पुत्र नहीं था, सहस्रकला नामक एक मात्र गुणवती कन्या थी जिसके लिए योग्य वर प्राप्त होने पर पाणिग्रहण करवा के स्वय दीक्षित होने की सेठ महेश्वरदत्त की चिर-कामना थी। उसने अपनी ६४ कला निधान पुत्री को तरुण वय प्राप्त हो जाने पर भी जब योग्य वर न मिला तो एक नैमित्तिक से अपने भावी जामाता के विषय मे प्रश्न किया। नैमित्तिक ने कहा—जो व्यक्ति राज सभा में त्रिलोचना के पति और मदालसा का पूरा वृत्तान्त कहेगा, वही तुम्हारी पुत्री का वर होगा और आज से एक महीने वाद वह मिलेगा। वही अखण्ड प्रतापी सारे राज्य

का अधिपति होगा। ज्योतिपी के विवाह लग्न देने पर सेठ ने स्वजन सम्वन्धियों को निमन्त्रित कर विवाहमण्डप की रचना की एव नाना प्रकार की विवाह सामग्री का सचय बड़े जोर-सोर से करना प्रारम्भ कर दिया। नगर में वर के विना व्याह मंडने की बडी भारी चर्चा चल रही थी। राजा ने जव यह बात सुनी तो उसने सेठ महेश्वरदत्त की वैराग्य-भावना की वड़ी प्रशंसा की और वह भी त्रिलोचना के पति की खोजकर उसे राजपाट देकर दीक्षा लेने का प्रवल मनोरथ करने लगा। राजा ने सर्वत्र उद्घोषणा करवा दी कि जो त्रिलोचना के पति व मदालसा का वृत्तान्त प्रकाशित करेगा उसे राज्याधिपति वनाने के साथ-साथ माहेश्वरदत्त की पुत्री सहस्रकला के साथ विवाह करा दिया जायगा। एक मास वीतने पर एक शुक ने आकर पटह स्पर्श किया और मानव भाषा मे वोलकर कहा मुझे राज-सभा मे ले जाओ मैं राजा के जमाता और मदालसा का सारा वृत्तान्त वताकर राजा का राज्य व सहस्रकला को प्राप्त करूंगा। सव लोग उसे कौतुकपूर्वक राजसभा मे ले आए। शुक ने मनुष्य की भाषा मे कहा—परदे के अन्दर त्रिलोचना और मदालसा को वुलाकर उपस्थित कीजिए ताकि मैं सारा आख्यान कह सुनाऊँ। राजा ने कहा—तुम ज्ञान के विना त्रियंच किस प्रकार सारी वातें जानते हो? शुक ने कहा—"मैं त्रिकालज्ञ हूं, भूत भविष्य की सारी वातें वतलाने मे समर्थ हूं।" फिर शुक ने राजा और समस्त नागरिक लोगों के समक्ष अपना वक्तव्य प्रारम्भ किया—

वाराणसी के राजा मकरध्वज का पुत्र उत्तमकुमार भाग्य परीक्षा के लिए घर से निकलकर देशाटन करता हुआ भरुअछ आया और मुग्धद्वीप देखने के लिए जहाज मे वैठकर समुद्र के वोच पहुँचा। वहाँ जलकान्त पवत स्थित भ्रमरकेतु राक्षस कारित कुएं में साहस पूर्वक उतर कर लंकापति की पुत्री मदालसा से उसने पाणिग्रहण किया। फिर अपनी स्त्री के साथ कूप-मार्ग से वाहर आकर समुद्रदत्त के वाहन में आरूढ़ हुआ। मार्ग मे जल शेप हो जाने पर पंचरत्न के प्रभाव से सवको अशन पान से सन्तुष्ट किया। कुमार की संपदा और स्त्री को देखकर पापी सेठ ने उसे समुद्र में गिरा दिया। उसे गिरते ही मकर ने निगल लिया जिसे धींवर ने जाल में पकड़कर उदर विदीर्ण कर कुमार को निकाला। वह एक दिन त्रिलोचना का प्रासाद देखने आया जिसका नव्य निर्माण हो रहा था। उसका राजकुमारी के साथ पाणिग्रहण हुआ और सुखपूर्वक रहने लगा और एक दिन वह जिन पूजा के हेतु घर से निकलकर जिनालय आया पूजनान्तर पुष्प करण्डिका में वंशनलिका को खोल कर देखा तो उसमे रखे हुए जहरी साँप ने कुमार के हाथ मे डंक लगा दिया जिससे वह मूर्छित हो धराशायी हो गया। हे राजन्! मैंने मदालसा और त्रिलोचना के पति का सारा वृत्तान्त वतला दिया अव कृपाकर अपनी सत्य प्रतिज्ञानुसार मेरी आशा पूर्ण करें तथा सेठ से भी सहस्रकला कन्या दिलावें। ऐसा कहकर शुक के मौन धारण करने पर राजा ने उसे आगे वोलने को कहा

तो उसने कहा—आप अपना वचन पूर्ण नहीं करते तो मैं चला जाऊँगा और जंगल में फल-फूल वृत्ति से अपना उदरपूर्ण करूँगा। मैंने यह जान लिया कि मनुष्य मायावी होते हैं और स्वार्थ सिद्ध होने पर तत्क्षण बदल जाते हैं। यह कहकर जब शुक उड़ने लगा तो राजा ने रोक कर कहा—धैर्य्यधारण करो, राज्य अवश्य दूँगा, पर यह तो बतलाओ उत्तमकुमार कहाँ है? जीवित है कि नहीं? मेरी यह शंका दूर करो। शुक ने कहा—इतनी बात बताने पर भी जब कुछ नहीं मिला तो आगे बालुका को पीलने से क्या तेल निकलेगा? जब राजा ने राज्य व कन्या देने की स्वीकृति दी तो शुक आगे का वृतान्त बतलाने लगा—

'उसी समय अनंगसेना नामक सुन्दर गणिका वहा पहुंची और उसे विषापहार मणि प्रक्षालित जल द्वारा निर्विष कर दिया और अपने घर ले जाकर चौथी मंजिल के महल मे रखा। राजन्। मैंने दाक्षिण्यवश सारा वृत्तान्त बतला कर मूर्खता की अब यदि आप अपना वचन पूरा नही करते तो मैं जाता हूं, आपका कल्याण हो! राजा ने कहा—अर्द्ध चिकित्सा करके वैद्य नहीं जा सकता अतः अनंगसेना के घर मे कुमार को शोध कर लूँ फिर तुम्हें राज दूँगा।

राजा ने अपने कर्मचारियो को अनगसेना के घर भेजा। वेश्या से राज-जामाता का अनुसन्धान पूछा तो वह चिन्तित और नीची नजर कर मौन हो गई। जब उत्तमकुमार वेश्या के

यहाँ न मिला तो राजा ने सचिन्त होकर शुकराज से ही प्रार्थना की कि तुम्ही सब स्पष्ट अनुसंधान कहो! उसने कहा—

अनंगसेना ने देखा राज-जामाता को यों घर में रखना मुश्किल है अतः उसे सर्वदा अपने यहां रखने के लिये उसके पैर में मंत्रित डोरा बाँधकर शुक बना दिया। उसने शुक को स्वर्ण पिंजड़े में रखा। वह रात मे उसे पुरुष और दिन मे शुक बना देती है एवं गीतगान आदि से उसका मनोरंजन करती है। कुमार ने मन मे सोचा—कर्मगति बड़ी विचित्र है! मैंने ऐसा क्या पाप किया जिससे मनुष्य भव में त्रियंच गति भोगनी पड़ती है। शायद मदालसा और पांचरत्न उसके पिता की आज्ञा बिना ग्रहण करने का तथा वृद्धा के आने पर त्रिलोचना से उसकी सखी पर स्वस्त्री जानकर क्षणिक मानसिक पाप किया तो उसी के फलस्वरूप साँप न डस गया हो? कवि कहता है कि उत्तम पुरुष अपने थोड़े से अपराध को भी विशेष मानते है।

अनंगसेना के यहाँ रहते उसे एक मास हो गया आज वह देवयोग से पिंजडा खुला छोडकर किसी काम मे लग गई। शुक ने पटहोद्घोषणा सुनकर उसे स्पर्श किया और इस समय वह आपके समक्ष उपस्थित है। राजा ने हर्षित होकर उसके पैर का डोरा खोला तो वह तुरत उत्तमकुमार हो गया।

उत्तमकुमार को देखकर सर्वत्र आनन्द छा गया। मदालसा व त्रिलोचना के अपार हर्ष का तो कहना ही क्या? सेठ माहेश्वरदत्त ने अपनी पुत्री सहस्त्रकला का कुमार के साथ पाणि-

ग्रहण कर दिया सारे नगर में आनन्द उत्सव मनाये गये। सुन्दरी गणिका अनंगसेना भी पातिव्रत नियम लेकर कुमार की चौथी स्त्री हो गई। राजा ने मालिन को वुलाकर धमकाया तो उसने समुद्रदत्त व्यवहारी द्वारा पाँचसौ मुद्रा प्राप्त कर लोभवश कुमार को मारने के लिए पुष्प-करंडिका मे साँप रखने का दुष्कृत्य स्वीकार कर लिया। राजा ने समुद्रदत्त व मालिन को मृत्युदण्ड दिया पर उदारचेता कुमार ने अपना भाग्य-दोष वताते हुए उन्हें क्षमा करवा दिया। राजा ने समुद्रदत्त का सर्वस्व लूटकर अन्त में देश निकाला दे दिया।

राजा नरवर्मा ने उत्तमकुमार को राजपाट सौंप कर सेठ महेश्वरदत्त के साथ सद्गुरु के चरणों मे जाकर संयम-मार्ग स्वीकार कर लिया और शुद्ध चारित्र पालन कर कर्मों का क्षय किया। अन्त में केवलज्ञान पाकर मोक्षगामी हुए। जव राक्षसेन्द्र भ्रमरकेतु ने नैमित्तिक से अपने वैरी का पता पूछा तो उसने कहा, वह तुम्हारी पुत्री को पंच रत्नों सहित व्याह कर ले गया और इस समय मोटपल्ली मे है। जव भ्रमरकेतु ने दुर्गम वक्र कूप मे पहुंचना असम्भव वतलाया तो उसने कहा कि जव वह अकेला था तव भी तुम उसका पराभव न कर सके तो अव तो वह प्रवल और जामाता भी हो गया। भ्रमरकेतु वैरभाव त्याग कर उत्तमकुमार से मिला और अपनी पुत्री तथा जामाता को आशीर्वाद देते हुए उसकी अधीनता स्वीकार कर ली।

एक दिन जव उत्तमकुमार राजसभा में वैठा था तो

वाराणसी से मकरध्वज का पत्र लेकर एक दूत उपस्थित हुआ, जिसमे अत्यन्त प्रेम पूर्वक लिखा था—'वेटा। तुम्हारे जाने के वाद हमने चारो ओर वहुत खोज की पर तुम्हारा कोई पता नहीं लगा। अव तुम शीघ्र आकर हमारा हृदय शीतल करो। मैं अव वृद्ध हो गया अतः तुम राज-पाट सम्भालो ताकि मैं आत्मकल्याण करूँ।

पितृ आज्ञा पाकर उत्तमकुमार का हृदय शीघ्र उनके चरणों में उपस्थित होने को उत्सुक हो गया। उसने मन्त्री लोगों को राज्य भार सौंप कर अपनी चारों स्त्रियों को लेकर सैन्य सहित वाराणसी के प्रति प्रयाण कर दिया। मार्ग में चित्रकूट जाकर राजा महासेन से मिला जिसने पूर्व निश्चयानुसार उत्तमकुमार को राज्याभिषिक्त कर स्वयं संयममार्ग स्वीकार कर लिया। उत्तमकुमार कई देशों मे अपनी आज्ञा प्रवर्तित कर सैन्य सहित गोपाचलगिरि की ओर वढ़ा। वहाँ के राजा वीरसेन को खवर मिलते ही चार अक्षौहिणी सेना के साथ सीमा पर आ डटा। परस्पर घमासान युद्ध हुआ, कवि ने १०वीं ढाल में युद्ध का अच्छा वर्णन किया है। अन्त मे वीरसेन पराजित होकर जीवित पकड लिया गया। उसके आधीनता स्वीकार करने पर कुमार ने उसे छोड़ दिया। अपनी पराजय से वैराग्यवासित होकर उसने एक हजार पुरुषों के साथ सुविहित आचार्य युगन्धरसूरि के पास चारित्र ग्रहण कर लिया। थोड़े दिन वाद मार्ग के अभिमानी राजाओ को वशवर्त्ती कर उत्तमकुमार वाराणसी पहुंचा। उसके

स्वागत मे नगर को सजाकर बड़े भारी उत्सव समारोह किये गए। उत्तमकुमार अपने माता पिता की चरणवन्दना कर अत्यन्त प्रमुदित हुआ। अपने पुत्र को इतने बडे राज्य-विस्तार व चार रानियों सहित समागत देखकर माता-पिता को अपार हर्ष हुआ। राजा मकरध्वज ने कुमार को शुभमुहूर्त मे राज्याभिषिक्त कर स्वयं दीक्षा ले ली।

अब उत्तमकुमार चार राज्यों का अधीश्वर था। उसके ४० लाख हाथी, ४० लाख घोड़े ४० लाख रथ व चार करोड़ पैदल सेना थी। वह ४० कोटि गामो का अधिपति था। उसने तीर्थ-यात्रा, जिनबिंब व प्रसादों के निर्माण तथा ग्रंथ भण्डार व स्वधर्मी वात्सल्य मे अगणित धनराशि व्यय की। इस प्रकार चार रानियों के साथ सुखपूर्वक राज्य करने लगा। एक दिन केवली मुनिराज के शुभागमन होने पर राजा चरणवन्दनार्थ उपस्थित हुआ। उपदेश सुनकर राजा उत्तमकुमार ने केवली भगवान से पूछा—प्रभो। मैंने ऐसे क्या पाप-पुण्य किये जिससे इतनी ऋद्धि सम्पत्ति पाने के साथ-साथ समुद्र मे गिरा, मच्छ के पेट से निकलकर धीवर के यहाँ रहा एवं गणिका के यहाँ शुक पक्षी के रूप मे रहना पडा। केवली भगवान ने फरमाया—पूर्वकृत कर्म का विपाक उदय मे आने पर सुख-दुःख भोगना पडता है। कर्मों का प्रभाव जानने के लिए केवली भगवान ने राजा को पूर्व जन्म का सम्बन्ध कहा—हिमालय प्रदेश के सुदत्त ग्राम मे धनदत्त नामक एक कौटुम्बिक रहता था जिसके चार

स्त्रियां थी, कर्मवश उसका सारा धन नष्ट हो गया। एक वार चोरों द्वारा वस्त्र लूटे हुए चार मुनिराज उसके गाँव में आये जो ठण्ढ के मारे कांप रहे थे। धनदत्त कृपालु था उसने उन्हें वस्त्र दान दिया चारों स्त्रियों ने भी उस दान की घडी अनुमोदना की उसी के प्रभाव से तुम्हें चार महाराज्य मिले। एक वार किसी भव में तुमने मुनियों के मलिन शरीर को देखकर मच्छ जैसी दुर्गन्ध वतलाई जिसके कारण तुम्हें मच्छ के पेट मे तथा धीवर के घर रहना पड़ा। इस भव से हजारवें भव पूर्व तुमने शुक को पिंजड़े मे वन्द किया था उसी कर्मों से तुम्हें शुक होना पड़ा। अनंगसेना ने पूर्वभव मे अपनी सखी को शृंगार सजी हुई देखकर वेश्या शब्द से संवोधित किया जिसके कर्मोदय से वह वेश्या हुई।

राजा उत्तमकुमार अपना पूर्व भव सुनकर वैराग्यवासित हो गया। उसने अपने पुत्र को राजपाट सौंपकर चारो स्त्रियों के साथ संयम ले लिया। फिर निर्मल चारित्र पालन कर अनशन आराधना पूर्वक चार पल्योपम की आयुवाला देव हुआ। वहाँ से महाविदेह क्षेत्र मे उत्पन्न होकर सिद्ध वुद्ध होंगे।

कवि विनयचन्द्र ने सं० १७५२ में पाटण में चारुचन्द्र मुनि कृत संस्कृत उत्तमकुमार चरित्र के आधार से यह रास-निर्माण किया है। हमारे अभय जैन ग्रन्थालय में इसकी चारुचन्द्र गणि द्वारा स्वयं लिखित प्रति विद्यमान है जिसके अनुसार यह चरित्र वीकानेर में ५७५ श्लोकों में प्रथमाभ्यास रूप मे वनाया है कवि

विनयचन्द्र भी इस रचना को अपना प्रथमाभ्यास सूचित करते है। जिनरत्नकोश के अनुसार इसके अतिरिक्त तपागच्छीय जिनकीर्त्ति, सोमसण्डन और शुभशील के भी संस्कृत चरित्र उपलब्ध है तथा भाषा मे महीचन्द्र ने सं० १५६१ जौनपुर मे विजयशील ने सं० १६४१ मे, लब्धिविजय ने सं० १७०१ मे, कवि जिनहर्ष ने सं० १७४५ पाटण मे तथा राजरत्न ने सं० १८५२ मे खेडा मे रास चौपाई बनाये जो सभी उपलब्ध है।

कविवर विनयचन्द्र के व्यक्तित्व और रचनाओं का थोडा विहंगावलोकन पिछले पृष्ठो मे कराया जा चुका है। इस ग्रन्थ में अब तक की उपलब्ध कविवर की समस्त रचनाएँ दी जा चुकी है। अन्त में कविवर की कृतियों में प्रयुक्त देसियो की सूची देकर इस ग्रन्थ में आये हुए राजस्थानी व गुजराती शब्दो का कोष प्रकाशित किया है। इसमें शब्दों के अर्थ की ओर नहीं, पर भावार्थ की ओर ही लक्ष्य रखा गया है, एक शब्द के अनेक अर्थ होते है पर जहाँ जिस भाव मे उसे प्रयुक्त किया है उसे समझने मे पाठकों को सुगमता हो, यही इसका उद्देश्य है।

कविवर की जीवनी के विषय मे हम अधिक सामग्री उपलब्ध न कर सके पर जितना भी ज्ञात हुआ, दिया गया है। कविवर के हस्ताक्षर व उनकी रचनाओं की प्रति के अन्तिम पृष्ठ का ब्लाक बनवा कर इस ग्रन्थ मे प्रकाशित कर रहे है ताकि उनकी व उनके गुरु की अक्षरदेह के दर्शन हो सके।

यह पुस्तक जिस रूप मे प्रकाशित हो रही है उसका

वास्तविक श्रेय राजस्थानी और जैन साहित्य के यशस्वी विद्वान सादूल राजस्थान रिसर्च इन्स्टीट्यूट के डाइरेक्टर पूज्य श्री अगरचन्दजी नाहटा, जैन इतिहासरत्न को है जिनकी सतत चेष्टा और प्रेरणा से शताब्दियों से ज्ञानभंडारों में पड़े हुए ग्रन्थ प्रकाश में आ रहे है। मेरी समस्त साहित्य प्रवृत्तियो के तो वे ही सर्वेसर्वा हैं अतः आत्मीयजनों के प्रति आभार व्यक्त करने का प्रश्न ही नहीं उठता। आशा है प्रमाद व उपयोगशून्यता-वश रही हुई भूलों को परिमार्जन करके विद्वान पाठकगण अपने सौजन्य का परिचय देंगे।

—भंवरलाल नाहटा

अनुक्रमणिका

कृति नाम	आदि पद	पृष्ठाङ्क
चौबीसी		
१—ऋषभ जिन स्तवनम्	गा० ७ आज जनम सुकियारथउ रे	१
२—अजित जिन स्त०	गा० ७ साहिब एहवउ सेवियइ	२
३—संभव जिन स्त०	गा० ७ स्वस्तिश्री गर्जित भय वर्जित	३
४—अभिनन्दन जिन स्त०	गा० ७ हारे मोरा लाल थिरकर रह्यउ	४
५—सुमति जिन स्त०	गा० ७ सुमति जिनेसर साभलौ	५
६—पद्मप्रभु स्त०	गा० ७ पद्मप्रभु स्वामी हो माहरी	५
७—सुपार्श्व जिन स्त०	गा० ७ सहजसुरंगा हो चंगा जिनजी	६
८—चन्द्रप्रभु जिन स्त०	गा० ७ चन्द्रप्रभु नइ चन्द्र सरीखी	८
९—सुविधिजिन स्त०	गा० ७ सुविधि जिणद तुम्हारी	८
१०—शीतलजिन स्त०	गा० ७ अरज सफल करि माहरी	१०
११—श्रेयांस जिन स्त०	गा० ७ जिनजी हो मानि वचन मुझ०	११
१२—वासुपूज्य स्त०	गा० ७ श्रीवासुपूज्य जिनेसर ताहरी	१२
१३—विमल जिन स्त०	गा० ७ विमलजिनेसर सुणि अलवेसर	१३
१४—अनंत जिन स्त०	गा० ७ एक सबल मनमें चिंता रहै रे	१४
१५—धर्मनाथ स्त०	गा० ७ वाल्हा सुणि हो मुझ अरदास	१६
१६—शांतिजिन स्त०	गा० ७ हारेलाल शांतिजिनेसर	१७
१७—कुंथुनाथ स्त०	गा० ७ बहुदिवसा थी पामियौ रे	१८
१८—अरनाथ स्त०	गा० ७ तुझ गुण पकति वाडी फूली	१९
१९—मल्लि जिन स्त०	गा० ७ मल्लिजिनेसर तु परमेसर	२०
२०—मुनिसुव्रत स्त०	गा० ७ मुनिसुव्रत मनमाहरौजी	२२
२१—नमिनाथ स्त०	गा० ७ साहिबाजी हो तु नमिजिनवर	२२
२२—नेमिनाथ स्त०	गा० ७ थाहरी तो मूरति जिनवर	२४

कृति नाम	आदि पद	पृष्ठाङ्क
२३—पार्श्वनाथ स्त०	गा० ७ जिनवर जलधर उलट्यौ सखि	२५
२४—महावीर स्त०	गा० ७ मनमोहन महावीर रे	२७
२५—कलश	गा० ७ इणिपरि मइ चौवीसी कीधी	२८

विहरमान वीसी

सीमधर जिन स्त०	गा० ५ श्री सीमन्धर सुन्दर साहिवा	३०
युगमधर स्त०	गा० ५ वीजा जिनवर वदियइ	३१
वाहु जिन स्त०	गा० ५ वाहुजिनेश्वर वीनवुं रे	३२
सुवाहु जिन स्त०	गा० ५ श्रीसुवाहु जिनवर नमियइ	३३
सुजात जिन स्त०	गा० ५ श्रीसुजात जिन पाचमाजी	३४
स्वयंप्रभ जिन स्त०	गा० ५ श्री स्वयप्रभ अतिशय रत्ननिधान	३५
ऋषभानन स्त०	गा० ५ ऋषभानन जिनवर वंदी	३५
अनतवीर्य स्त०	गा० ५ अनन्तवीय जिन आठमो रे	३६
सूरप्रभ जिन स्त०	गा० ५ सूरप्रभु प्रभुता तें पामी	३७
विशाल जिन स्त०	गा० ५ श्री सुविशाल जिणद	३८
वज्रधर स्त०	गा० ५ रगरगीला हो लाल वज्रधर	३९
चन्द्रानन स्त०	गा० ५ चद्रानन जिन चदन शीतल	४०
चन्द्रवाहु स्त०	गा० ५ चन्द्रवाहु जिनराज उमाह धरि	४१
भुजंग जिन स्त०	गा० ६ भुजंगदेव भावइ नमुं	४२
ईश्वर जिन स्त०	गा० ५ ईश्वरजिन नमियइ	४३
नेमिप्रभ स्त०	गा० ५ हर्ष हींडोलणइ झूलइ	४४
वीरसेन स्त०	गा० ५ जयउ वीरसेनाभिधो जिनवरो	४५
महाभद्र स्त०	गा० ५ साहिव सुणियइ हो सेवक वीनतीजी	४६
देवयशा स्त०	गा० ५ तुम्हे तो दूर जइवस्या रे हा	४७
अजितवीर्य स्त०	गा० ५ अजितवीरज जिन वीसमाजी	४८
कलश	गा० ५ सप्रति वीस जिनेसर वदउ	४९

कृति नाम	आदि पद	पृष्ठाङ्क
शत्रुञ्जय यात्रा स्त०	गा० २१ हारेमोरा लाल सिद्धाचल सो०	५०
ऋषभजिन स्त०	गा० ७ वीनति सुणो रे माहरा वाल्हा	५४
शत्रुञ्जय आदि स्त०	गा० १३ वात किसी तुझनइ कहु	५५
अभिनंदन स्त०	गा० ४ पथीड़ा अंदेसो मिटसै	५७
चद्रप्रभ स्त०	गा० ५ साहिवा हो पूरण शशिहर सारिखो	५८
शातिनाथ स्त०	गा० ५ सांभलिनिसनेही हो लाल	५६
नेमिनाथ स्त०	गा० ६ नेमजी हो अरज सुणो रे वाल्हा	५६
नेमिनाथ सोहला	गा० ७ नेमिकुवर वर वोद विराजै	२०६
नेमिराजुल वारहमासा	गा० १३ आवउ हो इस रिति हितसइ	६१
संखेश्वरपार्श्व स्त०	गा० ११ श्री सखेसर पासजी रे लो	६४
पार्श्वनाथ वृ० स्त०	गा० ११ श्रीपास जिनेसर स्वामी	६६
पार्श्वनाथ स्त०	गा० ७ सुन्दर रुप अनूप	६७
गौड़ीपार्श्व स्त०	गा० १५ नाम तुमारो साभली रे	६६
पार्श्वनाथ स्त०	गा० ३ माई मेरे सावरी सूरत स् प्यार	७०
वाड़ीपार्श्व स्त०	गा० ६ लाघ्या गिरवर डूगराजी	७१
चिंतामणिपार्श्व स्त०	गा० ७ भलो वण्यो मुखड़ा नो मटको	७२
चिंतामणि पार्श्व स्त०	गा० ५ अरज अरिहत अवधारियै जी	७२
पार्श्वनाथ गीत	गा० ७ तूठा हे पास जिणद	७३
स्वाभाविक पार्श्व स्त०	गा० ६ सुणि माहरी अरदास रे	७४
नारगपुर पार्श्व स्त०	गा० ७ सुनिजर ताहरी देखिनइ रे	७६
रहनेमि राजिमति स०	गा० १५ शिवादेवीनन्दन चरण वन्दन	७६
स्थूलिभद्र सज्भाय	गा० ७ साभलि भोली-भामिनी रे	७६
स्थूलिभद्र वारहमासा	गा० १३ आपाढइ आशा फली	८०
जिनचन्द्रसूरि गीत	गा० ११ वड़वखती गुरुनित गाजै	८७

कृति नाम	आदि पद	पृष्ठाङ्क
११ अंग सज्झायादि		
आचारांग सज्झाय	गा० ७ पहिलो अंग सुहामणो रे	८६
सूयगडांग स०	गा० ७ बीजो रे अंग हिवे सहु०	८७
स्थानांग सूत्र स०	गा० ७ त्रीजउ अंग भलउ कह्यउ रे	८८
समवायांग स०	गा० ७ चौथौ समवायांग सुणौ	८६
भगवती सूत्र स०	गा० ७ पञ्चम अङ्ग भगवती जाणियै रे	९०
ज्ञाता सूत्र स०	गा० ७ छट्ठो अङ्ग ते ज्ञाता सूत्र वखाणियै	९१
उपासकदसांग स०	गा० ७ हिवैसातमो अंग ते सांभलो	९३
अन्तगड़दसा स०	गा० ७ आठमो अंग अन्तगड़दसाजी	९४
अणुत्तरोववाइ स०	गा० ७ नवमो अंग अणुत्तरोववाई	९४
प्रश्नव्याकरण स०	गा० ७ दसमउ अंग सुरंग सोहावइ	९५
विपाक सूत्र स०	गा० ७ सुणो रे विपाक श्रुत अंग	९६
११ अंग स०	गा० ७ अंग इग्यारे मैं थुण्या	९८
दुर्गति निवारण स०	गा० ९ सुगुण सहेजा मेरा आतम	९९
जिन प्रतिमा स्वरूप स०	गा० २६ विपुल विमल अविचल अमल	१००
कुगुरु सज्झाय	गा० ३१ जैन युक्ति सु साधना	१०४
उत्तमकुमारचरित्र चौपई		१०८ से २०८ तक
ढालों में प्रयुक्त देसी सूची		२११
कठिन शब्दकोष		२१५

मणा॥ पंसारी अगइग्यारती॥सण॥ मुजमनमंमयरवे लि कि।सीचुंनेहरसइ करी॥सण॥अछतवरसतीरेलि॥२सण॥दे
डधरीजेसातलइ।सण।कणहूडाकणलालकि।तउतेफलनदे करइ।सण॥स्वादइअति निरसाल॥३सण॥ दर्भ
पारधरी हियइ।स॥ अलसदा वादमजारकि।तासकरीपअगनी॥स॥ वरत्याडायश्कार॥४सण॥सवतसतरप
चावतइ।सण।वर्षा रितिनलसासकि।दसमीदिनवदिपक्ष मा।सण॥हरणीयइ मन आस॥५सण॥श्री जिनधर्मसू
रिपाटवी॥सण॥श्री जिनचंद्रसूरीसकि।खरतरगछना राजीया॥सण॥ लसरणाइंगजगीस॥६सण॥पाठकदर्ष
निधानजी।स॥ ज्ञानतिलकसुपसायकि।विनयचं द्रकहइमइंकरी॥सण॥अंगइग्यारसिझाय॥७॥सण
॥ इतिश्रीएकादशांगानां स्वाध्यायः॥ संव त् १७६६वर्षे मिती वैशाषसुदि १४दिने श्री वि
क्रमनगरे॥उपाध्यायश्रीहर्षनिधानजी शिष्य पंपज्ञानतिलक लिषतं॥ साध्वी कीर्तिमाला नि
मणी।वृषमाला पठनार्थे॥ श्रीरस्तुः॥ शुभं। भवतुः॥ कल्याणमस्तुः॥ श्रेयांसि सवर्त्ततां॥

कविवर के गुरु उ० ज्ञानतिलक लिखित कवि विनयचन्द्रकृति संग्रह प्रति का अन्तिम पत्र

विनयचन्द्रकृति कुसुमाञ्जलि

चतुर्विंशतिका

॥ श्रीऋषभ जिन स्तवनम् ॥

ढाल—महिंदी रंग लागौ

आज जनम सुकियारथउ रे, भेट्या श्रीजिनराय।
प्रभु सुं मन लागौ, खिण इक दूरि न थाय ॥ प्र०॥
सुगुण सहेजा माणसां रे, जोरइ मिलियइ जाय। प्र० ॥१॥
नयणे नयण मिलायनइ रे, जिन मुख रहीयइ जोय। प्र०।
तउ ही तृप्ति न पामियइ रे, मनसा विवणी होय। प्र० ॥२॥
मानसरोवर हंसलउ रे, जेम करइ भकझोल। प्र०।
तिम साहिब सुं मन मिल्यउ रे, करउ सदा कल्लोल। प्र० ॥३॥
हीयडा माहि जे वसइ रे, वाल्हा लागइ जेह। प्र०।
जउ बीजा रूपइं रूडा रे, न गमइ ता सूं नेह। प्र० ॥४॥
रसल्यै गुण मकरंद नउ रे, चतुर भमर तजि खेद। प्र०
जे जण घण सरिखा हुवइ रे, स्युं जाणउ तस वेध। प्र० ॥५॥
एहवउ मंइ निश्चय कियउ रे, पलक न मेलूं पास। प्र०।
आखर सेवा मां रह्या रे, फलस्यइ मन नी आस। प्र० ॥६॥

मीठा अमृत नी परइ रे, ऋषभ जिनेश्वर संग। प्र०।
'विनयचन्द्र' पामी करी रे, राखउ रस भरि रंग। प्र० ॥७॥

॥ श्री अजित जिन स्तवनम् ॥

ढाल—हमीरा नी

साहिब एहवउ सेवियइ, सुगुण सरूप सतेज सजनजी।
मिलता ही मन उल्लसै, दीठा वाधइ हेज सजनजी ॥१॥ सा० ॥
तेतउ आज किहां थकी, जिण मांहें हुवै स्वाद। स०।
स्वाद विहूणा छोड़ियइ, राखेवां मरजाद सजनजी ॥२॥ सा० ॥
समय अछइ इण रीत नों, तउ पिण वखत प्रमाण। स०।
मुझनइ प्रभु तेहवउ मिल्यौ, सहज सुराग सुजाण। स० ॥३॥सा०॥
ज्यां सॅं मन पहिली हुँतउ, ते तउ देव कुदेव। स०।
कंचन नइ वलि कामिणी, ते जीप्या नितमेव। स० ॥४॥सा०॥
ए निर्जित इण वात मां, रिद्धि तजी भरपूर सजनजी।
दर्प हतउ कदर्प नउ, ते पणि टलयउ दूर सजनजी ॥ ५ ॥ सा० ॥
मुगति वधू रस रागियउ, ज्योतिर्मय वसुधार सजनजी।
यश महकइ गहकइ गुणे, अजित विजित रिपुवार।स०॥६॥सा०॥
'विनयचन्द्र' प्रभु आगलें, कर्म अरी करी नीम सजनजी।
वेगि वल्या गर्भइं गल्या, जिम पोष्ण गल हीम स० ॥७॥ सा० ॥

॥ श्री संभव जिन स्तवनम् ॥

ढाल—धणरा मारूजी रे लो

स्वस्तिश्री गर्जित भयवर्जित त्रिभुवनतर्जित
सकल जीव हितकामी रे लो। म्हारां वालेसर जी रे लो ॥

ते शिव वदिर अनुभव मन्दिर सद्गुण सुन्दर
तिहा छइ संभव स्वामि रे लो ॥ मा० ॥ १ ॥
तिण दिशि लेख लिखइ प्रेमातुर चित नउ चातुर
आतुर प्रेम प्रयासइ रे लो । मा० ।
प्रभु नइ प्रीति प्रतीत दिखाली रीति रसाली,
पाली सेवक भासइ रे लो ॥ मा० ॥ २ ॥
सुगुण सनेही अरज सुणीजइ सुनिजर कीजइ,
दीजइ दरस उमाही रे लो । मा० ।
मुझ चित्त माहें ए छइ चटकउ तुझ मुख मटकौ,
लटकौ दीसइ नाही रे लो । म० ॥ ३ ॥
तुं तउ मोसुँ रहइ निरालउ, माया गालउ,
इम टालउ किम कीजइ रे लो ॥ मा० ॥
पोतानउ सेवक जाणीनइ हित आणीनइ,
चित ताणी नइ लीजइ रे लो । म० ॥ ४ ॥
निगुण थया तउ नेह न व्यापइ मन थिर थापइ,
तउ आपइ नवि डोलु रे लो । मा० ।
वात कहुं वेधाले वयणे विकसित नयणे,
गुण रयणे जस बोलु रे लो । मा० ॥ ५ ॥
कहता कहता सोहन वाधइ मोह न वाधइ,
साधइ कारिज तेही रे लो । मा० ।
मौन करइ जे मननी खातइ यक दृष्टान्ते,
भ्रान्तइ रहत सनेही रे लो । मा० ॥ ६ ॥

समाचार इण भांतइ वांची दिलमइं राची,
साची कृपा करेज्यो रे लो। मा०।
'विनयचन्द्र' साहिब तुम्ह आगे मागें रागें,
सुकृत भंडार भरेज्यो रे लो ॥ मा० ॥ ७ ॥

॥ श्री अभिनन्दन जिन स्तवनम् ॥

ढाल—धणरी बिंदली मन लागौ

हारे मोरा लाल थिर कर रह्यौ सहु थानकइ,
थिर जेहनउ जस थंभ मोरा लाल।
अभिनन्दन चंदन थकी, अधिक धरइ सोरंभ मोरा लाल ॥१॥
तिण साहिब सुं मन मोह्यौ,
हारे सुगुणा साहिब सुं मन मोह्यौ ॥ आकणी ॥
हारे मोरा लाल चंदण नी तौ वासना,
रहइ एक वन अवगाह ॥ मो० ॥
प्रभुनी प्रगट उपासना, सलहै त्रिभुवन माह ॥ मोरा ॥ २ ॥ ति०॥
हारे मोरा लाल साप संताप करउ सदा, घाल्यौ चंदन घेर ॥मो०॥
मोरा साहिब आगलइ, सुरनर हुआ जेर ॥ मो० ॥३॥ ति० ॥
चंदन विरहण नारीयां, तपति बुझावइ देह ॥ मो० ॥
पाप ताप दूरइ हरइ, श्री जिनवर ससनेह ॥ मो० ॥४॥ ति० ॥
चंदन तरुवर अवर नइ, करइ सरस शुभ गंध ॥ मो० ॥
विपय अंध मानव भणी, जिन तारइ भवि सिंधु ॥मो०॥५॥ति०॥
चंदन फल हीणौ हुवइ, नंदन वन जसु वास ॥ मो० ॥
इक कारणि प्रभु मा मिलइ, फलइ जपंता आश ॥ मो० ॥६॥ति०॥

परतखि जाणि पटंतरउ, मनथी प्रभु मत मेल्हि ।। मो० ।।
'विनयचन्द्र' पामिस सही, निरमल जस रस रेल्हि ।।मो०।।७।।ति०।।

।। श्रीसुमतिजिन स्तवन ।।

ढाल—वात म काढो व्रत तणी

सुमति जिनेश्वर साभलौ, माहरा मननी वाता रे ।
तु सुपना माहे मिलइ, खबर पडइ नहीं जाता रे ।।१।।सु०।।
पिण हिव अवसर देखिनइ, धर्म जागरिका धरस्युं रे ।
प्राण सनेही जाणिनइ, तुझथी झगड़ौ करिस्युं रे ।।२।।सु०।।
जे हित अहित न जाणिस्यइ, पर ना अवगुण लेस्यइ रे ।
तिण सुं कुण मुह मेलिस्यइ, कुण अतर गति देस्यइ रे ।।३।।सु०।।
तिल भर जे जाणै नहीं, तेहनइ गुह्य कहीजै रे ।
तू तउ जाण प्रवीण छइ, माहरी वांह ग्रहीजइ रे ।।४।।सु०।।
मइं भव भमता दु ख सह्या, ते तउ तुं हिज जाणइ रे ।
जे लज्जालू नर हवइ, मुहंडइ केम वखाणइ रे ।।५।।सु०।।
इम जाणीनइ हित धरउ, मुझनइ दुत्तर तारउ रे ।
स्यु जायइ छइ ताहरौ, वाल्हा हृदय विचारौ रे ।।६।।सु०।।
वीजा किणही ऊपरा, भोलइ ही मति राचउ रे ।
मननी इच्छा पूरस्यइ, 'विनयचन्द्र' प्रभु साचउ रे ।।७।।सु०।।

।। श्री पद्मप्रभु स्तवनम् ।।

ढाल- योधपुरीनी

पद्मप्रभु स्वामी हो माहरी अरज सुणौ, तुमे अंतरजामी हो,
जिनवर आइ मिलौ ।।१।।

तुं तौ पद्म तणी परइ हो, परिमल प्रगट करइ,

मुझ मन मधुकर धरि हो ॥जि०॥२॥

वलि तुं इम जणिसि हो, पद्म हुवइ जिहां,

जायइ मधुकर अहिनिशि हो ॥जि०॥३॥

पिण पद्म सयाणउ हो, सरवर माहि रह्यौ,

वेलइं वीटाणउ हो ॥जि०॥४॥

तिहां चित्त न लोभइ हो, जल अति ऊछलउ,

भमरउ इम सोचइ हो ॥जि०॥५॥

तिम तइं कमलाकरि हो, सिद्ध पद आश्रयौ,

शिव वेलि सुहंकर हो ॥जि०॥६॥

विचि भवजल चोलउ हो 'विनयचन्द्र' किम आवइ,

हिव किणि उक ओलइ हो ॥जि०॥७॥

॥ श्रीसुपार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—चादनइ विराजइ हो हजा मारु लोवड़ी

सहज सुरंगा हो चंगा जिनजी साभलौ,

विनय तणा जे वयण।

हुं तुझ चरणे हो आयौ ध्यायौ हेज सुं,

साचौ जाणी सइण ॥१॥

मूरति तोरी हो दिल चोरी नइ रही,

वसियकरण कियौ कोइ।

रंग दिखालउ हो टालइ जे दुख आपणौ,

ते गुण रसिया जोइ ॥२॥मूरति॥

अंतरजामी हो सामि तैं मन वेधियउ,
प्रगट्यउ प्रेम प्रमाण।
मैं इकतारी हो कीधी थारी वालहा,
तु हिज जीवन प्राण॥३॥मू०॥
पिण मोसुं नाणइ हो प्राणै ही तुं नेहलउ,
एक पखी थइ प्रीत।
नीर अभावइ हो जिम दुःख पावइ माछली,
नीर तणइ नहीं चीत॥४॥मू०॥
वलि इम जाण्यौ हो ताण्यौ तूटइ साहिबा,
हृदय विचारी दीठ।
जाय निराशी हो प्रभुसुं हांसी जे करइ,
ते तू फल प्रापति लहै नीठ।५॥मू०॥
ओलग चाहइ हो तोरी लाहइ कारणइ,
अन्य उपरि रहै लीण।
वाचा न काचा हो जे तुझनइ कहइ,
ते मूरख मतिहीण॥६॥मू०॥
हुं गुणरागी हो सागी सेवक ताहरउ,
साहिब सुगुण सुपास।
भेद न राखइ हो भाखइ कवियण भावसुं,
'विनयचंद' सुविलास॥७॥मू०॥

॥ श्रीचन्द्रप्रभु जिन स्तवनम् ॥

ढाल—आघा आम पधारो पूज अमघरि विहरण वेला

चन्द्रप्रभु नइ चन्द्र सरीखी, कान्ति शरीरइ सोहइ।
जेहनउ रूप अनूप निहाली, सुरनर सगला मोहइ॥१॥
तिणसुं मो मन मिलियउ राज, साकर दूध तणी परइ॥आंकणी॥
पिण सकलंकित चन्द्र कहावइ, अकलंकित मुझ स्वामी।
ते तउ अमृत रस नइ धारइ, प्रभु अनुभव रस धामी॥२॥ति०॥
तेहनइ सन्मुख चपल चकोरा, प्रसरत नयणे जोवइ।
प्रभु दरसण देखण जग तरसै, प्रापति विण नवि हावइ॥३॥ति०॥
चन्द्रकला ते विकला जाणौ, घटत वधत नइ लेखइ।
साहिब नइ तउ सदा सुरंगी, वाधइ कला विशेषइ॥४॥ति०॥
निशिपति नारी मोहनगारी, रोहणि नउ रंग* रातौ।
प्रभु करणी परणी तजि तरुणि, अद्भुत गुण करि मातौ॥५॥ति०॥
राहु निसत्त करें ग्रसि तेहनउ, जाणौ रूनौ फूभौ।
तेहज राहु जिनेसर सेवा, करइ सदाइ ऊभौ॥६॥ति०
सीस मानता देवाधिपनी, शशिहर एहवुँ जाणी।
'विनयचन्द्र' प्रभु चरणे लागौ, लंछन नउ मिश आणी॥७॥ति०॥

॥ श्री सुविधिनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—बिंदलीनी

सुविधि जिणद तुम्हारी, मोनइ सूरति लागै प्यारी हो॥
जिनवर अरज सुणौ॥

---

* रस।

अरज सुणौ इण वेला,
दोहिला छइ फिर फिर मेला हो ॥१॥ जि० ॥
अवसर विन कुण किणि पासइ,
आवै मनइ उल्लासइ हो ॥ जि० ॥
जिम कोइल पवनइ प्रेरी,
आवइ तजि ठौड अनेरी हो ॥२॥जि०॥
वलि लोक कूकइ कण सूकइ,
जलधर जौ अवसर चूकइ हो ॥ जि० ॥
पछै घोर घटा करि आवै,
तेह केहना मन मां भावइ हो ॥जि०॥३॥
तिम अवसर साधउ स्वामी,
तमे मोहन मूरति पामी हो ॥ जि० ॥
तेहनउ फल मुझनइ दीजै,
करि महिर कृतारथ कीजै हो ॥ जि० ॥४॥
आज आप स्वारथ मीठौ,
मइं साच वचन ए दीठउ हो ॥जि०॥
जिम तरुवर छोडइ पंखि,
फल फूल न देखइ अंखि हो ॥ जि० ॥५॥
निर्जल सर सारस मूकइ,
दृष्टान्त इत्यादिक ढूकइ हो ॥ जि० ॥
पिण ते मुझ मनमा नावइ,
इक तुहिज सदा सुहावइ हो ॥ जि० ॥६॥

तुम्हथी कुण मुझनइ वाल्हूं,
हुं तउ तुमहिज ऊपरि माल्हुं हो ॥ जि० ॥
साम्हउ जोवउ वहु खातइ,
कहइ विनयचन्द इण भांतइ हो ॥जि०॥७॥

॥ श्रीशीतलजिनस्तवन ॥

ढाल—वेगवती ते वाभणी, एहनी

अरज सफल करि माहरी, शीतलनाथ सनेही रे।
थोड़ा मां समजै घणुं, साचा साजन तेही रे॥ १ ॥ अ० ॥
तुझ विन मननी वातड़ी, केहनइ आगल कहियइ रे।
पासइ रहि सीखावियइ, तउ प्रभु सोह न लहीयइ रे॥ २ ॥प्र०॥
तिण मेलउ दे मुझ भणी, जिम मन मा सुख थावइ रे।
जउ चिन्ता चित्त राखीयइ, दिवस दुहेलउ जायइ रे॥ ३ ॥अ०॥
तैं मन लीधउ हेरिनइ, जिम भावै तिम कीजइ रे।
कहतां लागइ कारिमउ, अनुमानइ जाणीजइ रे॥ ४ ॥ अ० ॥
जनम लगइ हिव माहरउ, तु छइ अन्तरजामी रे।
निज सेवक जाणी करी, खमिजे वाल्हा स्वामी रे॥ ५ ॥अ० ॥
वीजउ सहु दूरइ रहउ, जउ फरसूँ तुझ छाया रे॥
तउ अगणित सुख ऊपजइ, उल्लसइ माहरी काया रे॥ ६ ॥ अ० ॥
प्राणें ही नवि पहुंचियइ, तेहनइ तुरत नमीजं रे।
'विनयचंद्र' कहै तेहनउ, तउ कांइक मन भीजें रे॥ ७ ॥ प्र० ॥

।। श्रीश्रेयांस जिन स्तवनम् ।।

ढाल—राजमती तें माहरो मनड़ौ मोहियौ हो लाल, एहनी

जिनजी हो मानि वचन मुझ ऊधरउ हो लाल,
महिर करी श्रेयास वालेसर।
खेल चतुर्गति मा कियौ हो लाल,
वादी जिण परि वास। वा० ।।१।।
पिण तुझनइ नवि साभर्यो हो लाल,
मंइ तउ किण ही वार ।। वा० ।।
हिव अनुक्रमि तुझनइ मिल्यउ हो लाल,
इहा नहीं झूठ लिगार ।। वा० ।।२।।
देखि स्वरूप संसार नउ हो लाल,
भय आवे नितमेव ।। वा० ।।
पिण जाणु छुं ताहरी हो लाल,
आडी आस्यै सेव ।। वा० ।।३।।
सेव करइ ते स्वारथइ हो लाल,
तेहनी ताहरइ चित्त ।। वा० ।।
मोह हिया थी मेल्हिनइ हो लाल,
तुं वैठो नित नित्त ।। वा० ।।४।।
कर जोड़ी तुझ आगले हो लाल,
कहियइ वारंवार ।। वा० ।।
तउ ही तुं न करइ मया हो लाल,
स्यानउ प्राण आधार ।। वा० ।।५।।

कठिन हृदय छइ ताहरउ हो लाल,
वज्र थकी पिण जोर ॥ वा० ॥
मन हटकी नइ राखिस्यउ हो लाल,
करस्यइ कवण निहोर ॥ वा० ॥६॥
आप शरम जउ चाहस्यउ हो लाल,
नवि देस्यउ मुझ छेह ॥ वा० ॥
भवसायर थी तारस्यौ हो लाल,
'विनयचन्द्र' ससनेह ॥ वा० ॥७॥

॥ श्रीवासुपूज्य स्तवनम् ॥

ढाल—वधावानी

श्री वासुपूज्य जिनेसर ताहरी,
ओलग हो २ मंइ कीधी सही जी।
हिव आशा पूरउ प्रभु माहरी,
नहिं तरि हो २ तुझ नइ मेल्हिस्यइ नहीं जी ॥ १ ॥
तुझ साथइ कोई जोर न चालइ,
तउ पिण हो २ आड़ौ मांडिस्युं जी।
इम करतां जउ तुं वंछित नालइ,
तउ त्यारै हो २ तुझनइ छाडस्युं जी ॥ २ ॥
रहिचणां तउ हुं छुं वाल्हा तारैं जी सारैं,
कहिस्यौ हो २ कह्यौ नहीं पछै जी।
चाह ग्रह्यांनी जे लाज वधारैं,
एहवा हो २ नर थोड़ा अछै जी ॥ ३ ॥

जेहवी प्रीति कुटिल नारी नी,

जेहवी हो २ वादल केरी छाहड़ी जी।

जेहवी मित्राई भेषधारी नी,

तेहवी हो २ कापुरुषां री वाहड़ी जी ॥ ४ ॥

पिण तुम्हे सगुण सापुरिस सवाई,

पाई हो २ वांहड़ली मंइ तुम तणी जी ॥

सफल करउ जिनवर चित लाइ,

मीनति हो २ सी करियइ घणी जी ॥ ५ ॥

शिव सुख फल तुझ पासइ चाहूं,

तुं हीज हो २ सुरतरु मोरियउ जी।

आज वधावउ जाणी मन मे उमाहुं,

हुंइज हो २ प्रेम अंकूरियउ जी ॥ ६ ॥

अधिकउ तउ ओछउ सेवक भापइ नइ भाखइ,

साहिव हो २ तेह सदा खमइ जी।

विनयचन्द्र कवि कहइ तुम्ह पाखइ,

किणसुं हो २ माहरउ मन रमइ जी ॥ ७ ॥

॥ श्री विमलनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—चतुर सुजाणा रे सीता नारी

विमल जिनेसर सुणि अलवेसर, माहरा वचन अनूप।

मनड़ौ विलूधौ रे ताहरै रूप, जेम विलूधौ रे कमल मधूप ॥आं०॥

ताहरा रूप माहे काई मोहनी, मिलवानी थइ चूप ॥ १ ॥ म० ॥

वसीकरण छइ स्युं तुझ पासइ, अथवा मोहनवेलि ॥म०॥
साच कहो ते अंतर खोली, जिम थायइ रंग रेलि ॥ म० ॥ २ ॥
कहिस्यउ नहीं तउ मइ पिण सुणीयउ, लोक तणउ मुख आम ॥
मोहन रूप समौ नहीं कोई, वसीकरण नउ दाम ॥३ म० ॥
एहिज कारण साचउ जाणी, लागौ तुझ सुँ नेह।
ताहरी मूरति चित्त मां चहुटी, खिण न खिसइ नयणेह ॥४ म०॥
पिण फल मुझ नइं न थयउ काइ, अमरप आवै तेह।
फलदायक तौ तेहिज थायउ, जे गिरुआ गुण गेह ॥ ५ म० ॥
वलि विस्मय मन माहें आणी, मंइ ग्रहियउ सन्तोप।
साकर मा कांकर निकसइ ते, साकर नौ नहीं दोप ॥ ६ म० ॥
सुगुण साहिब तूँ सुखनउ दाता, निर्मल बुद्धि निधान।
'विनयचन्द्र' कहइ मुझनइ आपौ, मुगतिपुरी नउ दान ॥ ७ म०॥

॥ श्री अनंतनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—पथीड़ा नी

एक सबल मन मे चिन्ता रहै रे,
न मिलयउ साहिब जीवनप्राण रे।
श्वास तणी परि मुझनइं सांभरै रे,
जिम चकवी केरइ मन भाण रे ॥१ ए० ॥
पिण ते शिवमन्दिर माहें वसै रे,
कागल मात्र न पहुँचे कोउ रे।
प्राणवल्लभ दुर्लभ जिनराजनी रे,
संदेसे ओलग किम होउ रे ॥ २ ए० ॥

देव अवर सुँ कीजइ प्रीतड़ी रे,
खिण इक आवइ मन मा द्वेप रे।
इण वातइं तउ स्वाद नहीं किसउ रे,
चुप करि रहियइ तिणे सुविशेप रे ॥३ ए० ॥
जेह आपणनइं चाहइ दूरथी रे,
धरियइ दिन प्रति तेहनउ ध्यान रे।
आडंवर देखी नवि राचियइ रे,
ए छइ चतुर पुरुष नउ ज्ञान रे ॥ ४ ए० ॥
मुँह मीठा धीठा हीयड़इ तणा रे,
निगुण न पालै किण सुँ नेह रे।
अवगुण ग्रहिवा थायइ आगला रे,
काम पड्यां द्यै लावौ छेह रे ॥ ५ ए० ॥
ते टाली मिलियइ सुगुणा भणी रे,
जे जाणइ सुख दुखनी वात रे।
सुपनइ ही नवि करियइ वेगला रे,
ज्यांहनइ दीठा उल्हसै गात रे ॥ ६ ए० ॥
नाथ अनंत भवे नवि वीसरइ रे,
जे ससनेही सगुण सुरंग रे।
प्रभु सुँ 'विनयचन्द्र' कहै माहरौ रे,
लागौ चोल तणी पर रंग रे ॥ ७ ए० ॥

॥ श्री धर्मनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—सासू काठा हे गोहूँ पीसाय आपण जास्युँ मालवइ, सोनार भणइ

वाल्हा सुणि हो मुझ अरदास, मइ अभिलाप इसउ धर्यो,
मोसुं महिर करउ।
वाल्हा काढ़ूँ हो मननी भास,
जे तुझ आगइं पतगयौं ॥ मो० ॥१॥
वाल्हा तुं तउ हो धरम धुरीण,
पर उपगारी परगड़उ ॥ मो० ॥
वाल्हा मुझनइ हो देखी दीण,
सेवक करिनइ तेवड़उ ॥ मो० ॥२॥
वाल्हा स्युँ कहुँ माहरइ हो मुक्ख,
मंइ पगि २ लही आपदा ॥ मो० ॥
वाल्हा टालउ हो ते सहु दुक्ख,
सुख आपौ अविचल सदा ॥ मो० ॥३॥
वाल्हा पूरवइ हो परपद मांहि,
धरम देशना तूँ दियइ ॥ मो० ॥
वाल्हा सगले हो सुणि रे उमाहि,
मइं न सुणी इक पापियउ ॥ मो० ॥४॥
वाल्हा लागौ हो नहीं उपदेश,
छांट घड़इ जिम चीगटउ ॥ मो० ॥
वाल्हा तेतउ हो न्याय अजेस,
कर्म अरि कहो किम कटइ ॥ मो० ॥५॥

वाल्हा ताहरउ हो नहीं कोई दोष,
सोस किसउ कीजइ हिवइ ॥ मो० ॥
वाल्हा वलि म्यउ कीजइ हो रोष,
आतम कृत कर्म अनुभवइ ॥ मो० ॥६॥
वाल्हा पिण तुं हो सकज सदीव,
धर्मनाथ जिन पनरमउ ॥ मो० ॥
वाल्हा एहिज वात मइ जीव,
'विनयचन्द्र' ना दुख गमउ ॥ मो० ॥७॥

॥ श्री शान्तिनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—विछियानी

हारे लाल शान्ति जिनेश्वर साभलउ,
माहरइ मन आवइ ख्याल रे लाल।
हुँ तुझ चरणे आवियउ, तुँ न करइ केम निहाल रे लाल ॥१॥
माहरउ मन तुझ मइं वसि रह्यउ ॥ आंकणी ॥
जिम गोपी मन गोविंद रे लाल, गौरी मन शंकर वसइ।
वलि जेम कुमुदिनी चंद रे लाल ॥ २ मा० ॥
वात कहीजइ जेहनइ, जे मन नउ हुइ थिर थोभ रे लाल।
जिण तिण आगलि भापतां, वाल्हेसर न चढउ शोभ रे लाल ॥३॥
तिण कारणि मइं माहरी, सहु वात कही तजि लाज रे लाल।
तुँ मुखथी वोलइ नहीं,
किम सरिस्यइ मन काज रे लाल ॥४ मा० ॥

हांरे लाला तूँ रसियउ वाता तणौ,
सुणिनै नवि द्यै को जवाब रे लाल।
मन मिलीया विन प्रीतड़ी,
कहो नइ किम चढियइ आव रे लाल॥ ५ मा० ॥
हांरे लाल निज फल तरुवर नवि भखइ,
सरवर न पियइ जल जेम रे लाल।
पर उपगारइं थाय ते, तुं पिण जिनजी हुइ तेम रे लाल ॥६ मा०॥
घणुं २ कहिये किसुँ, करिजे मुझ आप समान रे लाल।
रयणि दिवस ताहरउ धरइ,
कवि 'विनयचन्द्र' मन ध्यान रे लाल ॥७ मा०॥

॥ श्री कुंथुनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—ईडर आंबा आमली रे

वहु दिवसा थी पामियौ रे, रतन अमोलख आज।
जतने करि हुँ राखस्युँ रे, जगवल्लभ जिनराज ॥१॥
मोरइ मन जागयउ राग अथाग, मइं तउ पाम्यउ वारू लाग।
माहरउ छइपिण मोटउ भाग, करस्युं भवसागर त्याग ॥आंकणी॥
अणमिलिया हुँ जाणतउ रे, जिनवर केहवा होय।
मिलियां जे सुख उपनउ रे, मन जाणइ छइ मोय ॥ २ मो० ॥
मइं साहिब ना गुण लह्या रे, आणो पूरण राग।
कोइल आंवा गुण लहै रे, पिण स्यु जाणै काग ॥ ३ मो० ॥
जे वेधक सहु वातना रे, गुण रस जाणइ खास।
मूरख पशु जाणइ नहीं रे, सेलड़ी कइव मिठास ॥४ मो० ॥

प्रभुनी मुद्रा देखिनइ रे, मुझनइ थइ रे निरान्ति।
हिव सेवा करिवा तणी रे, मनडा मइ छइ खान्ति ॥ ५ मो० ॥
नेह अकृत्रिम मइं कियउ रे, कदे न विहडइ तेह।
दिन २ अधिकउ उलटइ रे, जिम आषाढ़ो मेह ॥ ६ मो० ॥
एक घड़ी पिण जेहनइ रे, वीसार्यो नवि जाय।
'विनयचन्द्र' कहइ प्रणमियइ रे, कुन्थु जिनेश्वर पाय ॥७ मो०॥

॥ श्री अरनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—मोतीनी

तुझ गुण पंकति वाड़ी फूली,
मुझ मन भमर रह्यउ तिहां भूली।
साहिबा काइ मउज करौ नइ,
साहिबा काइ मउज करउ ॥ आंकणी ॥
मउज करउ काई अंग सुहाता,
सुणि सुणि नै त्रिगताली वार्ता ॥१॥सा०॥
तुझ पद कज केतकी मइ पाई,
तसु आवै खुशबूह सहाई ॥ सा० ॥
मोहन भाव मालती महकै,
गरुआनी संगति करि गहकइ ॥२॥सा०॥
सुख सहस्रदल कमल विकास्यो,
समतारस मकरंदइ वास्यउ ॥ सा० ॥
चित्त उदार ते चंपक जाणौ,
दिल गंभीर गुलाब वखाणौ ॥सा०॥३॥

कुंद अनै मचकुंद विलासी,
कलि कीरति उज्ज्वल प्रतिभासी ।।सा०।।
पाडल प्रीति प्रतीत प्रबोधइ,
मरुक दमण सज्जन गुण सोधइ ।।सा०।।४।।
केवड़ानी परि तुं उपगारी,
फूल अमूल गुणे करि धारी ।।सा०।।
फल सहकार सकारइं फावै,
द्राखते द्रूपनी रेखनइ दावै ।।सा०।।५।।
वलि संतोष सदाफल सदली,
करुणा रूप सुकोमल कदली ।।सा०।।
नारंगी ते प्रभु निरागइं,
जंभीरी युगते करि जागइं ।।सा०।।६।।
फूल अनइ फल इत्यादिक छै,
प्रभु ना गुण इण मांहि अधिक छइ ।।सा०।।
नहीं शिव पोइणि ते तुझ आगइ,
श्री अरनाथ विनयचंद मांगइ ।।सा०।।७।।

।। श्री मल्लिजिन स्तवनम् ।।

ढाल—राजिमती राणी इण परि बोलइ

मल्लि जिनेसर तुं परमेसर,
तुझ नइं सुरनर चर्चित केसर ।।म०।।
तुझ सरिखा ते पुण्ये लहिय,
देखी देखी मन गह गहीयउ ।।म०।।१।।

तुं सद्भाव तणौ छइ धारक,
दुष्ट दुरासय नौ निर्वारक ॥म०॥
तिण कारण माहरौ मन लागौ,
भेद अपूरव सहजइ भागउ ॥म०॥२॥
देव अवर सुं जे रहइ राता,
तेहनइ तउ छइ परम असाता ॥ म० ॥
इम जाणी मुझ मन ऊमाहइ,
तुझ मुख कमल नरपिवा चाहइ ॥म०॥३॥
तु छइ माहरह सगुण सनेही,
तउ करो पडवज कीजै केही ॥ म० ॥
पिण तुँ मुगति महल मा वसियउ,
संपूरण समता गुण रसियउ ॥म०॥४॥
अवसर आयइ नवि संभारइ,
केम भवोदधि हेलइ वारइ ॥ म० ॥
हिव हुं निश्चल थइ नइ बैठउ,
अनुभव रस मन माहे पइठउ ॥म०॥५॥
जे खल नइ गुल सरिखा जाणइ,
ते स्युं नवलौ नेह पिछाणइ ॥ म० ॥
उण हेतइ माहरउ मन फिरियउ,
जाणं पवन हिलोल्यउ दरियउ ॥म०॥६॥
साची भगति कीधी मइं ताहरी,
तउ मन इच्छा पूरउ माहरी ॥ म० ॥
विनयचन्द्र कहे ते गुणवंता,
जे टालै मनड़ानी चिन्ता ॥म०॥७॥

।। श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवनम् ।।

ढाल—ओलूंनी

मुनिसुव्रत मन माहरौ जी, लागौ तुम लगि थेट ।
पिण तुँ मींट न मेलवै जी, ए व्रत दुष्कर नेट ।।१।।
जिनेश्वर वणस्यै नहीं इम वात ।। आकणी ।।
मुझ स्वभाव छै तामसी जी, रहिन सकइ खिण मात ।।२।।जि०।।
हुँ रागी पिण तुँ अछइ जी, नीरागी निरधार ।
मावै नहीं इक म्यान मंइ जी तीखी दोइ तरवार ।।जि०।।३।।
जाणपणउ मइ जाणीयउ जी, जिनवर ताहरौ आज ।
तक उपर आव्यउ हुतो जी, तैं नवि राखी लाज ।।४।।जि०।।
जे लोभी तुझ सरिखा जी, वंछित नापइ रे अन्त ।
मुझ सरिखा जे लालची जी, लीधा विण न रहंत ।।५।।जि०।।
एह अणख छै आपणौजी, सदा न चलस्यै रे एम ।
करि मुझ नइ राजी हिवै जी, जिम वाधइ वहु प्रेम ।।६।।जि०।।
तुं मुझ नइ नवि लेखवइ जी, देखी सेवक वृन्द ।
तारा तेज करै नहीं जी, विनयचन्द्र विण चन्द्र ।।७।।जि०।।

।। श्री नमिनाथ स्तवनम् ।।

ढाल—भाभाजी हो डुंगरिया हरिया हुवा

साहिबा जी हो तुं नमि जिनवर जगधणी,
सरणागत माधार म्हांरा साहिबा जी ।
पुण्य सयोगइ ताहरउ,
मैं दीठउ दीदार म्हां सा० ।।१।।

चतुरपणानी ए छइ चातुरी,

मिलीयइ तुझ नइ थाय म्हां० ।

सा० तो तुं चित चिन्ता हरै,

बादल नइ जिम वाय ॥ म्हां० ॥२॥ च० ॥

सा० प्रीति हुवइ जिहा प्रेम नी,

उपजइ तिहाँ परतीत म्हा० ।

करि करि नइ सुं कीजियइ,

प्रेम विहूणी प्रीति म्हा० ॥ ३ ॥ च० ॥

देव अवर मीठा मुखे,

हृदय कुटिल असमान म्हा० ।

जांणि पयोमुख संग्रह्यां,

ते विषकुम्भ समान म्हां० ॥ ४ ॥ च० ॥

सा० इम जाणी मन ओसर्यो,

पाछौ त्याथी नेट म्हां० ।

फेटि निगुण नी टलि गई,

थई सुगुण नी भेट म्हा० ॥ ५ ॥ च० ॥

इतला दिन मन मा हतउ,

उदासीनता भाव म्हा० ।

ताहरइ मिलिवइ ते गयउ,

तत्खिण तजि निज दाव म्हा० ॥६॥ च० ॥

मंइ तुझ सेवा आदरी,

होइ रहउ तुझ दास म्हा० ।

जिण सुरतरु फल चाखियउ,
कुफल गमइ नहीं तोस म्हां० ॥ ७ ॥ च० ॥
स्युं कहिरावइ मो भणी,
तारि तारि करतार म्हां० ।
विनयचन्द्र नी वीनति,
हित धरी नइ अवधार । म्हा० ॥८॥ च० ॥

॥ श्री नेमिनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—ऊभी राजुलदे राणी अरज करै छै

थाहरी तौ मूरति जिनवर राजै छइ नीकी,
शिवसुन्दरि सिर टीकी हो ।
राणी शिवादेवीजी रा जाया
नेमजी अरज सुणीजै ।
अरज सुणीजै कांई करुणा कीजै,
म्हानइ मुजरौ दीजै हो ॥१॥रा०॥
ते दिन वाल्हां मुझनें कउयइ आस्यै,
तुम थी मेलौ थास्यइ हो । रा० ।
अंतर तुम्हारउ माहरउ दूरउ व्रजस्यउ,
अंगउ सुख ऊपजस्यउ हो ॥२॥रा०॥
हिवणा तउ तुमनइ हियड़ा मांहे धारूँ,
इण भातइ दिल ठारूँ हो । रा० ।
आखर थे पिण समझणदार सनेहा,
नवि दाखविस्यौ छेहा हो ॥३॥रा०॥

जे तुम सेती प्रेम प्रयासइ जी विलगा,
ते किम टलस्यै अलगा हो। रा०।
प्रीति लगास्यइ ते तउ जिम रंग अकीकी,
पड़ै नहीं जे फीकी हो ॥४॥रा०॥
प्राणपियारा साहिब थे छउ जी म्हारै
मुझ नइ छइ तुम्ह सारै हो। रा०।
इम जाणी नइं प्रत्युपकार करंता,
राखौ छौ सी चिन्ता हो ॥५॥रा०॥
स्युं कहुं कीरति राज तुम्हारी,
तुमे छउ वाल ब्रह्मचारी हो। रा०।
राजुल नारी ते विरहागर क्यारी,
पोतानी कर तारी हो ।रा० ॥६॥
कहियउ जी म्हारौ अलवेसर अवधारउ,
हुं छूं दास तुम्हारौ हो। रा०।
विनयचन्द्र प्रभु तुमे वरदाई,
मउज सवाई थउ काइ हो ।रा०॥७॥

॥ श्री पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—इण रिति मोनइ पासजी साभरइ

जिनवर जलधर उलट्यौ सखि, वयणे वरसै मेह।
जेहनइं आगमनइ करी सखि, ऊपज्यौ प्रेम अछेह रे॥
नर नारी वाध्यउ नेह रे, ठाढी थउ सहुनी देह रे।
पसर्यौ चित भुउ मउ त्रेह रे, उपस्यउ खल कंदल खेह रे ॥१॥

एहवा म्हारे पास जी मन वसइ ॥ आंकणी ॥
वाणी ते हिज जिण सजी सखि, गुहिर घटा घन घोर।
ज्योति झबूकें बीजली सखि, ए आड़म्बर कोइ और रे।
प्रमुदित भविजन मोर रे, पिण नहीं किहा कुमति चोर रे।
कंदर्प तणौ नहीं जोर रे, अन्धकार न किण ही कोर रे ॥२॥ए०॥

महिर करइ सहु उपरइ सखि, लहिर पवन नी तेह।
सुर असुरादिक आवतां सखि, पीली थइ दिशि जेह रे ॥
जाणे कुटज कुसुम रज रेह रे, जिहा धर्म ध्वजा गुण गेह रे।
ते तउ इन्द्र धनुष वणेह रे, अभिनव कोई पावस एह रे ॥
इम निरखै सहु नयणेह रे ॥३॥ए०॥

चतुर पुरुष चातक तणी सखि, मिट गई तिरस तुरन्त।
हरिहर रूप नक्षत्र नउ सखि, नाठउ तेज नितन्त रे ॥
थयउ दुरित जवासक अन्तरे, मुनिवर मंडुक हरखंत रे।
जिहाँ विजयमान भगवंत रे, विकशित त्रय भुवन वनत रे॥४॥ए०॥

सुर मधुकर आलंबिया सखि, पदि कदिव अरविन्द।
विरही जेह कुदर्शनी सखि, पावइ दुख नउ दन्द रे ॥
युद्ध थी विरम्या राजिन्द रे, हरिया थया सुगुण गिरिंद रे।
विस्तृति मति सरति अमंद रे, पल्लवित वेलि सुख कन्द रे ॥
फेड्या सगलाई फंद रे ॥५॥ए०॥

झिर मिर झिर मिर झर करइ सखि, नावइ किम ही थाह।
प्रतिबोधित जन जेहवा सखि, ल्यइ वगि जिण मां लाह रे ॥

हंसा सर साभरियाह रे, ते जन धरै मुगतिनी चाह रे।
तिहां दीसइ रतन घणाहरे, जाणै नवल ममोला वाह रे ॥६॥ ए०
जीवदया जिहा जाणियइ सखि नीली हरी भरपूर।
वीज तणइ रूपइ भलौ सखि, प्रगट्यउ पुण्य अंकूर रे॥
दुख दोहग गया सहु दूर रे, इम वर्षा भावउ भूरि रे।
प्रभुना गुण प्रवल पडूर रे, कहै 'विनयचन्द्र' ससनूरि रे ॥७॥ ए०

॥ श्री महावीर जिनस्तवनम् ॥

ढाल—हाडानी

मनमोहन महावीर रे त्रिसला रा जाया,
ताहरा गुण गाया, मनडा में ध्याया।
तौही रे ताहरा खातर मै नहीं रे,
इवडी सी तकसीर रे त्रि० आज्ञाकारी रे हुं सेवक सही रे ॥१॥
तुझसुं पूरवइ जेह रे,
त्रि० रंग लागौ रे चोल मजीठ ज्युं रे।
दिन दिन वाधइ तेह रे,
त्रि० भला रे व्यवहारी केरी पीठ ज्युं रे ॥२॥
निशिदिन मंड कर जोड़ रे,
त्रि० ओलग कीधी स्वामी ताहरी रे।
भव संकट थी छोडि रे,
त्रि० अरज मानौ रे एहिज माहरी रे ॥३॥
मह आलंबी तुझ बांहि रे.
त्रि० कहो रे निरासी तउ किम जाइयइ रे।

खीणउ हुवइ घर मांहि रे,
त्रि० लूखौ रे तौ स्या माटे खाइयइ रे ॥४॥
तार्या तें सुरनर कोड़ि रे,
त्रि० पोते तरी रे शिव सुख अनुभवइ रे।
मुझमाँ केही खोड़ रे,
त्रि० तारै नहीं रे क्यों मुझनइ हिवइ रे ॥५॥
ओछां तणउ सनेह रे,
त्रि० जाणै रे पर्वत केरा वाहला रे।
वहतां वहै एक रेह रे,
त्रि० पछइ विछड़इ रे ज्युं तरु डाहलारे ॥६॥
तिण परि नेहनी रीति रे,
त्रि० नहीं छै रे चरम जिनेसर आपणी रे।
'विनयचन्द्र' प्रभु नीति रे,
त्रि० राखउ स्वामी नइ सेवक तणी रे ॥७॥

॥ कलश ॥

ढाल—शांति जिन भामणइ जाऊँ

इण परि मंइ चौवीसी कीधी, सद्भावे करि सीधोजी।
कुमति निकेतन आगल दीधी, सुमति सुधा बहु पीधीजी ॥१॥ इ०
इण में भेद तणी छइ हड़ता, गुण इक इक थी चढ़ताजी।
सज्जन पंडित थास्यइ पढ़ता, दुर्जन रहस्यइ कुढ़ताजी ॥२॥ इ०
पूरण ज्ञान दशा मन आणी, वेधक वाणी वखाणीजी।
विबुध भणी अवबोध समाणी, मूरख मति मूंझाणीजी ॥३॥ इ०

वोध वीज निर्मल मुझ हुऔ, दियौ दुरति नइ दूऔजी।
स्तवना नौ मारग छइ जूअउ, जाणै ते कोई गिरुऔजी ॥४॥ इ०
संवत सत्तर पंचावन वरषइ, विजयदशमी दिन हरषइजी।
राजनगर मां निज उतकरषइ, ए रची भक्ति अमरषइजी ॥५॥ इ०
श्रीखरतरगण सुगुण विराजइ, अंवर उपमा छाजइजी।
तिहा जिनचन्द्रसूरीश्वर गाजइ, गच्छपतिचन्द्र दिवाजइजी ॥६॥
पाठक हर्षनिधान सवाई, ज्ञानतिलक सुखदाईजी।
विनयचन्द्र तसु प्रतिभा पाई, ए चौवीसी गाईजी ॥७॥ इ०

इति चउवीसी समाप्ता।

विहरमान जिनवीसी

॥ श्री सीमन्धर जिन स्तवन ॥

ढाल—रसियानी

श्री सीमंधर सुन्दर साहिवा, मन्दरगिरि समधीर सलूणा।
श्री श्रेयांस नरेश्वर नन्दन, मुझ हीयड़ानु रे हीर सलूणा ॥१॥
सोवन वरणइ रे दीपइ देहड़ी,
सुमनस सेवित पाय सलूणा।
भद्रशाल[1] लक्षण करि राजतइ,
भेट्या भव दुःख जाय सलूणा ॥२॥
चन्द्र सूरज ग्रह गण सहु प्रभु तणइ,
चरण सरण करइ नित्य सलूणा।
जाणे रे जीत्या आप प्रभा भरइ,
करइ प्रदक्षिणा कृत्य सलूणा ॥३॥
मध्य विदेह विजय पुष्कलावती,
नयरी पुण्डरिकिणी सार सलूणा।
तिहां विचरइ भविजन मन मोहता,
सत्यकी मातु मल्हार सलूणा ॥४॥
मेरु महीधर परि अविचल रहइ,
मुझ मन एहिज रे देव सलूणा।
ज्ञानतिलक गुरु पदकज भमरलइ,
'विनयचन्द्र' करइ सेव सलूणा ॥५॥

॥ श्री युगमंधर जिनस्तवन ॥

ढाल—नाटकियानी

वीजा जिनवर वंदियइ, युगमंधर स्वामी लो अहो युग० ।
मइं तउ सेवा जेहनी, वहु पुण्ये पामी लो अहो वहु० ॥
अध्यातम भावइ रह्यौ, मुझ अन्तरजामी लो अहो मुझ० ।
ललि ललि लागु पाउले, युगतइ शिरनामी लो अहो युगते० ॥१॥
शान्त थई अंतर गुणे, दुसमन सहु दमिया लो अहो दु० ।
दान्त पणइ अविकार थी, विपयादिक वमिया लो अहो वि० ॥
निर्धन पणि परमेश्वरु, त्रिभुवन जन नमिया लो अहो त्रि० ।
ए अचरिज प्रभु गुण तणउ, शिव सुख मन रमिया लो अहो शि०
रूप अधिक रलियामणो सो वन वन काया लो अहो ओ० ।
शत्रु मित्र समता धरइ, सम रंक नइ राया लो अहो स० ॥
राग न रीस न जेहनइ,
मद मदन न माया लो अहो म० ।
सोहग सुन्दर ना गुणइ,
भविया मन भाया लो अहो भ० ॥३॥
सज्जन जन मन रींझवइ,
नीराग सभावइ लो अहो नी० ।
विपय विभाव थी वेगलउ,
सहु विपय दिखावउ लो अहो स० ॥
सकल गुणाश्रय निज भज्यउ,
निर्गुणता ल्यावइ लो अहो नि० ॥

सकल क्रिया गुण दाखवी,
अक्रिय रुचि पावइ लो अहो अ० ॥४॥
सुदृढ़ राज कुल दिनमणी,
जसु माय सुतारा लो अहो ज० ।
गज लंछन अति गहगहइ,
सहुनइ सुखकारा लो अहो स० ॥
वप्र विजय मा विचरता,
ज्ञानतिलक उदारा लो अहो ज्ञा० ॥
विनयचन्द्र विनयइं कहइ,
जिन जगत आधारा लो अहो जि० ॥५॥

॥ श्री बाहुजिन स्तवन ॥

ढाल—योगिनानी

बाहु जिनेश्वर वीनवुं रे,
बांह दिउ मुझ स्वामि हो जिनजी बा० ।
भवसायर तरवा भणी रे,
तारक ताहरुं नाम हो जिनजी बा० ॥१॥
जिणंदराय दर्शन दीजो आज,
जिणंदराय जिम सीझइ मुझ काज । आंकणी ॥
कल्पतरु कलि मां अछइ रे,
वंछित देवा काज हो जिनजी वं० ।
तुम बांहि अवलंबता रे,
लहियइ भव जल पाज हो जिनजी ल० ॥२॥जि०॥

पंच कल्पतरु अवतर्या रे,

अगुलि मिसि तुम्ह वांहि हो जिनजी अ० ।

तुम्ह दानइ किंकर थका रे,

सेवइ तेह उच्छाहि हो जिनजी से० ॥३॥ जि०॥

सुक्ख अतींद्रिय द्यौ तुम्हे रे,

ते गुण नहीं ते माहि हो जिनजी ते० ।

तिण हेतउ परगट नहीं रे,

साम्प्रत मनुजन माहि हो जिनजी सा०॥४॥

सुग्रीव कुल मलयाचलइं रे,

चन्दन विजयानन्द हो जिनजी चं० ।

विनयचन्द्र वंदइ सदा रे,

त्रीजा श्रीजिनचन्द्र हो जिनजी ॥५॥॥जि०॥

॥ श्रीसुबाहु जिन स्तवनम् ॥

देशी छोंडीनी

श्री सुबाहु जिनवर नइं नमियइं, उमाहउं बहु आणी ।
जस प्रभुता नउ पार न लहियइ, किम कहि सकियइ वाणी ॥१॥
प्राणी प्रभु लीधु चित्त ताणी, प्रभु मूरति उपशमनी खाणी,
मुझ मन ए ठकुराणी रे प्रा० ॥
ग्यानी जाणइ पिण न कहायइ, सर्व थी जस गुण खाणी ।
परिमलता गुणनी अति निर्मल, जिम गंगा नइ पाणी रे॥२॥प्रा०॥

रंगाणी मुझ मतिए रंगइ, समकित नी सहिनाणी।
कुमति कमलिनी लवन कृपाणी, दुख तिल पीलण घाणी रे ॥३॥
शक्ति अपूर्व सहज ठहराणी, दुर्गति दूर हराणी।
वाणी तेहिज वेझुं वेधइ, कीरति तास गवाणी रे ॥४॥ प्रा० ॥
निसढ़ नरेश्वर सुत शुभनाणी, माता भू नन्दा जाणी।
विनयचन्द्र कवि ए कही वाणी, सुणतां अमी समाणी रे ॥प्रा०॥

॥ श्रीसुजात जिन स्तवनम् ॥

ढाल—झाकरिया मुनिवरनी देशी

श्री सुजात जिन पंचमा जी, पंचम गति दातार।
पंचाश्रव गज भेदिवा जी, पंचानन अनुकार ॥ १ ॥
पंचम ज्ञान प्रपंच थी जी, धर्मादिक पणि द्रव्य।
जेह त्रिकाल थकी कहै जी, सर्दहै मनि तेह भव्य ॥ २ ॥
पंच बाण नइ टालिवा जी, पंच सुखोपम जेह।
विरहित पंच शरीर थी जी, अकल अलख गुण गेह ॥ ३ ॥
पंचाचार विचार सुं जी, दाखइ जे व्यवहार।
कल्पातीत पणइ रहइ जी, चरित अनेक प्रकार ॥ ४ ॥
देवसेन नृप नन्दनो जी, देवसेना जसु मात।
विनयचन्द्र सोहइ भलो जी, रवि लंछन विख्यात ॥ ५ ॥

।। श्रीस्वयंप्रभ जिन स्तवनम् ।।

ढाल—लाछलदेवी मल्हार

श्री स्वयंप्रभ, अतिशय रत्न निधान,
आज हो हेजइ रे हेजालू हियडं हरखियइजी ।।१।।
जिम चकवा दिनकार मोरा नइ जलधार,
आज हो नेहइं रे गुण गेही नयणे निरखियइजी ।।२।।
जिहां विचरै प्रभु एह, तिहा होइ सुख अछेह,
आज हो पुण्यें रे परमेश्वर प्रेमइं परखियइजी ।।३।।
दुख महोदधि पाज, भव जल तारण जहाज,
आज हो रंगइ रे रलियालउ साहिब सेवियइ जी ।।४।।
मित्रभूति कुलचन्द, सुमंगला नो नन्द,
आज हो वदइ रे विनयचन्द्र हित आणी हियइ जी ।।५।।

।। श्री ऋषभानन जिन स्तवनम् ।।

ढाल—आवो आवो जी मेहलें आवतइ

ऋषभानन जिनवर वंदी, हुँतो थयो रे अधिक आनन्दी ।
करि कर्म तणी गति मंदी, आतम सु दुर्मति निंदी ।
आवौ आवौ साहिब सुखकन्दा, मुझ नयन चकोर नइ चन्दा ।
आवौ आवौ जी सेवक संभारें ।।आंकणी।।
संभारइ तेह सहेजा, स्यु संभारउ रे निहेजा ।।१ आ० ।।
जोड्यो जे तुम सुं नेह, जाणे पर्वत केरी रेह ।।आ०।।
जमवारउ जायउ नहीं तेह जिम आई धरायें मेह ।।२ आ०।।

लीणौ तुम पद अरविन्दइ, मुझ मन मधुकर आनन्दइ ॥आ०॥
न रहइ ते दूर लगार, शुक नन्द यथा सहकार ॥३ आ०॥
तुम्ह विन हुं अवरन चाहुं, अविचल निज भावइं आराहुं ॥आ०
निरालंबन ध्यानइ ध्याउँ, क्षीरनी परइं मिलि जाउँ ॥४ आ०॥
वीरसेना नन्द विराजइ, कीर्तिराज कुलइ निज छाजै ॥आ०॥
सिंह लंछन दुख गज भाजइ, कवि 'विनयचंद्र' नइ निवाजइ ॥५॥

॥ श्री अनन्तवीर्य जिनस्तवनम् ॥

राग—चन्द्राउलानी

अनंतवीर्य जिन आठमउ रे, जीत्या कर्म कषाय।
नाम ध्यान थी जेहनइ रे, अष्ट महा सिद्धि थाय॥
अष्ट महा सिद्धि जेहनइ नामइ, सहज सौभाग्य सुयशता पामइ
जे इच्छित होइ सुख नइ कामइ,
तेह लहइ नित ठामो ठामइं जी ॥१॥ विहरमानजी रे।
ईति उपद्रव सवि टलइ रे, जिहां विचरइ जिनराज।
भीति रीति पसरइ नहीं रे, जाणि गंध गजराज॥
जाणि गंध गजराज सोहावइ, सुभग दान ना भर वरसावइ।
कपट कोट दृढ़वट्ट गमावइ,
नित नयवाद घंटा रणकावइजी ॥२ विह०॥
अतिशय कमला हाथिणी रे, परिवरियइ निशदीश।
सहजानन्द नन्दन वनइ रे, केलि करइ सुजगीश॥
केलि करइ परमारथ जाणी, समता तटिनी सजल वखाणी।

आगम सूँडा दण्ड प्रमाणी,

परमत गज संगति नवि आणी जी ॥३ विह०॥

शुक्ल ध्यान उज्वल तनु रे, क्षायिक दर्शन ज्ञान ।

कुँभस्थल जसु दीपता रे, महिमा मेरु समान ॥

मेरु समान उत्तुँग ए देव, भविक कोड़ि जसु सारइ सेव ।

अचिर अभंग विचित्र कलायइ,

तउ तस चरण सरोज मिलायइजी ॥४॥ विह०॥

मेघ नृपति कुल सुर पथइं रे, भासुर भानु समान ।

मंगलावती माता तणउ रे, नन्दन गुणह निधान ॥

गुण निधान गर्जित गज लंछन, वर्ण अनोपम अभिनव कंचन ।

भविक लोक नइं नयणानन्दन,

'विनयचन्द्र' करइ नित नित वंदनजी ॥५ विह०॥

॥ श्री सूरप्रभ जिन स्तवनम् ॥

ढाल—माहरी मही रे गमाणी

सूरप्रभु प्रभुता तउं पामी

तोरा चरण नमुँ शिर नामी रे । मोरा अतरजामी ॥

देव अवर दीठा मंइ स्वामी,

पिण ते क्रोधी कामी रे ॥१॥ मो०॥

तुझ मुद्रानउ जोडउ नावइ,

तउ सेवक दिल किम आवइ रे । मो० ।

हॅस सोभ वग जाति न पावइ,
यद्यपि धवल सभावइं रे ॥२॥ मो० ॥
महिमा मोटिम तणी वड़ाई,
किम लहइ ते सुघड़ाइ रे। मो०।
तरु भावइ तउ छइ इक ताई,
पिण अंब नींब अधिकाई रे ॥३॥ मो०॥
पंखी जातइं एकज हूआ, पिण काग कोइल ते जूआ रे। मो०।
देव अवर तुम्ह थी सहु नीचा, तुम्हे तउ गुणाधिक ऊँचा रे ॥४॥
चन्द्र लंछन जिन नयणानन्दा, 'विनयचन्द्र' तुम्ह वन्दा रे॥५ मो०

॥ श्री विशाल जिनस्तवनम् ॥

ढाल—थारे महिला ऊपरि मेह झरोखे बीजली हो लाल झरोखइ बीजली
श्री सुविशाल जिणद, कृपा हिव कीजिए हो लाल कृपा०।
बाह ग्रह्यां नइ छेह, कहो किम दीजियइ हो लाल कहो० ॥
सहज सलूणा साहिब, नेह निवाहियउ हो लाल नेह०।
मुझ परि कूरम दृष्टि, तुम्हारी चाहियउ हो लाल तु० ॥१॥
चातक नइ मन मेह, विना को नवि गमइ हो लाल वि०
हंस सरोवर छोड़ि कि, छीलर नवि रमइ हो लाल कि छी०
गंगा जल झील्या ते, द्रह जल नादरैं हो लाल कि द्रह०
मोह्या मालती फूल ते, आउल स्यु करइ हो लाल कि आ०॥२॥
भवि भवि तुं मुझ स्वामी. सेवक हूँ ताहरो हो लाल कि से०।
जन्म कृतारथ आज, सफल दिन माहरो हो लाल स०॥

देव अवरनी सेव, कवण चित मा धरइ हो लाल क०
प्रभु तुमचउ उपगार, कदापि न वीसरउ हो लाल क० ॥३॥
ओलगडी अविनीत, तणी पिण आपणी हो लाल त०
जाणि करौ सुप्रमाण, वड़ाई तुम तणी हो लाल व०
सेवक आप समान, करौ जो जग धणी हो लाल क०
तउ त्रिभुवन मा वाधइ, कीरति अति घणी हो लाल की ॥४॥
नाग नृपति शुभ वश, गगन तर दिनमणी हो लाल ग०
भद्रा राणी नन्द, कंचन वरणइ गुणी हो लाल क०
लंछन भासत भानु, कला सुन्दर वणी हो लाल क०
ज्ञानतिलक प्रभु भक्ति, 'विनयचन्द्रइ' भणी हो लाल वि० ॥५॥

॥ श्री वज्रधर जिनस्तवनम् ॥

ढाल—हॅजा मारू हो लाल आवो गोरी रा वाल्हा

रंग रंगीला हो लाल, वज्रधर जिणचंदा,
नयन रसीला हो लाल वंदइ वज्रधर वृन्दा।
अंग असीला हो लाल, तुझ नउ दीठा आणंदा,
शुगति वसीला हो लाल, समता सुरतरु कन्दा ॥१॥
हर्ष हठीला हो लाल, सज्जन सुखकारी,
छयल छवीला हो लाल, मूरति मोहनगारी।
जगत नगीना हो लाल, आयो हुँ तुझ शरणइ,
जिम जल मीना हो लाल, लीणउ तिम तुझ चरणइ ॥२॥

हँस सोभ वग जाति न पावइ,
यद्यपि धवल सभावइ' रे ॥२॥ मो० ॥
महिमा मोटिम तणी वडाई,
किम लहइ ते सुघड़ाइ रे। मो०।
तरु भावइ तउ छइ इक ताई,
पिण अंब नींव अधिकाई रे ॥३॥ मो०॥
पंखी जातइ' एकज हूआ, पिण काग कोइल ते जूआ रे। मो०।
देव अवर तुम्ह थी सहु नीचा, तुम्हे तउ गुणाधिक ऊँचा रे ॥४॥
चन्द्र लंछन जिन नयणानन्दा, 'विनयचन्द्र' तुम्ह वन्दा रे ॥५ मो०

॥ श्री विशाल जिनस्तवनम् ॥

ढाल—थारे महिला ऊपरि मेह झरोखे वीजली हो लाल झरोखइ वीजली

श्री सुविशाल जिणंद, कृपा हिव कीजिए हो लाल कृपा० ।
वाह ग्रह्यां नउ छेह, कहो किम दीजियइ हो लाल कहो० ॥
सहज सलूणा साहिब, नेह निवाहियइ हो लाल नेह० ।
मुझ परि करम दृष्टि, तुम्हारी चाहियइ हो लाल तु० ॥१॥
चातक नउ मन मेह, विना को नवि गमइ हो लाल वि०
हंस सरोवर छोड़ि कि, छीलर नवि रमइ हो लाल कि छी०
गंगा जल झील्या ते, द्रह जल नादरै हो लाल कि द्रह०
मोह्या मालती फूल ते, आउल स्यु करइ हो लाल कि आ०॥२॥
भवि भवि तु मुझ स्वामी, सेवक हूँ ताहरो हो लाल कि से० ।
जन्म कृतारथ आज, सफल दिन माहरो हो लाल म० ॥

देव अवरनी सेव, कवण चित मा धरउ हो लाल क०
प्रभु तुमचउ उपगार, कदापि न वीसरउ हो लाल क० ॥३॥
ओलगडी अविनीत, तणी पिण आपणी हो लाल त०
जाणि करौ सुप्रमाण, वडाई तुम तणी हो लाल व०
सेवक आप समान, करौ जो जग धणी हो लाल क०
तउ त्रिभुवन मा वाधउ, कीरति अति घणी हो लाल की ॥४॥
नाग नृपति शुभ वश, गगन तर दिनमणी हो लाल ग०
भद्रा राणी नन्द, कंचन वरणइ गुणी हो लाल क०
लंछन भासत भानु, कला सुन्दर वणी हो लाल क०
ज्ञानतिलक प्रभु भक्ति, 'विनयचन्द्रइ' भणी हो लाल वि० ॥५॥

॥ श्री वज्रधर जिनस्तवनम् ॥

ढाल—हँजा मारू हो लाल आवो गोरी रा वाल्हा

रंग रंगीला हो लाल, वज्रधर जिणचंदा,
नयन रसीला हो लाल, वंदउ वज्रधर वृन्दा।
अंग असीला हो लाल, तुझ नइ दीठा आणदा,
मुगति वमीला हो लाल, समता सुरतरु कन्दा ॥१॥
हर्ष हठीला हो लाल, सज्जन सुखकारी,
छयल छबीला हो लाल, मूरति मोहनगारी।
जगत नगीना हो लाल, आयो हुँ तुझ शरणइ,
जिम जल मीना हो लाल, लीणउ तिम तुझ चरणइ ॥२॥

प्रेम मइं कीना हो लाल, जिम मालती भमरी,
हेजइ भीना हो लाल तारौ महिर करी।
वहु तपसीना हो लाल, ताहरइ दर्शन पाखइ,
दास अमीना हो लाल, वारइं ? स्युं भाखइ ॥३॥
तुम्हे प्रवीणा हो लाल, समकित रतन दाता,
देखी दीणा हो लाल, पूरो सुख नइ साता।
दुर्जन हीणा हो लाल, ते तउ विमुख करउ,
तुम गुण वीणा हो लाल, सेवक हाथइं धरउ ॥४॥
पद्मरथ नृपति हो लाल, नन्दन गुण निलयो,
मात सरसती हो लाल, विजया कंत जयो।
संख लंछन सोहइ हो लाल, ज्ञानतिलक छाजै,
'विनयचन्द्र' मोहे हो लाल, महिमा महियल गाजै ॥५॥

॥ श्री चन्द्रानन स्तवनम् ॥

ढाल—फाग

चन्द्रानन जिन चंदन शीतल, दरसण नयण विशेष।
वयण सुकोमल सरस सुधारस, सयण हर्पित होइ देख ॥१॥
सोभागी जिनवर सेवियउ हो,
अहो मेरे ललना अद्भुत प्रभु रूप रेख ॥आंकणी॥
विषय कषाय दवानल केरौ, टालइं ताप सजोर।
सहज स्वभाव सुचन्द्रिका हो, उल्लसित भविक चकोर ॥२ सो०॥

मिथ्यामत रज दूर मिटावइ, प्रगटइ सुरुचि सुगंध।
अरुचि परुपता प्रगट न होवइ, करुणा रस श्रवइ सुवंध ॥३ सो०॥
चन्द्रानन आनन उपमानइ, हीणउ खीणउ चंद्र।
शून्य ठाम सेवइ ते अहनिसि, मानु कलंकित मंद ॥४ सो०॥
श्री वाल्मीक नृपति कुल भूपण, पद्मावती नौ नन्द।
वृपभ लंछन कंचन तनु प्रणमइ, प्रमुदित कवि 'विनयचन्द्र' ॥५॥

॥ श्री चन्द्रावाहु जिनस्तवन ॥

ढाल—त्रिभुवन तारण तीरथ पास चिंतामणि रे कि पा०

चन्द्रवाहु जिनराज उमाह धरि घणउ रे। उमाह०।
दास तणा दोय वयण निजर करिनइ सुणउ रे। नि०।
जनम सम्बन्धी वैर विरोध ते उपसमइ रे। वि०।
समवशरण तुम देख पंखी सवला भमइ रे॥ प० ॥१॥
छय ऋतु आवी पाय सेवइ प्रभु तुम तणा रे। से०।
आप आपणी करउ भेट कि पुण्य प्रकर घणा रे कि।
नीप कदम्ब नइ केतकि, जूहि मालती जू रे कि। जू०।
बिउलसिरि वासत कि जातिलता छती रे कि ॥जा० ॥२॥
शतदल कमल विशाल कि करणी केतकी रे। कि क०।
वन्धु जीवना थोक अशोक सुवंधु की रे। अ०।
समपर्ण प्रियंगु सरेमड मोगरा रे। म०।
लाल गुलाल मरल चंपक परिमल धरा रे॥ स० ॥३॥

तिलक केसर कोरंट वकुल पाडल वली रे । व० ।
दमणौ मरुवो कुसुम कली वहु विध मिली रे । क० ।
होइ अनुकूल समीर धरइ नहीं तूलता रे । ध० ।
तौ किम सहृदय लोक धरै प्रतिकूलता रे ॥ ध० ॥४॥
देवानन्दन भूप कुलाबर दिनमणि रे । कु० ।
रेणुका माता नन्द लीलावती नउ धणी रे । ली० ।
कमल लंछन भगवान 'विनयचन्द्रइ' थुण्यो । वि० ।
तुम गुण गण नौ पार, कुंणइ ही नवि गुण्यो रे ॥कुं० ॥५॥

॥ श्री भुजंग जिनस्तवन ॥

ढाल—कूरखडानी

भुजंग देव भावइ नमुँ, भगति युगति मन आणि ॥सलूणेसाजना
भुजंग नाथ वंदित सदा, सुरनर नायक जाणि । स० ॥१॥
हुँ रागी पण तुँ सही, निपट निरागी लखाय । स० ।
ए एकंगी प्रीतड़ी, लोका माहि लजाय । स० ॥२॥
आश्रित जन नइं मूकतां, प्रभु अति हासी थाय । स० ।
शंकर कण्ठइ विष धर्यो . पिण ते नवि मूकाय । स० ॥३॥
जे नेही नेहइं मिलं, तइ तेह सु मिलियइ जाय । स० ।
तेह मिल्यइ स्युं कीजियइ, जे काम पड्यां कमलाय । स०॥४॥
महावल नृप महिमा तणौ, नन्दन गुण मणि धाम । स० ।
कमल लंछन प्रभु ना कहइ, विनयचन्द्र' गुण ग्राम । स० ॥५॥

॥ श्री ईश्वर जिनस्तवनम् ॥

ढाल—थारै माथे पिचरंग पाग सोनारो छोगलउ मारूजी

ईश्वर जिन नमियउ, दुःख नीगमियउ भव तणा । वाल्हाजी ।
चउगति नवि भमियउ, दुर्जन दमियउ आपणा । वा० ।
संसारइ भमता बहु दुख खमता भव गयउ । वा० ।
भव थिति नइ भोगइ, कर्म संयोगइ सुख थयउ । वा० ॥१॥
तुं साहिब मिलियउ, सुरतरु फलियउ आगणइ । वा० ।
मिथ्यामति टलियउ, दिन मुझ वलियउ हेजइ घणइ । वा० ।
हुँ छुँ अपराधी, मइं सेवा लाधी तुम्ह तणी । वा० ।
करउ सहज समाधि, कीरति वाधी अति घणी । वा० ॥२॥
मन विषय न समियउ, क्रोधइं धमियउ कुभाव थी । वा० ।
आलइं भव गमियउ, हुँ नवि नमियउ भाव थी । वा० ।
हिव मिथ्यात्व वमीयउ, मन उपसमियो अति घणुँ । वा० ।
दुर्दम दिल दमियउ, समकित रमीयउ गुण थुणुँ । वा० ॥३॥
तुं आगम अरूपी, अकल सरूपी मोहना । वा० ।
परमातम रूपी, ज्योति सरूपी सोहना ॥ वा० ॥
तुँ आप अनायक, त्रिभुवन नायक गुण भर्यो । वा० ।
जित मनमथ सायक, क्षायक भावइं भव तर्यो ॥ वा० ४॥
गलसेन महीपति वंश विभूषण दिनमणी । वा० ।
जसु सुयशा माता, जगत विख्याता बहु गुणी ॥ वा० ॥
कंचन तनु जीपइ, लंछन दीपइ निशामणी । वा० ।
'विनयचन्द्र' आनन्दइ श्री जिन वंदइ सुरमणी ॥ वा० ५ ॥

तिलक केसर कोरंट वकुल पाडल वली रे। व०।
दमणौ मरुवो कुसुम कली वहु विध मिली रे। क०।
होइ अनुकूल समीर धरइ नहीं तूलता रे। ध०।
तौ किम सहृदय लोक धरै प्रतिकूलता रे॥ ध० ॥४॥
देवानन्दन भूप कुलांवर दिनमणि रे। कु०।
रेणुका माता नन्द लीलावती नउ धणी रे। ली०।
कमल लंछन भगवान 'विनयचन्द्रइ' थुण्यौ। वि०।
तुम गुण गण नौ पार, कुंणइ ही नवि गुण्यो रे॥ कुं० ॥५॥

॥ श्री भुजंग जिनस्तवन ॥

ढाल—झूंवखडानी

भुजंग देव भावइ नमुँ, भगति युगति मन आणि ॥सलूणेसाजना
भुजंग नाथ वंदित सदा, सुरनर नायक जाणि। स० ॥१॥
हुँ रागी पण तुँ सही, निपट निरागी लखाय। स०।
ए एकंगी प्रीतड़ी, लोकां मांहि लजाय। स० ॥२॥
आश्रित जन नइं मूकतां, प्रभु अति हांसी थाय। स०।
शंकर कठइ विष धर्यो, पिण ते नवि मूकाय। स० ॥३॥
जे नेही नेहइं मिलै, तउ तेह सुं मिलियइ जाय। स०।
तेह मिलयउ स्युं कीजियइ, जे काम पड्यां कमलाय। स०॥४॥
महावल नृप महिमा तणौ, नन्दन गुण मणि धाम। स०।
कमल लंछन प्रभु ना कहउ, विनयचन्द्र' गुण ग्राम। स० ॥५॥

॥ श्री ईश्वर जिनस्तवनम् ॥

ढाल—थारै माथे पिचरंग पाग सोनारौ छोगलउ मारुजी

ईश्वर जिन नमियइ, दु ख नीगमियइ भव तणा । वाल्हाजी ।
चउगति नवि भमियइ, दुर्जन दमियइ आपणा । वा०।
संसारइ भमता बहु दुख खमता भव गयउ । वा० ।
भव थिति नइ भोगइ, कर्म संयोगइ सुख थयउ । वा० ॥१॥
तुं साहिब मिलियउ, सुरतरु फलियउ आगणइ । वा० ।
मिथ्यामति टलियउ, दिन मुझ वलियउ हेजइं घणइ ।वा० ।
हुँ छुँ अपराधी, मइं सेवा लाधी तुम्ह तणी । वा० ।
करउ सहज समाधि, कीरति वाधी अति घणी । वा० ॥२॥
मन विषय न समियउ, क्रोधइं धमियउ कुभाव थी । वा० ।
आलइं भव गमियउ, हुँ नवि नमियउ भाव थी । वा० ।
हिव मिथ्यात्व वमीयउ, मन उपसमियौ अति घणुं । वा० ।
दुर्दम दिल दमियउ, समकित रमीयउ गुण थुणुँ । वा० ॥३॥
तु आगम अरूपी, अकल सरूपी मोहना । वा० ।
परमातम रूपी, ज्योति सरूपी मोहना ॥ वा०॥
तुँ आप अनायक, त्रिभुवन नायक गुण भर्यौ । वा० ।
जित मनमथ सायक, क्षायक भावइं भव तर्यौ ॥ वा० ४॥
गलसेन महीपति वंश विभूषण दिनमणी । वा० ।
जसु सुयशा माता, जगत विख्याता बहु गुणी ॥ वा० ॥
कंचन तनु जीपइ, लंछन दीपइ निशामणी । वा० ।
'विनयचन्द्र' आनन्दइ श्री जिन वंदइ सुरमणी ॥ वा० ५ ॥

॥ श्री नेमिप्रभ स्तवनम् ॥

ढाल—हींडोलणारी, कर्म हींडोलणइ माई झूलइ चैतनराय

हर्ष हींडोलणइ झूलइ, नेमिप्रभ जिनराय।
जिहां शुद्ध आशय भूमि पटली, सोहियइ थिरवाय।
तिहां ज्ञान दर्शन थंभ अनुभव, दिव्य भाउ लसाय ॥
उपदेश शिख्या सहज संकलि, विविध दोर बनाय।
सौंदर्य्य समता भाव झूपइ, हींचिता सुख थाय ॥१॥ ह०॥
जिहां चरण शोभा भाव चामर, चतुरता वींझाय।
व्रत सुमति गुपति प्रतीत आली, रहत हाजरि आय ॥
परपक्ष गुण शुभ वायु सुंधा, परिमलइ महकाय।
तिहां भगति जुगति विवेचनादिक दीपिका दीपाय ॥३॥ ह०
सद्बोध तकीया तखत शुभ मति, विभवना समुदाय।
अनुपाधि भाव सुभाव चित्रित महित मन वचकाय ॥
जिहा सहज समकित गुण सुबन्धित, चंद्रूआ चितलाय।
शम शील लील विलास मंडित, मंडपउ धृति दाय ॥२॥ ह०
कर कमल जोड़ी करइ सेवा, नाकि नाथ निकाय।
सुर असुर नरवर हर्ष भरि, सम्मिलित राणा राय ॥
अनुभाव जेहनइ वैर विड्डुर, दुरित दुख पुलाय।
धन धन्न प्रभु कृतपुण्य जय जय, सवद गीत गवाय ॥४॥ ह०॥
वीरराय कुल अभ्र दिनमणि सुयश तिहुअण छाय ॥
जसु सूर लछन वरण कंचन, सुभग सेना माय ॥
भवि जीव बोहइ चित्त मोहइ, ज्ञानतिलक पसाय ॥
कवि 'विनयचन्द्र' प्रमोद धरि नइं, देव ना गुण गाय ॥५॥ ह०

।। श्री वीरसेन जिन स्तवनम् ।।

राग—कडखानी

जयउ वीरसेना भिधो जिनवरो जग जयो,
वीरसेना थकी सुयश पायउ।
द्रव्य गुणवाद रण तूर नादइं करी,
शुद्ध उपदेश पडहउ वजायउ ॥१॥ ज० ॥

मद मदन मान मुख अटिल जे उंवरा,
मोह महीपति तणा जे प्रसिद्धा।
अचल अप्रमत्तता शक्ति गुण गण करी,
विविध प्रहरण करी जेर कीधा ॥२॥ ज० ॥

सौर्य सन्नाह तन टोप गम्भीर्य्यता,
वीर्य गुण वेदिका ओटि लीधी।
सुमति वन्दूक तप दारु गोली गुपत्ति,
अति कपट कोट नइं चोटि कीधी ॥३॥ज०॥

रागनइं द्वेष वे तनुज मोह भूपना,
तेह सु सवल संग्राम मण्ड्यउ।
सहज उदासता शक्ति वल अधिक थी,
मोह मिथ्यात नउ पक्ष खण्ड्यउ ॥४॥ ज० ॥

कुमर भूमिपाल भूपाल नउ दीपतउ,
भानुमति नन्द आनन्ददाई।
वृषभ लन्छन गुणी भुवन चूड़ामणि,
कवि 'विनयचन्द्र' जस कीर्ति गाई ॥५॥ज०॥

॥ श्री महाभद्र जिन स्तवनम् ॥

ढाल—चँवर ढुलावइ हो गजसिंह री छावी महुल में जी

साहिब सुणियइ हो सेवक वीनति जी,
श्री महाभद्र जिणंद।
मुझ मन मधुकर हो नित लीणउ रहे जी,
प्रभु पदकज मकरन्द ॥१॥सा०॥

एह अनादि हो अनन्त संसार मंइ जी,
तुम्ह आणा विन स्वामि।
जे दुख पाम्या हो नाम लेई स्युं कहुं जी,
फरस्या सवि भवि भवि ठामि ॥२॥सा०॥

अविरत अव्रत हो परवश नइ गुण जी,
मोह नृपति नइ जोर।
कर्म भरम नइ हो जाल अलूझियौ जी,
चंचलता चित चोर ॥३॥सा०॥

हुं निज वीती हो वात शी दाखवूं जी,
जाणउ छउ जिनराय।
तारक विरुद हो वहियउ आपणो जी,
बांह ग्रह्यानी लाज ॥४॥सा०॥

देवराय नृप नइ हो कुंअर दीपतउ जी,
उमा देवी जसु माय।
सिंधुर लंछन हो चरणउ कंचनइ जी,
'विनयचन्द्र' सुखदाय ॥५॥सा०॥

॥ श्री देवयशा जिन स्तवनम् ॥

ढाल—काचीकली अनार की रे हा

तुम्हे तउ दूर जइ वस्या रे हां,
आवी केम मिलाय। मेरे साहिवा।
संदेशो पहुँचइ नहीं रे हा,
कागल पिण न लिखाय ॥ मे० ॥१॥
पिण अनन्त ज्ञानी अछउ रे हा,
जाणउ मन ना भाव। मे० ॥
हेज धरी मुझ नइं मिलौ रे हा,
जिम होइ प्रीति जमाउ ॥ मे० ॥२॥
अनुकम्पा करि नइ करउ रे हां,
समकित नउ निरधार। मे०।
तुम्ह विन अवर न को अछइ रे हा,
जीवित प्राण आधार ॥ मे० ॥ ३ ॥
जाणी नउं नवि पूरता रे हा,
सेवक केरी आश। मे०।
तउ साहिव शी वात ना रे हा,
हुं पिण स्यानउ दास ॥ मे० ॥ ४ ॥
सर्वभूत नृप नन्दनौ रे हा,
गंगा मात मल्हार। मे०।
देवयशा शशि लन्छने रे हां,
'विनयचन्द्र' सुखकार ॥ मे० ॥ ५ ॥

॥ श्री अजितवीर्य जिनस्तवन ॥

ढाल—वीरवखाणी राणी चेलणा

अजितवीरज जिन वीसमा जी,
विसरइ नहीं थांरउ नेह।
अलख रूपी तुमे चित लिख्याजी,
आ भव पर भव जेह ॥१॥ अ०॥
प्रभु तुमे अकल कलना करी जी,
अगम्य कीधा तुमे गम्य।
अभक्ष्य ते भक्ष्य प्रभु आचर्या जी,
आदर्या रम्य अरम्य ॥२॥ अ०॥
अपेय जे पामर लोकनइ जी,
तेह कीधुं तुम्हे पेय।
अंतरगति इम भावतां जी,
तुम्हे अनुपम उपमेय ॥३॥ अ०
अकल पट द्रव्य निज रूप थी,
अगम्य जे सिद्ध नुँ ठाम।
अभक्ष्य जे काल अपेय नउ जी,
सहज अनुभव सुधा नाम ॥४॥ अ०॥
नरपति राजपाल सुदरू जी
मात कनीनिका जाग।
स्वस्तिक लछनइ वंदियइ जी,
कवि विनयचन्द्र सुविलास ॥५॥ अ०॥

॥ कलश ॥

ढाल—शांति जिन भामणइ जाऊँ

संप्रति वीस जिनेश्वर वंदउ,
विहरमान जिणराया जी।
विचरंता भविजन मन मोहैं,
सुरनर प्रणमइ पाया जी ॥१॥ सं०॥
जंबूद्वीपइं च्यार सोहावइ,
धातकी पुष्कर अर्द्धइ जी।
आठ आठ विचरइ जयवंता,
अढी द्वीप नइ संघे जी ॥२॥ सं०॥
मात पिता लंछन नइ नामइ,
भगति धरी नइ थुणिया जी।
ए प्रभु ना अनुभाव थकी मंइ,
दुरित उपद्रव हणिया जी ॥३॥ सं०॥
संवत सत्तर चउपन्नइ वरषइ,
राजनगर मे रंगइ जी।
वीसे गीत विजयदशमी दिन,
कर्या उलट धरि अगइजी ॥४॥ सं०॥
गच्छपति श्रीजिनचन्द्रसूरिन्दा,
हर्षनिधान उवभाया जी।
ज्ञानतिलक गुरु नइ सुपसायइ,
'विनयचन्द्र' गुण गाया जी ॥५॥ सं०॥

॥ इति विंशतिका समाप्ता ॥

इति श्री विनयचन्द्र कवि विनिर्मिता विहरतीर्थंकराणां विंशतिका सम्पूर्णम्

॥ श्रीशत्रुंजय यात्रा स्तवनम् ॥

ढाल—कंत तमाकू परिहरो, एहनी।

हांरे मोरालाल सिद्धाचल सोहामणो,
ऊँचो अतिहि उत्तंग मोरालाल।
सिद्धि वधू चरचा भणी,
मानु उन्नत करि चग मोरा लाल ॥१॥
सेत्रूँजा शिखरे मन लागो,
साहिबनी सूरति चित लागो ॥ आ० ॥
हारे मोरा लाल पालीताणो तलहटी,
जिहां ललितसरोवर पालि ॥ मो० ॥
पगला प्रथम जिणंदना,
प्रणमीजे सुविशाल मोरा लाल ॥२॥से०॥
हारे मोरा लाल प्रणमी नें पाजे चढ़ो,
समवसस्था जिहां नेम ॥ मो० ॥
जिहां प्रभु पगला वंदियें,
पूरण धरि नें प्रेम मोरा लाल ॥३॥से०॥
हारे मोरा लाल आगल चढ़तां, अतिभली,
नीली धवली पर्व ॥ मो० ॥
कुंड कुंड पादुका,
वंदे भवियण सर्व मोरा लाल ॥४॥से०॥
हारे मोरा लाल अनुक्रमि पहिला कोट में,
पेसी कीध प्रणाम ॥ मो० ॥

वाघणि पोले पैसतां,
नाग मोरनो ठाम मोरा लाल ॥५॥से०॥
हांरे मोरा लाल गोमुख ने चक्केसरी,
प्रणमो वामे हाथ मोरा लाल ॥ मो० ॥
चौंरी नेम जिणंदनी,
सरगचारी ने साथ मोरा लाल ॥६॥से०॥
हांरे मोरा लाल चौमुख जयमलजी तणो,
नमता होइ आह्लाद ॥ मो० ॥
अवर चैत्य नमि पेसीयै,
आदि जिणंद प्रासाद मोरा लाल ।७।से०।
हांरे मोरा लाल दीजे मध्य प्रदक्षिणा,
खरतरवसही वादि ॥ मो० ॥
पुंडरीक गगधर तणी,
प्रतिमा अति आनंदि मोरा लाल ।८।से०।
हांरे मोरा लाल सहसकूट अष्टापदे,
प्रमुख बहु जिन वादि ॥ मो० ॥
राउणि तलि ,पगला नमो,
गणधर पगला सार मोरा लाल ॥९॥से०॥
हांरे मोरा लाल मूल गंभारे ऋषभजी,
पासे होइ जिणंद ॥ मो० ॥
मरुदेवी माता गज चढी
आगल भरत नरिंद मोरा लाल ॥१०॥से०॥

हांरे मोरा लाल चवदैसय बावन अछै,
गणधर पगला सार ॥ मो० ॥

इणिपरि देइ प्रदिक्षणा,
नमिये नाभि मल्हार मोरा लाल ॥११॥से०॥

हांरे मोरा लाल चैत्यवंदन प्रभु आगले,
करियै आणी भाव ॥ मो० ॥

हिव वाहिर देहरा थकी,
जे छै ते कहुं भाव मोरा लाल ॥१२॥से०॥

हांरे मोरा लाल सूर्यकुंड भीमकुंड नै,
पासे पगला जान ॥ मो० ॥

ओलखाभूल आचियो,
फरसीजे जिन न्हाण मोरा लाल ॥१३॥से०॥

हांरे मोरा लाल जाइये चेलणतलावड़ी,
सिद्ध सगला तिणि ठौड़ ॥ मो० ॥

सिद्धवड़े प्रभु पादुका,
नमियै बे कर जोड़ मोरा लाल ॥१४॥से०॥

हांरे मोरा लाल आदिपुरे आवि चढ़ो,
फिरि नै ए गिरिराज ॥ मो० ॥

हथणी पोले आविनै,
वलि वंदो जिनराज मोरा लाल ॥१५॥से०॥

हांरे मोरा लाल बीजी जात्र करिये तिहां,
वाहिर खमणा चैत्य ॥ मो० ॥

निरखी अद्भुत भेटियै,
अति प्रसन्न हुवे चित्त मोरा लाल ॥१६॥से०॥
हारे मोरा लाल पाडव पाचे प्रणमियै,
अजित शाति जिनराय ॥ मो० ॥
टुक शिवा सोमजी तणो,
तिहा चोमुख भेटो आय मोरा लाल ॥१७॥से०॥
हारे मोरा लाल गिरि तल सेत्रुंजी नदी,
जोवो आणि विवेक ॥ मो० ॥
इणि परि विमलाचल तणी,
तीरथ भूमि अनेक मोरा लाल ॥१८। से०॥
हारे मोरा लाल पाजे पाजे ऊतरी,
तलहटी जिन परसाद ॥ मो० ॥
स्नात्र महोच्छव कीजीए,
टाली पंच प्रमाद मोरा लाल ॥१६॥से०॥
हारे मोरा लाल एगिरिनी गुण वर्णना,
करतां नावै पार ॥ मो० ॥
सीमंधर सामी संमुखे,
महिमा कही अपार मोरा लाल ॥२०॥से०॥
इम भक्तिपूर्वक युक्ति सेती, थुण्यो सेत्रुजा तीर्थ नइ।
संवत सतर पंचावनइ वर, पोप वदी दसमी दिनइ॥
श्रीपूज्य जिनचन्द्रसूरि पाठक, हरपनिधान हरपइ घनइ।
परिवार सों जिन यात्र कीधी, 'विनयचन्द्र' इम भणइ॥२१॥

॥ श्री ऋषभ जिन स्तवनम् ॥

ढाल — फूली ना गीतनी देसी

वीनति सुणो रे म्हारा वाल्हा, राजि मरुदेवा राणी ना लाला
राजि थांरा चरण नमुं शिरनामी ।

थेतौ भूखां नी भावठ भंजउ,
राजि निज सेवक तणा मन रंजउ राजि० ॥१॥

म्हारां मननी आशा पूरो,
राजि म्हारा कठिन करम दल चूरउ । राजि० ।

थांरा गुण सुं मो मन लागो,
राजि हियड़ राखुं रे बाभण जिम तागउ ॥ २ ॥

थांरी सूरत अधिक सुहावै,
राजि म्हारा नयण देखि सुख पावइ राज०

थांरी कंचनवरणी काया,
राजि थांरउ रूप सकल सुख दाया । राज० ।३॥

सोहइ नयन कमल अणियाला,
राजि समतामृत रस वरसाला । राजि० ।

थे तो नाभि नरिंद कुल चन्दा,
राजि थानइ सेवे सुर नर वृन्दा । राजि० ॥ ४ ॥

थांरो ध्यान हिया विच धारूं,
राजि थानइ निशिदिन कहीन विसारूं ।राजि०।

त्रिभुवन नउ मोहनगारउ,

राजि तिणि लागइ मुझ नइ प्यारो ।राजि० ॥५॥

तुझ नउ देखी दिल फूली,

राजि तुझ पास सदा रहइ भूली। राजि० ।

मुझ नइ निज सेवक जाणी,

राजि मुझ तारउ करुणा आणी । राजि० ॥ ६ ॥

मइ तउ पूरव पुण्यइ पाया,

राजि प्रभु चरणे चित्त लगाया । राजि० ।

श्री ऋषभ जिणंद जगराया,

विनयचन्द्र हरख सुं गाया राजि० ॥ ७ ॥

॥ श्री शत्रुंजय मंडन ऋषभदेव स्तवनम् ॥

ढाल—माखीनी

वात किसी तुझनइ कहुं, मुझ नइ आवइ लाज ऋषभजी ।

विगर कह्यां मन नवि रहइ, हिव सांभलि जिनराज ।ऋ०॥१॥

हुं माया सुं मोहीयउ, मउ कीधा पर द्रोह । ऋ० ।

अधम तणी संगति ग्रही, न रही संयम सोह । ऋ० ॥२॥

मूंकि रह्यउ संसार मे, न धर्‌यो ताहरउ ध्यान । ऋ० ।

परमारथ पायउ नहीं, भरियउ घट मा मान । ऋ० ॥३॥

तृष्णा सुं लागी रह्यउ, पिण न भज्यउ संतोष। ऋ०।
ठावा मुझ माहे मिलइ, सगलाई जे दोष। ऋ० ॥४॥

कुमति घणी मुझ मन वसइ, सुमति थकी नहीं नेह। ऋ०।
माठी करणी मां पड्यउ, हुं अवगुण नउ गेह। ऋ० ॥५॥

वलि झूठी सांची करूँ, वाता तणउ विचार। ऋ०।
हुं लंपट नइ लालची, कपट तणउ नहीं पार। ऋ० ॥६॥

ढाकुं अवगुण आपणा, केहनी न करूं काण। ऋ०।
पर दूषण लेवा भणी, हुं छूं आगेवाण। ऋ० ॥७॥

मिथ्यादृष्टि देव सुं, धरियउ पूरउ राग। ऋ०।
अर्थ तणउ अनरथ कियउ, देखी नइ निज लाग। ऋ० ॥८॥

थिरकि रह्यउ निज घाट में, चंचल माहरउ चित्त। ऋ०।
संसारी सुख ऊपरइ, हीयड़इ हींसइ नित्त। ऋ० ॥९॥

जीव संताप्या मइं घणा, पर आशायें वींध। ऋ०।
वलि रात्रि भोजन कर्या, काज अकारज कीध। ऋ० ॥१०॥

हिव हुं किम करि छूटिसुं, कीधा करम कठोर। ऋ०।
भव दुख मां हुं भीड़ीयउ, कोई न चालइ जोर। ऋ० ॥११॥

पिण इक शरणउ ताहरउ, लीधउ छइ जग तात। ऋ०।
देस्युं ताहरी मानियइ, दुर्जन नइ सिर लात। ऋ० ॥१२॥

'विनयचन्द्र' प्रभु नूं अछइ, सेत्रुंजय सिणगार। ऋ०।
चरण ग्रह्या में ताहरा, मुझ कुमति नइ तार। ऋ० ॥१३॥

॥ श्री अभिनन्दन जिन गीतम् ॥

ढाल—प्रोहितियानी

पंथीड़ा अंदेसउ मिटस्यै जे दिनइ रे,
ते तउ मुझ नइ आज बताइ रे।
प्रभु अभिनन्दन नइ मिलवा तणउ रे,
अलजो ए मनडै न खमाइ रे ॥१॥ पं० ॥

ते शिवपुर वासउ वसे रे,
हुं तउ मानव गण मइं जोय रे।
प्राणवल्लभ दुर्लभ जिनराज नी रे,
कहि नै सेवा किण विधि होय रे॥२॥पं०॥

पाख हुवै तउ ऊडि नैं रे,
जाइ मिलीजै तेह सुं नेट रे।
ओलग कीजइ वेकर जोड़ि नैं रे,
स्यु वलि काउ भलेरी भेट रे॥३॥ पं० ॥

ठण कलि संमुख नवि मिलउ रे,
वलि पहुँचइ नहीं कागल मात रे।
दूर थकी जे रंग इम्मी परि रे,
राखिस ए पटोलै भाति रे॥४॥ पं० ॥

परम पुरुष पाहर परखैं रे,
चाढे वंछित कवण प्रमाण रे।
गुण आगलि साची जाणे नहीं रे,
जगगुरु 'विनयचन्द्र' नी वाणि रे॥५॥पं०॥

॥ श्री चन्द्रप्रभ जिन गीतम् ॥

देशी—जिनजी हो हसत वदन मन मोहतउ हो लाल

साहिबा हो पूरण ससिहर सारिखौ,
हो लाला सोहै मुख अरविंद जिणेसर
तैं चित चोर्यौ माहरौ हो लाल,
जिम अलि मन मकरन्द जि० ॥१॥ते०॥
गयण निसाकर दीपतौ हो लाल,
जस वड़ जिम विस्तार जि० ॥२॥ ते० ॥
तूं तेहिज सुपनइ मिलइ हो लाल,
सांप्रति दरसण दाखि जि०।
मूढ पतीजै जे हियइ हो लाल,
लाज मोरी तु राखि जि० ॥३॥ ते० ॥
अन्तरजामी तुं अछै हो लाल,
वाल्हेसर सुविदीत जि०।
साहिब वस्त तिका करो हो लाल,
जिण करि आवै चीत जि० ॥४॥ ते० ॥
तेहिज वात सही करो हो लाल,
कहीये न विसरउ हेव जि०।
'विनयचन्द्र' साचउ सही हो लाल,
श्रीचन्द्रप्रभु देव जि० ॥५॥ ते० ॥

॥ श्री शान्तिनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—जे हइमाने मोंजरी ए देशी

सांभलि निसनेही हो लाल कहूं वात ते केही हो।
सगुण म्हांरा वालहा।
कहुँ वीनति केही हो लाल पिण तू छइ तेही हो। स० ॥१॥
शरणागत पालौ हो लाल, अंतर दुख टालौ हो। स०।
तुं तउ माया गालौ हो लाल, रहै मोसुं निरालौ हो ।स०॥२॥
वाते परचावै हो लाल, ते मन नइ नावै हो। स० ॥
साची पतियावै हो लाल, तउ संशय जावै हो। स० ॥३॥
राख्यौ पारेवौ हो लाल, तिण परि सारेवौहो। स०।
सेवक तारेवौ हो लाल, नाकार वारेवौ हो। स० ॥४॥
शांतिनाथ सोभागी हो लाल, सोलम जिन सागी हो ।स०।
'विनयचन्द्र' रागी हो लाल, जयौ तुं वड भागी हो ।स०॥५॥

॥ श्री नेमिनाथ गीतम् ॥

ढाल—अब कउ चौमासौ थे घर आनौ जावइ कहउ राजि ए देशी

नेमजी हो अरज सुणो रे वाल्हा माहरी हो राज,
राजुल कहइ घरि नेर, घरि रहउ नें राज।
साहिबा एकरस्यउ थे फिरी आवउ,
घरि रहउ नैं राज।
केसरिया घरि० अलबेला घ० अभिमानी घ०,
साहिबा एकरिस्यउ ॥ आं० ॥

नेमजी हो नवभव नेह निवारनइ हो राज,
इम किम दीजइजी छेह ॥१॥ घ०॥
नेमजी हो विन अवगुण मुझ नइ तजी हो राज,
ते स्यउ मुझ मां दोप ॥घ०॥
नेमजी हो करिवउ न घटइ तुम नउ हो राजि,
अवला ऊपरि रोप ॥घ०॥सा० २॥
नेमजी हो सउ मीनति करता थका हो राजि,
मत जावउ मुझ मेलि ॥घ०॥
नेमजी हो तुम विन मुझ काया दहइ हो राजि,
जिम जल विहूणी वेलि ॥घ०॥सा० ३॥
नेमजी हो मुगति रमणि मोह्या तुमे हो राजि,
पिण तिण मा नहि स्वाद ॥घ०॥
नेमजी हो तेह अनंते भोगीवी हो राजि,
छोड़उ छोकरवाद ॥घ०॥सा० ४॥
नेमजी हो अधिका लोभ न कीजइ हो राजि,
आणउ हियइ रे विवेक ॥घ०॥
नेमजी हो सुललित शील सुहामणी हो राजि,
हुँ तुम नारी एक ॥घ०॥सा० ५॥
नेमजी हो योवन लाहउ लीजियइ हो राज,
जोइ विपय सुख जोर ॥घ०॥
नेमजी हो चारित पिण लेज्यो पछइ हो राज,
न हुवइ कठिन कठोर ॥घ०॥सा० ६॥

नेमजी हो भलौ रे कियौ तुम वालहा हो राज,
आवी तोरण वार ॥घ०॥
नेमजी हो रथ फेरी पाछा वल्या हो राज,
एह नहीं जग व्यवहार ॥घ०॥सा० ७॥
नेमजी हो जउ नान्या मन मन्दिरइ हो राज,
हूं आविस तुम पास ॥घ०॥
नेमजी हो इम कहि पिउ पासउ गउ हो राज,
राजुल धरती आश ॥घ०॥सा० ८॥

नेमजी हो प्रणमी नेम जिणंदनइ हो राज,
संयम ग्रह्यो धरि प्रेम ॥घ०॥
नेमजी हो प्रिउ पहिली मुगते गई हो राज,
वंदइ 'विनयचन्द्र' एम ॥घ०॥६॥

॥ श्री नेमिनाथ राजिमती बारहमासा ॥

राग—हिंडोल

आयउ हो इम रिति हित मइं यदुकुलचन्द,
द्यउ मोहि परम आनन्द।
रस रीति राजुल वदत प्रमुदित, सुनो यादव राय।
छोरि कै प्रीति प्रतीति प्रियु तुम्ह, क्यूं चले रीसाय॥
चिहुं ओर घोर घटा विराजत, गुहिर गाजत गउन।
भरि अधिक गाढ़ अपाढ़ उलट्यउ, घटनउ चित से चउन॥१ आ०॥

उत्तंग गिरिवर प्रवर फरसत, मेघ वरषत जोर।
दमकती दामिनि वहुर भामिनी, चमकती तिहिं ठोर॥
प्रियु प्रियु पपीयन रटत प्रगटत, पवन के झकझोर।
उस मास सावन दिल दिढावन, सजन मानि निहोर॥२ आ०॥
दिहुँ दिसइ जलधर धार दीसत, हार के आकार।
ता वीचि पहुचै नहीं कवही, सूई को सचार॥
सा लगत है झरराट करती, मध्यवरती वान।
भर मास भाद्रव द्रवत अंवर, सरस रस की खान॥३ आ०॥
सरसा सरोवर विमल जल से, भरे है भरपूर।
लख लोल करत हिलोल हर्षित, हंस पक्षि पडूर॥
चन्द्र की शीतल चन्द्रिका से, विकासइं निशि नूर।
आसोज मास उदास अवला, रहत तो विनु झूरि॥४ आ०॥
संयोगिनी को वेप देखयउ, तव उवेखयउ कंत।
शृंगार शोभत सहल अंगइ, महल दीप दीपंत॥
उन्नमत पीवर अति घन स्तन, मध्य मुकुलित माल।
सखी मास काती दहत छाती, माल तो भई झाल॥५॥आ०॥
निय रमनि संगति सउं उमाहे, जात काहे दूरि।
निज नारी प्यारी आसकारी, दीजियत क्युं छोरि॥
वनवास कीयइ भेप लीयइ, भला न कहुं तोहि।
इन मागसिर भई सार्ग सिर परि, देखि दुखिनी मोहि॥६॥आ०॥
अति दिवस दुर्वल सवल दोपाक्रान्त निशिपति ज्योति।
संकुचित हिम रिन कठिनता सउं, कमल लटपट होत॥

चंबेल चोआ करु मरदन, दरद होइ असमान।
प्रियु पोष मास शरीर शोषत, हूं भई हइरान ॥७॥आ०॥
चल चीत प्रीतम सीत कीनी, सोउ सालत साल।
इक तनक मोरी भनक सुनिकें, छिनक करौ निहाल॥
विरह सौं फाटत हृदय मेरौ, दुख घनेरो होहि।
यह माह मास उलास धरि कें, सेभ को सुख जोहि॥८॥आ०॥
सारिखी जोरी रमत होरी, लेत गोरी संग।
रंभित झमाल धमाल गावत, सब बनावत रंग॥
डफ ताल चंग मृदंग बावत, उडावतहिं गुलाल।
इह मास फागुन सगुन खेलउ, निरखि मोहि बेहाल॥९॥आ०॥
जहां गत विपल्लव अति सपल्लव, भये झंखरझार।
अरविंद निर्मल विपुल विकसित, हसत वन श्रीकार॥
तहां बहुल परिमल लीन अलिकुल मिलि करत गुंजार।
यह मास चैत सचेत भई, देत मनमथ मार।१०।आ०।
लुलि लुब झुंब कदंब होवत, अंब के चिहुं फेर।
तरु डार घूजत मधुर कूजत, कोकिला तिहिं बेर॥
अभिलाष द्राख्न फउ समानत, मउज मानत लोग।
वैशाख मइं बयसाख बउलत, कहा पीउइं भोग॥११॥आ०॥
रति वेलि फंदल दवानल सउ, प्रबल ताप प्रसंग।
अति अरुन किरन कठोर लागत, नांहि लागन अंग॥
चन्दन प्रमुख भरि भरि लगाउं, धन्व जगावुं न्याय।
मन लाय ज्येठ मउ ज्येठ नेर, ल्याउ नेमि मनाय॥१२॥आ०॥

इन भाति मन की खांति वारह, मास विरह विलास।
करि कइ प्रिया प्रिय पासि चरित्र, ग्रह्यउ आनि उल्लास॥
दोउ मिले सुन्दर मुगति मंदिर, भइ जहाँ अति भंद्र
मृदु वचन ताकउ रचन भापत, विनयचन्द्र कवीन्द्र ॥१३॥आ०॥

॥ इति श्री नेमिनाथ राजीमत्योर्द्वादश मास ॥

॥ श्री संखेश्वर पार्श्वनाथ बृहत्स्तवनम् ॥

ढाल—कोइलो परवत धूंधलउ, एहनी

श्री संखेश्वर पास जी रे लो,
सुणि वालू दोइ वइण रे सनेही।
दरसण ताहरउ देखिवा रे लो,
तरसें माहरा नउण रे सनेही ॥१ श्री०॥
चोल मजीठ तणी परइ रे लो,
लागउ तुम्ह सु प्रेम रे सनेही।
हियडउ हेजउ ऊलमइ रे लो,
जलहर चातक जेम रे सनेही ॥२ श्री०॥
हूँ जाणूं जउ नउ मिलूँ रे लो,
साहिब नउ इकवार रे सनेही।
सयणा रउ मेलइ करी रे लो,
सफल हुवउ अवतार रे सनेही ॥३ श्री०॥
वालहा किम आवुँ तिहां रे लो,
वेला विपमी जाय रे सनेही।

सुख चाहंता जीव नइ रे लो,
मत कोई लागू थाय रे सनेही ॥४ श्री०॥
केलवि कल काइ हिवै रे लो,
जिम आवुं तुझ पास रे सनेही।
आवी नइ तुझ रंझिस्युँ रे लो,
खिजमति करस्युँ खास रे सनेही ॥५ श्री०॥
मत जाणौ मोनइ लालची रे लो,
दिल माहरउ दरियाव रे सनेही।
बीजउ कंइ माहरउ नहीं रे लो,
चाहउ आदर भाव रे सनेही ॥६ श्री०॥
महिर विना साहिब किसउ रे लो,
लहिर विना स्यउ वाय रे सनेही।
सहिर विना स्यउ राजवी रे लो,
इम कलि माहि कहाइ रे सनेही ॥७ श्री०॥
कां न करउ मुझ ऊपरइ रे लो,
कूरम दृष्टि सुदृष्टि रे सनेही।
जेथी ततखिण संपजइ रे लो,
शान्त सुधारस वृष्टि रे सनेही ॥८॥श्री०॥
पृथ्व्यादिक नइं सेवता रे लो,
पूगइ मननी आस रे सनेही।
तउ साहिब तुझ मारिखउ रे लो,
किम राखइ नीराम रे सनेही ॥९॥श्री०॥

वयणे नेह वधइ नहीं रे लो,
नयणे वाधइ नेह रे सनेही।
नेह तेह स्या काम नो रे लो,
अणमिलिया रहै तेह रे सनेही ॥१०॥श्री०॥
जिम तिम मुझ नइ तेड़नइ रे लो,
करि माहरउ निरवाह रे सनेही।
'विनयचन्द्र' प्रभु सानिधइ रे लो,
नहीं खलनी परवाह रे सनेही ॥११॥श्री०॥

॥ श्री पार्श्वनाथ बृहत्स्तवनम् ॥

ढाल—देहु देहु नणद हठीली, एहनी

श्री पास जिनेसर स्वामी, तुं वाहलो अन्तरजामी रे।
जिनदेव तुं जयकारी, तुझ सुरति लागै प्यारी रे॥
साहिब सुन वीनति मोरी, बलिहारी जाउं तोरी रे॥१॥
तुं गुण अनन्त करि गाजइ, तुझ रूप अनोपम राजइ रे।
सुन्दर तुझ मुख नउ मटकौ, वारू लोयण नउ लटकउ रे॥२॥
तुं धर्म तणउ छइ धोरी, माहरउ मन लीधउ चोरी रे।
तुझ दीठां विण न सुहावइ, मुझ जीव असाता पावइ रे॥३॥
भरि निजर जोऊँ जब तुझनउ, तब आनंद उपजउ मुझनइ रे।
चित्त माहि हुवउ रंग रोल, जाणै स्वयंभूरमण कल्लोल रे॥४॥
मइं देव घणा ही दीठा, मुख मीठा हीयड़इ धीठा रे।
मिलियउ नहीं हिनुयउ कोई, स्वारउ मूंख्या सहु जोई रे॥५॥

हुं भव भव भमतौ हार्यो, वहु दिवसे तुझ सम्भार्यो रे।
तुझ सेवा करिवी माडी, ते किम जायउ कहौ छाडी रे ॥६॥
पूरवली प्रीति जगाई, हिवइ करो निवाज सकाई रे।
जे माहि दत्त गुण लहियउ, मोटा तउ तेहिज कहीयइ रे ॥७॥
तू अध्यातम मत वेदी, तइं कर्मप्रकृति सहु छेदी रे।
संसार तरी तुं वइठउ, शिवमन्दिर मां जइ पइठउ रे ॥८॥
आजन्म तुं वालउ योगी, तुं अनुभव रस नउ भोगी रे।
तुं तउ छइ निपट निरागी, हुं रागी तुझ रह्यउ लागी रे ॥९॥
रागी रागइ जे व्यापइ, तेहनइ जउ वंछित नापइ रे।
तउ भगतवच्छल वहु प्रीतइ, तेहनइ कहियइ सी रीतइ रे ॥१०॥
अविचल सुख मुझ दीजउ, परमातम रूपी कीजइ रे।
प्रभु साथइं वाते आया, कवि 'विनयचन्द्र' गुण गाया रे ॥११॥

॥ श्री पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—सूंवर दे ना गीतनी

सुन्दर रूप अनूप, मूरति मोहइ हो,
सगुणा साहिब ताहरी रे।
चित माहे रहे चूप, देखण तुझ नइ हो,
सगुणा साहिब माहरी रे ॥१॥
मुझ मन चंचल एह, रातु तुझ नइ हो,
सगुणा साहिब नवि रहउ रे।
तुझसु धरिय सनेह, रातउ चरणे हो,
सगुणा साहिब सुख लहइ रे ॥२॥

तुं उपगारी एक, त्रिभुवन मांहइ हो,
सगुणा साहिव मइं लह्यउ रे।
आव्यौ धरिय विवेक, हिवइ तुझ सरणउ हो,
सगुणा साहिव संग्रह्यउ रे ॥३॥

सरणागत साधारि, विरुद सम्भारी हो,
सगुणा साहिव आपणौ रे।
भवसायर थी तारि, तुझ नइ कहियइ हो,
सगुणा साहिव स्युं घणउ रे ॥४॥

साहिव नइ छइ लाज, निज सेवक नी हो,
सगुणा साहिव जाणिज्यो रे।
मेलउ दे महाराज, वचन हीयामइं हो,
सगुणा साहिव आणिज्यो रे ॥५॥

लाड कोड मानीत, जो नवि पूरउ हो,
सगुणा साहिव प्रेम सुं रे।
तो कुण राखइ प्रीति, तउ कुण पालइ हो,
सगुणा साहिव खेम सुं रे ॥६॥

पास जिणेसर राजि, पदवी आपउ हो,
सगुणा साहिव ताहरी रे।
कहै 'विनयचन्द्र' निवाजि, अरज मानेज्यो हो,
सगुणा साहिव माहरी रे ॥७॥

।। श्रीगौड़ी पार्श्वनाथ वृहत्स्तवनम् ।।

राग—मल्हार

नाम तुम्हारो सांभली रे, जाग्यउ धरम सनेह ।
ते तउ दिन दिन ऊलटइ रे, मानु पावस ऋतु नउ मेह ।।१।।
गोड़ी पासजी हो, ज्ञानी पासजी हो, अरज सुणउ इण वार ।।
तुम पासे आव्या तणो रे, अधिक ऊमाहउ थाय ।
पिण स्युं कीजइ साहिबा, आव्या नै छै अन्तराय ।।२।।गो०।।
ते माटइ करिनइ मया रे, आणी मन उपगार ।
आवी नइ मुझ थी मिलउ, दरसण द्यो इकवार ।।३।।गो०।।
तुझ जेहवउ वलि कुण छइरे, अवसर केरो जाण ।
निज अवसर नवि चूकियइ, करो सेवक वचन प्रमाण ।।४।।गो०।।
तीन भवन मां ताहरो रे, झलकइ निरमल तेज ।
सूरति देखी ताहरी वाल्हा, हसता आवै हेज ।।५।। गो०।।
तुझ मुख मटकउ अति भलोरे, जाणइ पूनिमचन्द ।
आखड़ी कमलनी पाखड़ी, शीतल नइ सुखकन्द ।।६।। गो०।।
दीपशिखा सम नासिका रे, अधर प्रवाली रंग ।
दंत पंकति दाडिम कुली, दीपइ अंग अनंग ।।७।। गो०।।
मुकुट विराजइ मस्तकइं रे, काने कुण्डल सार ।
बाह बाजूबन्द बहिरखा, हीयड़इ मोती नउ हार ।।८।। गो०।।
नील वरण शोभा वणी रे, अहि लंछन अभिराम ।
तुझ सारीखो जगत मा वाल्हा रूप नहीं किण ठाम ।।९।। गो०।।

तीन छत्र सिर शोभता रे, चामर ढालइ इन्द्र।
तुझ प्रभुता देखी करी, मोह्या सुर नर नइ नागेन्द्र ॥१०॥गो०॥
अपछर ल्यइ तुझ भामणा रे, करती नाटक जोर।
तारौ तारौ पास जी रे, ऊभी करइ निहोर ॥११॥गो०॥
चाकर केरी चाकरी रे, प्रभु आणौ मन माहि।
वाल्हेसर सुप्रसन्न थयी, धरि हेत ग्रहउ मोरी बाहि ॥१२॥गो०॥
तुझ सूं लागी मोहणी रे, बीजां सूँ नहिं काम।
साम्हौ जोवौ साहिबा, आवौ आवौ आतम राम ॥१३॥गो०॥
योगी भोगी तुझ भणी रे, ध्यावे नित एकान्त।
मुगति रमणि रस रागीयौ, तुं नीरागी भगवन्त ॥१४॥गो०॥
अश्वसेन नृप कुल तिलौ रे, वामादेवी कौ नन्द।
ते साहिब नइ वीनती, इम वीनवइ 'विनयचन्द' ॥१५॥गो०॥

॥ श्री पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

राग—सारंग

माई मेरे सावरी सूरति सुं प्यार ॥मा०॥
जाके नयन सुधारस भीने, देख्यां होत करार ॥मा०॥१॥

जासौं प्रीति लगी है ऐसी, ज्यों चातक जल धार।
दिल मे नाम वसै तसु निसदिन, ज्युं हियरा मइं हार ॥मा०॥३॥

पास जिनेसर साहिब मेरे, ए कीनी इक तार।
विनयचंद्र कहै वेग लहुं अब, भव जल निधि कौ पार ॥मा०॥३॥

॥ श्री वाड़ी पार्श्वनाथ लघुस्तवनम् ॥

लांघ्या गिरवर डुँगरा जी, लांघ्या विषम निवास।
ते दुख तुझ भेट्या गया जी, साभलि वाड़ी पास ॥१॥

परमगुरु माहरै तुम्हसुं प्रीति।
पामि सगुण तो सारिखा जी, निगुण न आवै चीत ॥२॥प०॥

नयणे निरख्यां चाहसुं जी, भलो थयो परभात।
मन मेलू जो तुं मिल्यौ जी, उल्हस्यौ माहरौ गात ॥३॥प०॥

तइं तो कल का फेरवी जी, तन मन ताहरइ हाथ।
खरी कमाई माहरी जी, हिव हुं थयौ सनाथ ॥४॥प०॥

अलवि करै अराधता जी, वायें वादल दूर।
एह विरुद सम्भारि नैं चित चिंता चकचूर ॥५॥प०॥

सकज अछै तूं पूरिवा जी, घणा हरख नै लाड।
जाइ अनेरा आगलै जी, किसौ चढ़ावुं पाड ॥६॥पा०॥

वचने लागउ कारिमौ जी, लाख गुणे ही नेह।
दिल भर दिल तेवै छतो जी, जिम चावईये मेह ॥७॥प०॥

प्रस्तावै ऊपर करै जी, चलती ए अरदास।
दरसण दे संतोषजे जी, जिम सौ तिम पंचास ॥८॥प०॥

मत वीसारेज्यो हिवैं जी. सौ वाते गुरु वात।
अवगुण गुण करि लेखज्यो जी, जिनचंद्र जगतात ॥९॥पा०॥

॥ श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ लघु स्तवनम् ॥

ढाल—आज माता जोगणी ने चालो जोवा जइये रे एहनी

भलौ वण्यो मुखड़ा नउ मटकौ, आंखड़ली अणियाली।
लटकालौ साहिब देखी नइ, तो सुं लागी ताली रे॥१॥
राजि म्हारा बीजा नइ किम मन री वाता कहियइ ॥आंकणी॥
ते पासिइ ऊभा नवि रहियइ, जे होवइ बहु मीता।
थे म्हारा छउ अन्तरजामी, मनडा रा मानीता रे॥२ रा०॥
आज मिल्यउ थानइ ऊमाही, दूधे जलधर वूठा।
प्रभु थारउ दर्शन देखन्ता, पाप दियइ पग पूठा रे॥३ रा०॥
हियड़उ छउ माहरउ हेजाल, सांझ सवार न देखइ।
थासूं प्रीत करण नइ आवइ, गिणइ दिवस निज लेखइ रे॥४॥
कर जोड़ी नइ थांसू इतरी, अरज करूँ सिरनामी।
सनमुख थउ शिवसुख कां नापउ, सी कीधी छउ खामी रे॥५॥
थांरउ जस में पहिला सुणियउ, ए प्रभु आश्या पूरउ।
तउ पोतानइ सेवक जाणी, चिन्ता किम नवि चूरउ रे॥६ रा०॥
जग मांहे तुं श्री चिन्तामणि, पारसनाथ कहावउ।
'विनयचन्द्र' नइ मुगति सूंपता, थारउ कासुं जावइ रे॥७ रा०॥

॥ श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ लघु स्तवनम् ॥

ढाल—वीर वखाणी राणी चेलणा जी, एहनी

अरज अरिहंत अवधारिये जी, चतुर चिन्तामणि पास।
आतुर दरसण निरखिवा जी, मुँकीये केम निरास॥१॥

दूषण ने पडयउ पातरै जी, तेह वगसौ महाराज।
वाह जउ दीजीयै मो भणी जी, आज तोहिज रहै लाज ॥२॥
एक पखउ मइ तो जाणीयो जी, स्वामि सेवक व्यवहार।
धवलड़ो दूध जिम देखिनैजी, हुं रच्यो सरल अनुहार ॥३॥
नेह कीजे निज स्वारथे जी, ते इहा को नहीं लाह।
तुं निरंजण सही माहरी जी, तिल भर कां नहिं चाह ॥४॥
पग भरि कवण ऊभौ रहे जी, जिहां नहिं लाव नै साव।
कहै 'विनयचन्द्र' गिरुवाहुज्योजी, हरस द्यौ देखिने दाव ॥५॥

॥ श्री पार्श्वनाथ गीतम् ॥

ढाल—सरवर खारो है नीर स० नयणां रो पाणी लागणो रैलो एहनी देशी

तूठा हे पास जिणद ।तू०। वूठा हे अमृत मेहडा हे लो ।वू०।
रूठा हे पातक वृन्द ।रू०। पूठा हे पग दे वापड़ा हे लो ।पू० ॥१॥
साचउ हे धरम सनेह ।सा०। लागउ हे प्रभु सुं माहरउ हे लो।
मुझ इकतारी हे एह ।मु०। नेह कियां विन किम सरइ हे लो ॥२॥
समकित जाग्यउ हे जोर ।स०। अशुभ करम दूरइ गया हे लो।
कुमति न चांपइ हे कोर ।कु०। संयम जोग वशिथया हे लो ॥३॥
प्रगट्यो हे ध्यान थी ज्ञान ।प्र०। उदय थयउ अनुभव तणो हे लो।
आतम भाव प्रधान ।आ०। सहज सतोष वध्यउ घणो हे लो ॥४॥
सहुमां प्रभुनो हे अंश ।स०। जेम घृतादिक खीर मा हे लो।
झीलइ हे मुझ मन हंस ।झी०। प्रभु गुण निर्मल नीर मां हे लो ॥५॥
जगव्यापी जिनराज ।ज०। तिल्थंकर तेवीसमउ हे लो।
एिंत सुग्य केवड हे काज ।ए०। चरणकमल प्रभुना नमउ हे लो ॥६॥

परमपुरुष श्री पास ।प०। प्रणम्यां तन मन उह्लसइ हे लो।
पूरइ हे सेवक आस ।पू०। 'विनयचन्द्र' हियड़े वस्या हे लो ॥७॥

॥ श्री स्वाभाविक पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—हाडानी

सुणि माहरी अरदास रे मन मोहनगारा, म्हारा प्राण पियारा।
आस पूरो रे वाल्हा पास, निपट न करि नीरास ।म०।
सास तणी परि तुँ मुंझ साभरे रे ॥१॥

माहरइ तुँ हिज सइण रे ।म०।
ताहरी मूरति मननी मोहनी रे।
निरखि ठरइ मुझ नयण रे ।म०।
हियड़ो हेजालू विकसैं माहरो रे ॥२॥
तुझ थी लागौ रंग रे ।म०।
लइणा दइणा नो कारण एह छे रे।
खिण न पड़े मन भंग रे ।म०।
संग न छोड़ुं जिनजी ताहरउ रे ॥३॥
ताहरौ मन नीराग रे ।म०।
राग घणौ रे मन में मोहरै रे।
ते किम पहुंचइ लाग रे ।म०।
एक हाथउ रे ताली नवि पड़इ रे ॥४॥
वलि एहवउ नहिं कोइ रे ।म०।
जेहनइ कहियइ रे मननी वातड़ी रे।

अलवि कह्या स्युं होइ रे ।म०।
मन ना चिंत्या रे कारज नवि सरइ रे ॥५॥
मोह मिथ्यामति भाव रे ।म०।
रचि मचि नइ घट माहि रहइ रे ।
स्युँ ताहरउ परभाव रे ।म०।
विमुख न थायइ अरियण एहवा रे ॥६॥
अधिक करइ आवाज रे ।म०।
राता माता रे हस्ती घूमता रे ।
ते मृगपति नउ लाज रे ।ते०।
एह औखाणउ जिनजी जाणियइ रे ॥७॥
कलिमा तूं कहिवाय रे ।म०।
दरियउ रे भरियउ गुण रयणे करी रे ।
दुख सहु दूरि गमाय रे ।म०।
लहिर धरउ महिर तणी हिवइ रे ॥८॥
भव जल निधि थी तारि रे ।म०।
विरुद धायइ रे साचउ तउ सही रे ।
'विनयचन्द्र' जलधार रे ।म०।
वरसउ रे मगलइ पिण जोवइ नहीं रे ॥९॥

॥इति श्री स्वाभाविक पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

॥ श्री नारिंगपुर पार्श्वनाथ स्तवनम् ॥

ढाल—आठ टकइ कंकण लीयउ री नणदी थिरकि रहयउ मोरी बांह,
कंकणउ मोल लीयउ एहनी देशी

सुनिजर ताहरी देखिनइ रे जिनजी सफल थई मुझ आस।
मोरउ मन मोहि रह्यउ, हारे जैसे मृग मधुर ध्वनि गीत ॥मो०॥
तुं माहरउ मन मइं वस्यो रे, जि० श्री नारंगपुर पास ॥१॥
तुझ मुख कमल निहालिवा रे, जि० रहती सबल उमेद ॥मो०॥
ते तुझ नइं मिलियां पछी रे जि० भागउ मन रउ भेद ॥मो०॥२॥
हुं सेवक छुं ताहरउ रे जि० तुं साहिब सुप्रमाण ॥मो०॥
तें मन हेस्यो माहरउ रे जि० भावइ तउ जाण म जाण ॥मो॥३॥
खिण इक जउ तुझ नइ तजुं रे जि० तउ उपजै अंदोह ॥मो०॥
धरती पिण फाटइ हियो रे जि० पाणी तणय विछोह ॥मो०॥४॥
ताहरी सूरति नउ सदा रे जि० धरिस्युं निशि दिन ध्यान ।मो०।
जिण तिण मां मन घालता रे जि० न रहै माहरउ मान ।मो०।५।
चरण न मेल्हुं ताहरा रे जि० रहिस्युं केडइ लागि ॥मो०॥
फल प्रापति पिण पामस्युं रे जि० जेह लिखी छइ भागि ।मो०।६।
मइं तउ कीधउ मो दिसा रे जि० ताहरउ ऊपरि मोह ॥मो०॥
विनयचन्द्र कहै माहरी रे जि० नगली तुझ ने मोह ॥मो०॥७॥

रहनेमि राजीमति स्वाध्याय

राग—हींडोल

शिवादेवी नंदन चरण वंदन चली राजुल नारि ।
प्रियु संगि रागी मनो मागी चलत लागी वार ॥

निज प्राणपति कौ नाम जपती होत तृपती वाल ।
तहाँ मास पावस कइ उदै सैं अउसउ जगत कृपाल ॥१॥
इण भाति सउं सखि आयउ वरपाकाल,
सउ तउ वरनत कवि सुविसाल ॥आकणी॥
सजि वुँद मारी हर्पकारी भूमि नारी हेत।
झरलाय निर्झर झरत झरझर सजल जलद असेत ॥
घन घटा गर्जित छटा तर्जित भये जर्जित गेह।
टव टवकि टवकत झवकि झवकत विचि विचि वीज कि रेह ॥२॥
अतहिं अवाजइं गगन गाजइ वायु वाजइ त्युंहि।
दिग चक्र झलकइ खाल खलकइ नीर ढलकइ भुंहि ॥
द्रुग श्याम वादर देखि दादुर रटत रस भरि रइन ।
वन मोर वोलइ पिच्छ डोलइ द्विरद खोलइ पुनि नइन ॥३॥इ०॥
उल्लसित हीयरौ करि पपीयरौ करत प्रियु प्रियु मोर।
विरह मइं पीरी अति अधीरी डरत विरहनि जोर
अंधकार पसरइ वैर विसरइ परम्पर भूपाल
सर्वरी शंका दैत डका दिवसन मइं घरीयाल ॥४॥इ०॥
जहाँ परत धारा अति उदारा जानि गृह जल यन्त्र
स्वाधीन वनिता सौख्य जनिता करत कंत निमंत्र
मदन के माते रंग राते रसिक लोक अपार
वइठि करि गोष्टइं मनइं जोयइं गावत मेघ मलहार ॥५॥इ०॥
पंचरंग पोंप अधिक ओपइं इन्द्र धनुष नधीर।
मक मणि मोहइ चित्त मोहइ नर सरित के तीर ॥

तहाँ करन क्रीड़ा मुखइ बीड़ा चावती त्रिय जात।
केसरी सारी मूल भारी पहिरि कै हर्ष न मात ॥६॥इ०॥
समि सूर ढाकइ जहां तहां के पंथ पूरे नीर।
वकुल के वन में छिनकि छिन मइं झकोरतहिं समीर॥
वहु सलिल पाए वेलि छाए सघन वृक्ष सुहात।
झंकार भमरे करत गुणरे चुंवत पल्लव पात ॥७॥इ०॥
अद्रिसइं उतरी भरी जलसउं नदी आवत पूर।
करणी के दरखत निकट निरखत छिन करत चकचूर॥
सूकत जवासौ तरु निवासौ करत पंखी वृन्द।
घन विस्तारे सर संभारे हंस मिथुन निरदंद ॥८॥इ०॥
रंगइ रसीली निपट नीली हरी प्रगटत ज्यांहि।
डोलत अमोला मृदु ममोला लाल से तिन मांहि॥
उच्छाह सेती करत खेती करसनी सुविचार।
सब लोक कुं आनंद उपज्यौ व्रज्यौ दै दुरित प्रचार ॥९॥इ०॥
बरसात इन परि झरी मंडइ छिन न खंडइ धार।
राजीमती के वस्त्र भीने सबल झीने सार॥
एकन गुफा मे जाहि तामइं सुकाए सब चीर।
भई नगन रूपइं अति सरूपइं निरखी नेमि के वीर ॥१०॥इ०॥
निरखि कैं नागी तुरत जागी मदन नृप की छाक।
घट भ्रमन ताकौ लगि मनाकौ ज्युं कुलाल की चाक॥
चिहुं ओर घेरी अंग हेरी नृप सुता गुरु काज।
कहै वचन ऐसे अटपटे से सुनत ही आवै लाज ॥११॥इ०॥

हुं गुफावासी नित उदासी रहत हुं इन ठोर।
म्यावास तोकुं मिली मोकुं चित लीयउ तें चोर॥
भोगकउ हुं तउ अति भिख्यारी करौ प्यारी प्यार।
अव विरह टारौ हृदय ठारौ मिलौ मिलौ प्रान आधार॥१२॥इ
तव चीर पहिरउ सवद गुहिरइ अग करिकइ गृढ।
राजुल सयांनी वदत वानी सुनि अग्यानी मूढ॥
मुनि मागे मूकइ चित्त चूकइ वृथा तु इन वेर।
क्यु व्रत विगोवउ लाज खोवउ रहि रहि जियकुं फेरि॥१३॥ इ० ॥
निद्रान्ध सिंधुर वहुत वन्धुर उर्द्ध कन्धर होय।
जव धरत अंकुश सिर महावत ठौर आवत सोय॥
त्युं सदुपदेश विशेप देकइ विमल एकइ वइन।
वूझयौ सो रहनेमि विपयी गई जहां यदुपति सइंन॥१४॥इ० ॥
यु सुलभ वोधी आतम सोधी गये सुगति मझार।
कलियुगइं उमगइं नाम जाकउ लेत है संसार॥
धरि ज्ञान अन्तर दृशा सुदृसा मनह मच्छर छोडि।
कवि विनयचन्द्र जिनेन्द्र भावें जपत है कर जोरि॥ १५ ॥इ० ॥

इति श्री रहनेमि राजीमत्योः स्वाध्यायः

॥ श्री स्नेह निवारणे स्थूलिभद्रमुनि सज्झाय ॥

राग—केदारो, ढाल—मेरे नन्दना, एहनी

सांभलि भोली भामिनी रे हां, परदेसी नें नाथ। नेह न कीजियें।
भमर तणी परि जे भमै रे हां, ते नावै केहनें हाथ॥ नेह० ॥१॥

नेह थी नरक निवास, नेह प्रबल छइ पास।
नेहे देह विनाश, नेह सबल दुख रास ॥ नेह० ॥ आ० ॥
परदेशी तउ प्राहुणा रे हा, मेल्ही जाय निराश। नेह०।
तिण थी केहउ नेहलउ रे हां, न रहे जे थिर वास। ने० ॥२॥
पहिलि मिलीयइ तेह सुं रे हां, करियइ हास विलास।ने०।
मिलि नइ वीछडिवौ पड़े रे हा, तव मन होइ उदास। ने० ॥ ३॥
वाल्हां नइ वउलावतां रे हां, पीड़इ प्रेमनी झाल। ने०।
हीयड़ौ फाटइ अनि घणु रे हां, नांखइ विरह उछालि। ने०॥४॥
वलतां मुंड भारणि हुवे रे हां, अंग तपइ अंगार। ने०।
आखड़ियइ आसू पड़इ रे हा, जिम पावस जल धार। ने० ॥५॥
मत किणही सुं लगिज्यो रे हां, पापी एह सनेह। ने०।
धुखइ न धुंओं नीसरइ रे हां, वलइ सुरंगी देह। ने० ॥ ६ ॥
कोशा नइ स्थूलिभद्र कहइ रे हां, नेह नी वात न भाखि।ने०।
तिण कीधइ ही मारियइ रे हा, विनयचन्द्र द्यै साखि ।ने०॥७॥

श्री स्थूलिभद्र बारहमासा

ढाल—चउमासियानी

आपाढ़इ आशा फली, कोशा करइ सिणगारो जी।
आवउ थूलिभद्र वालहा, प्रियुड़ा करूं मनोहारो जी ॥
मनोहार सार शृङ्गार रसमां, अनुभवी थया तरवरा।
वेलड़ी वनिता ल्यइ आलिंगन, भूमि भामिनी जलधरा॥
जलराशि कंठइ नदी विलगी, एम बहु शृंगार मां।
सन्मिलित थइ नइ रहे अहनिशि, पणि तुम्हें ब्रत भार मा ॥ १ ॥

श्रावण हास्य रसइं करी, विलसउ प्रीतम प्रेमइ जी।
योगी भोगी नइ घरे, आवण लागा केमइ जी॥
तउ केम आवै मन सुहावैं, वसी प्रमदा प्रीतड़ी
एह हासी चित विमासी, जोअउ जगति किसी जड़ी।
झरहरउ पावस मेघ वरसइ, नयण तिम मुख आंसुआं।
तिम मलिन रूपी बाह्य दीसउ, तिम मलिन अंतर हुआं॥२॥
भादउ कादउ मचि रह्यउ, कलिण कल्या वहु लोकोजी।
देखी करुणा ऊपजें, चन्द्रकान्ता जिम कोको जी॥
कोक परि विहू वोक करती, विरह कलणइ हुं कली।
काढियइ तिहा थी वाह झाली, करुणा रस नउ अटकली॥
मयमत्त तटिनी अनइ नारी, मेह प्रीतम नेह थी।
अवसरइ जउ ते काम नावउ, स्युं करीजै तेह थी॥३॥
आसू आस्विक दिहाड़ला, एकलडां किम जायो जी।
रौद्र रसइ मुझ मन घणु, नित प्रति अति अकुलायोजी॥
अकुलाय धरणि तरुणी तरणी, किरण थी शोपत धरें।
तपपति परउ घन फंत अलगुं, करी घन वेदन करें।
तिम तुम्हे पणि विरह तापउ, तापवउ छउ अति घणुं।
चांद्रणी शीतल झाल पावक, परउ कहि केनइ भणुं॥४॥
काती कौतुक साभरइ, वीर करइ संग्रामो जी।
विकट कटक घाला घणु, तिम कामी निज धामोजी।
निज धाम कामी कामिनी थे, लड़इ वेधक वयण सुं।
रणतूर नेउर खड्ग वेणी, धनुष रूपी नयण सुं।

ते वीर रस मां थया कायर, जेह योगी बापड़ा।
थरथरइ फिरता तेह दीसइ, उदासीन पणइ खड़ा ॥५॥
भयानक रसइ भेदियउ, मगसिर मास सनूरो जी।
मांग सिरइ गोरी धरइ, वर अरुणी मा सिन्दूरो जी ॥
सिन्दूर पूरइ हर्ष जोरइ, मदन झाल अनल जिसी।
तिहां पड़इ कामी नर पतंगा, धरी रंगा धसमसी।
वलि अधर सधर सुधारसइं करि सींचि नव पल्लव करइ।
तिण प्रीति रीतइं भीति न हुवइ एम कोशा उच्चरइ ॥६॥
रस वीभत्से वासियउ, पोष महीनउ जोयौ जी।
दोषी पोषउ दिन दूबलुं, हिम संकोचित होयो जी ॥
संकोच होवइ प्रौढ रमणी, संगथी लघु कंत ज्युं।
तिम कंत तुमचउ वेष देखी, मउं वीभत्स पणुं भजुं ॥
ए प्रौढ रयणी सयण सेजइं एकला किम जावए।
हेमंत ऋतु मइं प्रिउ उछंगइ, खेलवुं मन भाव ए ॥७॥
माघ निदाघ परइं दहै, ए अद्भुत रस देखुं जी।
शीतल पणि जड़ता घणुं, प्रीतम परनिग्र पेखुं जी ॥
पेखुं तुम्हा सिन साधु त्रुग पणि रह्या मुझ हृदयस्थलइ।
ए मृषा सम्प्रति तुझ विना मुझ प्राण क्षण क्षण टलवलइ ॥
इण परइं व्रत ना भंग दीसइ परिग्रह भणी आदिया।
तउ एह अचरिज रस विशेषइं शुद्ध चारित्र भाविया ॥८॥
फागुन शान्त रसइ रमइं, आणी नव नव भावां जी।
अनुभव अतुल वसंत मां, परिमल सहज सभावां जी ॥

सहज भाव सुगंध तेलइं, पिचरकी सम जल रसइं ।
गुण राग रंग गुलाल उडइ, करुण ससचोही वसइ ॥
परभाग रंग मृदंग गूँजइ, सत्व ताल विशाल ए ।
समकित तंत्री तंत झणकइ, सुमति सुमनस माल ए ॥९॥
चैत्रइ विचित्र थइ रही, अंब तणी वनरायो जी ।
धुड शाखा अंकुरित थइ, सोह वसंतइ पायो जी ॥
पाई वसंतइ सोह जिण परि, प्रियागमनइं पदमिनी ।
सिणगार विन पिण मुदित होवइ, प्रेम पुलकित अंगिनी ॥
रति हास्य मुख अड़ स्थायि भावइ, शोभती कोशा कहइ ।
हुं कामिनी गजगामिनी मुझ, तो विना मन किम रहइ ॥१०॥
वेशाखइ वन फूलीया, द्राख रसाल सुसाखइ जी ।
अंब सु कलरव कोकिला, पंचम रागइं भाखइ जी ॥
भाखइ तिहां वलि भाव आठे, सरस सात्विक सुखकरा ।
पुलक स्वेद अव्यक्त स्वर नइं स्थंभ आंसू निर्झरा ॥
इहां काम केरी दस अवस्था, धरइ देहइ दंपती ।
प्रिउ देखि मुझ नइ तेह प्रगटे, कोशा मुख इम जंपती ॥११॥
जेठ दीहाड़ा जेठ ना, लागइ ताप अथाहो जी ।
विरहानल तपइं हियइ, प्रियु तुम चंदन थांहो जी ॥
थांह चंदन सुगम सेव्यइ, भाव संचारिक वधइ ।
तेत्रीस धृति मति स्मरण लज्जा शोक निद्रादिक सधइ ॥
उन्मत्तता आनंद भय मद मोह उत्सुक दीनता ।
चालंभ वाधइ ए विशेषइ, रहइ केम निरीहता ॥१२॥

श्री स्थूलिभद्र मुणिंदना, भणीया बारहमासो जी।
नवरस सरस सुधा थकी, सुणतां अधिक उल्लासो जी॥
उल्लास धरि ऋषिराज गायो, जिण रखायउ जगतमां।
निज नाम अति अभिराम चुलसी, चउवीसी शीलवंतमां॥
गुरुराज हर्षनिधान पाठक, ज्ञानतिलक प्रसाद सुं।
गुर्जरा मंडन राजनगरइं, 'विनयचंद्र' कहइ इसुं॥१३॥

॥ श्री जिनचंद्रसूरि गीतम् ॥

वड़ वखती गुरु नित गाजै, वलि दिन दिन अधिक दिवाजै।
सहु गच्छपति सिर छाजै॥१॥ राजेश्वर पाटियइ पाउधारउ।
इक वीनतड़ी अवधारो।पाटोधर०। श्रीसघना वंछित सारउ॥रा०
श्रीजिनधर्मसूरीसर पाटइ, पूज्य थाप्या घणै गहगाटइं।
नर नारी आगैं जुड़ै थाटइं॥ रा०॥ २॥
वंशे बहुरा सिरदार, तात साचलदास मल्हार।
माता साहिबदे उरि हार॥ रा०॥ ३॥
हंस परि माधुरी सी चाल, अति अद्भुत रूप रसाल।
मारग मिथ्यात उदाल॥ रा०॥ ४॥
तेजे करि जाणं सूर, शशिधर परि शीतल पूर।
जसु निलवट अविकउ नूर॥ रा०॥ ५॥
नित नित चढती कला राजइ, युगवर जिनचंद विराजइ।
जसु भेट्यां भव दुख भाजइ॥ रा०॥ ६॥
छतीस गुणे करि सोहइ, गुरु भविक तणा मन मोहइ।
जगि इण समवड़ नहि कोइ॥ रा०॥ ७॥

नित पालै पंचाचार, षटकाय रक्षा करें सार।
उज्ज्वल उत्तम व्रत धार ॥ रा० ॥ ८ ॥
धन नगरी नइ धन देश, जहाँ सद्गुरु करें निवेश।
कीरति जग मे सलहेस ॥ रा० ॥ ६ ॥
वदो भवियण हित आणी, पूजजी नी मीठी वाणी।
सांभलता अमिय समाणी ॥रा०॥१०॥
मानइ जेहनइ राण राया, प्रणमीजैं प्रहसम पाया।
मुनि 'विनयचन्द्र' गुण गाया ॥रा०॥११॥

ग्यारह अंग सज्झाय

(१) श्री आचारांग सूत्रसज्झाय

देशी—हठीला वयरी नी

पहिलौ अंग सुहामणो रे, अनुपम आचारांग रे सगुणनर
वीर जिणंदइ भाखीयउ रे लाल, उवाई जास उपांग रे सगुणनर।
वलिहारी ए अंगनी रे लाल, हूं जाउं वार वार रे स०
विनय गोचरी आदि दे रे लाल,
जिहां साधु तणउ आचार रे स० ।व०। आंकणी॥
सुयक्खंध दोइ जेहना रे, प्रवर अध्ययन पचीस रे स०
उद्देशादिक जाणियइ रे लाल, पंच्यासी सुजगीस रे स० ।व०। २॥
हेत जुगति करी सोभता रे, पद अढार हजार रे स०
अक्षर पदनइ छेहड़इ रे लाल, संख्याता श्रीकार रे स० ।व०। ३॥
गमा अनंता जेहमां रे, वलि अनन्त पर्याय रे स०
त्रस परित्त तउ छइ इहां रे लाल, थावर अनन्त कहाय रे स० ॥४॥
निबद्ध निकाचित शासता रे, जिन प्रणीत ए भाव रे स०
सुणता आतम उल्लसइ रे लाल, प्रगटइ सहज सभाव रे स० ॥५॥
श्रावक वारू श्रावका रे, अंग धरी उल्लास रे स०
विधिपूर्वक तुम्हे साभलउ रे, लाल गीतारथ गुरू पास रे स० ॥६
ए सिद्धान्त महिमा निलौ रे, उतारइ भव पार रे स०
'विनयचन्द्र' कहइ माहरइ रे लाल एहिज अंग आधार रे स० ॥७॥

॥इति श्री आचारांगसूत्र स्वाध्यायः॥

(२) श्री सूयगडांग सूत्र सज्झाय

देशी—रसियानी

वीजउ रे अंग हिवइ सहु सांभलौ,
मनोहर श्री सूगडांग। मोरा साजन।
त्रिण्हिसउ त्रेसठि पाखंडी तणउ,
मत खंड्यउ धरि रंग। मोरा साजन।
मीठी रे लागइ वाणी जिन तणी, जागइ जेह थी रे ज्ञान।मो०।
ए वाणी मन भाणी माहरउ, मानु सुधा रे समान।मो० मी०।
रायपसेणी उपाग छइ जेहनु, एतउ सूत्र गंभीर।मो०।
जाणउ रे अर्थ वहुश्रुत एहना, एतउ क्षीर नीरधि नुरे नीर मो०।२।
एहना रे सुयक्खंध दोइ छइ सही, वलि अध्ययन त्रेवीस।मो०।
उद्देशा समुद्देशा जिहां भला, संख्यायइं रे तेत्रीस मो० ॥३॥
नय निक्षेप प्रमाणइ पूरिया, पद छत्रीस हजार।मो०।
संख्याता अक्षर पद छेहडइ, कुण लहउ एहनु रे पार मो० ॥४॥
गमा अनंता वलि पर्याय ना, भेद अनंत जेह मांहि।मो०।
गुण अनंत त्रम परित कह्या वली, थावर अनंता रे ज्यांहि ॥५॥
निवद्ध निकाचित जे सास्वय कह्या, जिन पन्नता रे भाव।मो०।
भाखी रे सुन्दर एह परूवणा, चरण करण नी रे जाव॥मो० ६॥
करियइ भगति युगति ए सूत्रनी, निश्चय लहियइ मुक्ति।मो०।
विनयचन्द्र कहइ प्रगटइ एह थी, आतम गुण नी रे शक्ति॥७॥

॥ इति श्री सूयगडांग सूत्र सज्झाय ॥

(३) श्री स्थानांग सूत्र सज्झाय

ढाल—आठ टके कंकणो लीयो री नणदी थिरकि रही मोरी बाँह एदेशी

त्रीजउ अंग भलउ कहाउ रे जिनजी, नामइ श्री ठाणांग।
मोरो मन मगन थयउ। हां रे देखि देखि भाव,
हां रे जिहां जीवाजीव स्वभाव।मो०। आंकणी ॥
सबल युगति करि छाजतउ रे जिनजी, जीवाभिगम उपांग ॥१॥

एह अंग मुझ मन वस्यउ रे जिनजी, जिम कोकिल दिल अंब।
गुहिर भाव करि गाजतउ रे जिनजी, आज तउ एह आलंब ॥२॥

कूट शैल शिखरी शिला रे जिनजी, कानन नइ वलि कुण्ड।मो०।
गहर आगर द्रह नदी रे जिनजी, जेहमा अछइ उद्दण्ड मो० ॥३॥

दश ठाणा अति दीपता रे जिनजी, गुण पर्याय प्रयोग।मो०।
परित्त जेहनी वाचना रे जिनजी, संख्याता अनुयोग ॥४॥

वेष्ट सिलोक निज्जुत्तिते रे जिनजी, संगहणी पडिवत्ति।मो०।
ए सहु संख्याता इहां रे जिनजी, सुणता उल्लसइ चित्त।मो० ५॥

सुयक्खंध एक राजतउ रे जिनजी, दश अध्ययन उदार।मो०।
उद्देशा एकवीस छइ रे जिनजी, पद बहोत्तर हजार।मो० ६॥

रागी जिन शासन तणा रे जिनजी, सुणउ सिद्धांत वखाण।मो०।
विनयचन्द्र कहइ ते हुवइ रे जिनजी, परमारथ ना जाण।मो०७॥

॥ इति श्री स्थानांग सूत्र स्वाध्यायः ॥

(४) श्री समवायांग सूत्र सज्झाय

चाल—थांहरइ महला ऊपरि मेर झरोखे कोइली हो लाल झरो०

चउथउ समवायांग सुणौ श्रोता गुणी हो लाल ।सु०।
पन्नवणा उवंग करी सोभा वणी हो लाल ।क०।
अर्द्ध मागधी भाषा साखा सुरतरु तणी हो लाल ।सा०।
समकित भाव कुसुम परिमल व्यापी घणी हो लाल ।प०॥१॥
जीव अजीव नइ जीवाजीव समास थी हो लाल कि जी०
लहीयइ एह मा भाव विरोध कोई नथी हो लाल वि०
भागा तीन स्वसमयादिकना जाणीयइ हो लाल आदि०
लोक अलोक नइ लोकालोक वखाणीयइ हो लाल कि लो० ॥२॥
एक थकी छइ सत समवाय परूवणा हो लाल स०
कोडाकोडि प्रमाण कि जाव निरूवणा हो लाल कि जा०
बारस विह गणिपिटक तणी संख्या कही हो लाल त०
शासता अर्थ अनन्त कि छइ गहना सही हो लाल कि० ॥३॥
सुयक्खंध अध्ययन उद्देशादिक भला हो लाल उ०
संख्यायइं एक एक प्रत्येकइं गुणनिला हो लाल प्र०
पद एक लाख चउमाल सहस्र ते उत्तरा हो लाल स०
पद नइ अग्र उदग्र संख्याता अक्खरा हो लाल सं० ॥४॥
भाष्य चूर्णि निर्युक्ति करी मोहइ सदा हो लाल क०
सुणतां भेद गंभीर त्रिपति न हुवइ कदा हो लाल तृ०
देज न मावइ अंग कि अंतरगति हसी हो लाल कि हं०
जल परसंतइ जोर कि कुग न हुवइ खुसी हो लाल कि कु० ॥५॥

जाग्यउ धरम सनेह जिणंद सुँ माहरउ हो लाल जि०
तज्या शास्त्र मिथ्यात सूत्र जाण्यउ खरउ हो लाल सू०
जिम मालती लही भृंग करीरउं नवि रहइ हो लाल क०
ईश्वर सिर सुरगंग तजी पर नवि वहइ हो लाल त० ॥६॥
ए प्रवचन निग्रंथ तणउ जुगतइं वडउ हो लाल त०
साकर सेलडी द्राख थकी पिण मीठडउ हो लाल थ०
सी कहीयइ वहु वात 'विनयचन्द्र' इम कहइ हो लाल वि०
एहना सुणिनइ भाव श्रोता अति गहगहइ हो लाल श्रो० ॥७॥

॥ इतिश्री समवायांग सूत्र स्वाध्यायः ॥

(५) श्री भगवतीसूत्र सज्झाय

देशी—पथीडानी

पंचम अंग भगवती जाणियउ रे, जिहा जिनवर ना वचन अथाह रे
हिमवंत पर्वत सेती नीकल्या रे, मानु गंगा सिन्धु प्रवाह रे ।१।पं०
सूरपन्नती नामइ परगड़उ रे. जेहनउ छइ उद्दाम उवंग रे।
सूत्र तणी रचना दरीया जिमी रे, माहिला अर्थ ते सजल तरंग रे
इहां तउ सुयक्खंध एक अति भलउ रे,
　　एक सउ एक अध्ययन उदार रे।
दस हजार उद्देशा जेहना रे,
　　जिहाँ कणि प्रश्न छतीस हजार रे ॥३॥पं०॥
पदतउ दोइ लाख अरथइं भर्‌या रे,
　　ऊपरि सहस अठ्यासी जाणि रे।

लोकालोक स्वरूप नी वर्णना रे,
विवाहपन्नती अधिक प्रमाण रे ॥४॥पं०॥
करियइ पूजा अनइ प्रभावना रे,
धरियइ सद्गुरु ऊपरि राग रे।
सुणियइ सूत्र भगवती रंग सुं रे,
तउ होइ भवसायर नुं ताग रे ॥५॥पं०॥
गौतम नामइ नाणुं मुकीयइ रे,
सम्यग् ज्ञान उदय होइ जेम रे।
कीजइ साधु तथा साहमी तणी रे,
भगति जुगति मन आणी प्रेम रे ॥६॥पं०॥
इण परि एह सूत्र आराधता रे,
इण भवि सीझइ वंछित काज रे।
परभवि विनयचन्द्र कहइ ते लहइ रे,
मोहन मुगतिपुरी नउ राज रे ॥७॥पं०॥
इतिश्री भगवती सूत्र स्वाध्यायः।

(६) श्री ज्ञातासूत्र सज्झाय

ढाल—कित लाख लागा राजाजी रे मालीयइ जी एहनी।

छट्ठउ अंग ते ज्ञातासूत्र वखाणियइजी,
जेहना छइ अर्थ अधिक उदण्ड हो।
म्हारी सुणिज्यो धरि नेह सिद्धान्त नी वातडी जी।
श्रवणे सुणतां गाढउ रस उपजइ जी,
मधुरता तर्जित जिण मधुखंड हो।१।म्हा०॥

जम्बूदीव पन्नती उपाग छइ एहनुं जी,
इण माहे जिनपूजा नी विधि जोर हो ।म्हां०।
अर्चक मुणि परम शातरस अनुभवइ जी,
चर्चक मुणि करइ सभा मा सोर हो ।म्हा०।२।
नगर उद्यान चैत्य वनखंड सोहामणा जी,
समोशरण राजा ना मात नइं तात हो ।म्हां०।
धर्माचारिज धर्मकथा तिहां दाखवी जी,
इहलोक परलोक ऋद्धि विशेष सुहात हो ।म्हा०।३।
भोग परित्याग प्रव्रज्या पर्यवा जी,
सूत्र परिग्रह वारू तप उपधान हो ।म्हां०।
संलेहण पचखाण पादपोपगमनता जी,
स्वर्गगमन शुभकुल उतपत्ति प्रधान हो ।म्हा०।४।
वोधिलाभ वलि तंत ते अंत क्रिया कही जी,
धर्मकथा ना दोड अछइ श्रुतखंध हो ।म्हां०।
पहिला ना उगणीस अध्ययन ते आज छइ जी,
बीजा ना दस वर्ग महा अनुबंध हो ।म्हा०।५।
उंठ कोड़ि तिहां सबल कथानक भाखीयाजी,
भाख्या वलि उगणतीस उद्देस हो ।।मां०।।
संख्याता हजार भला पद एहना जी,
एह थकी जायउ कुमति किलेस हो ।।६ मां०।।
विनय करै जे गुरु नो बहु परइजी,
तेहनइ श्रुत सुणतां बहु फल होइ हो ।।मां०।।

ते रसीया मन वसीया विनयचंद्र नउ जी,
सउ माहि मिलउ जोया एक कइ दोय हो ।७ मा०॥

॥ इति श्री ज्ञाता धर्मकथांग स्वाध्याय ॥

(७) श्री उपासकदसांग सूत्र सज्झाय

हिवइ सातमउ अंग ते सांभलउ, उपासक दशा नामउ चंग रे ।
श्रमणोपासकनी वर्णना, जस चन्दपन्नति उवंग रे ॥१॥
मन लागउ रे मोरउ सूत्र थी, एतउ भव वइराग तरंग रे ।
रस राता गुण ज्ञाता लहउ, परमारथ सुविहित संग रे ॥२॥
इण अंग सुयखंध एक छइ, अध्ययन उद्देश विचार रे ।
दस दस संख्यायइं दाखव्या, पद पिण संख्यात हज्जार रे ॥३॥
आणंदादिक श्रावक तणउ, सुणता अधिकार रसाल रे ।
रस लागइ जागउ मोहनी, श्रोताजन नउ ततकाल रे ॥४॥
श्रोता आगलि तउ वाचता, गीतारथ पामइ रीझ रे ।
जे अद्धदग्ध समझइ नहीं, तेह सुं तो करिवी धीज रे ॥५॥
दश श्रावक तउ इहां भाखिया, पिण सूत्र भण्यउ नहि कोई रे ।
ते माटइं शुद्ध श्रावक भणी, एक अर्थनी धारणा होइ रे ॥६॥
साचो होअइ तेह प्ररूपियउ, निस्संक पणउ सुजगीस रे ।
कवि विनयचन्द्र कहइ स्युं थयउ, जउ कुमती करिस्यइ रीस रे॥७॥

॥ इति श्री उपासक दसांग सूत्र स्वाध्याय ॥

(८) श्री अंतगड़दशांग सूत्र सज्झाय

ढाल—वीर वखाणी राणी चेलणाजी, एहनी

आठमो अंग अंतगडदशाजी, सुणि करउ कान पवित्र।
अंतगड़ केवली जे थया जी, तेहना इहाँ रे चरित्र ॥१॥ आ०
कर्म कठिन दल चूरता जी, पूरता जगतनी आस।
जिनवर देव इहां भासता जी, शासता अर्थ सुविलास ॥२ आ०॥
सकल निक्षेप नय भंग थी जी, अंगना भाव अभंग।
सहज सुख रंगनी तलिपका जी, कलिपका जास उवंग ॥३ आ०॥
एक सुयखंध इणि अंग नउजी, वर्ग छइ आठ अभिराम।
आठ उद्देशा छइ वली जी, संख्याता सहस पद ठाम ॥४ आ०॥
आठमा अंग ना पाठमइं जी, एहवउ छइ रे मीठास।
सरस अनुभव रस ऊपजइजी, संपजइ पुण्य नी राशि ॥५ आ०॥
विषय लपट नर जे हुवइ जी, निरविषयी सुण्यां थाइ।
जिम महाविष विषधर तणउ जी, नाग मंत्रइ सुण्या जाइ ॥६॥
अमृत वचन मुख वरसती जी, सरसती करउ रे पसाय।
जिम विनयचन्द्र इण सूत्रना जी, तुरत लहइ अभिप्राय ॥७ आ०॥

॥ इति श्री अंतगड़ दशाग स्वाध्याय ॥

(९) श्री अणुत्तरोववाई सूत्र सज्झाय

देशी—नणदल बींदली दे, एहनी

नवमो अंग अणुत्तरोववाई, एहनी रुचि मुझ नइ आई हो।
श्रावक सूत्र सुणउ॥
सूत्र सुणउ हित आणी, एतो वीतराग नी वाणी हो ॥१ श्रा०॥

जस कल्पावतंशिका नामइ, सोहइ उवंग प्रकामइ हो ।।आ०।।
एतो आगम नइ अनुकूला, मानु मेरुशिखर नी चूला हो ।।२।।
ए सूत्र नु नाम सुणीजइ, तिम तिम अंतरगति भीजइ हो ।।आ०।।
प्रगटइ कोई नवल सनेहा, एह थी उलसइ मोरी देहा हो ।आ० ३।।
अणुत्तर सुरपद जे पाया, तेहना गुण इण मा गाया हो ।।आ०।।
नगरादिक भाव वखाण्या, ते तउ छट्ठइ अगइ आण्या हो ।।४।।
इहा एक सुयक्खंध वारू, त्रिण्ह वग वली मनोहारू हो ।।आ०।।
उद्देशा त्रिण्ह सनूरा, संख्यात सहस पद पूरा हो ।।आ० ५।।
अम्हे सूत्र सुणावुं तेहनइ, सारी श्रद्धा होवइ जेहनइ हो ।।आ०।।
श्रोता थी प्रीति जगावु, निंदक नइ मुंह न लगावुं हो ।।आ० ६।।
जे सुणता करइ चकोर, ते तउ माणस नहीं पिण ढोर हो ।।आ०।।
कवि विनयचन्द्र कहइ साचइ, श्रुत रंगइ सहु को राचइ हो ।।७।।
।। इति श्री अणुत्तरोववाई सूत्र स्वाध्याय ।।

(१०) श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र सज्झाय

ढाल—आघा आम पधारो पुजि

दशमउ अंग सुरंग सोहावइ, प्रश्नव्याकरण नामइं ।
सूत्र कल्पतरू सेवउ तेतइ, चिदानन्द फल पामइ ।।१।।
आवउ आवउ गुण ना जाण, तुम्ह नइ सूत्र सुणावुं ।।आ०।।
पुष्फली जिम परिमल महकइ, गुण पराग नइ रागइ ।
तिम उवंग पुप्फिका फूलनइ, जोर जुगति करि जागइ ।।२ आ०।।
अगुष्टादिक जिहां प्रकास्या, प्रश्नादिक अति रूडा ।
ते छइ अष्टोतर सत एतइं, सूत्र मध्य मणि चूडा ।।३ ।।आ०।।

आश्रव द्वार पांच इहां आण्यां, पांचे संवर द्वारा।
महामंत्र वाणी मां लहीयइ. लवधि भेद सुखकारा ॥४॥आ०॥
सुयक्खंध एक दशमउ अंगउ, पणयालीस अज्झयणा।
पणयालीस उद्देश वलीपद, सहस संख्यात नी रयणा ॥५॥आ०॥
जे नर सूत्र सुणइ नहि काने, केवल पोषइ काया।
माया मांहि रहइ लपटाणा, ते नर इम ही जाया ॥६॥आ०॥
सूत्र मांहि तउ मार्ग दोइ छइ, निश्चय नइ व्यवहारा।
'विनयचन्द्र' कहइ ते आदरीयउ, तजि मद मदन विकारा ॥७॥आ०

॥ इतिश्री प्रश्न व्याकरण स्वाध्यायः ॥

(११) श्रीविपाकसूत्र सज्झाय

ढाल—तारि करतार संसार सागर थकी, एहनी

सुणउ रे विपाक श्रुत अंग इग्यारमउ,
तजउ विकथा वृथा जे अनेरी।
ललित उचंग जस प्रवर पुप्फचूलिका,
मूलिका पाप आतंक केरी ॥ १॥सु० ॥
अशुभ विपाक सम दुक्रत फल भोगवी,
नरक मा गमक जे थयां प्राणी।
सुकृत फल भोगवी स्वर्ग मा जे गया,
तास वक्तव्यता इहां आणी ॥२॥सु०॥
दोइ श्रुतखंध नइ वीस अध्ययन वलि,
वीस उद्देस इहां जिन प्रयुंजइ।

सहस संख्यात पद कुन्द मचकुन्द जिम,
बहुल परिमल भ्रमर चित्त गुंजइ ॥३॥सु०॥

सरस चंपकलता सुरभि सहु नइ रुचइ,
अन्य उपगार नी बुद्धि माटइ।
सूत्र उपगार तेहथी सबल जाणियइ,
जेहथी पुरुष सुख अचल खाटइ ॥४॥सु०॥

बंध नइ मोक्ष ना बेउं कारण अछइ,
दुकृत नइ सुकृत जोअइ विचारी।
दुकृत नइ परिहरी सुकृत नइ आदरी,
जिन वचन धारियइ गुण सभारी ॥५॥सु०

म करि रे म करि निंदा निगुण पारकी,
नारकी तणी गति कांइ बंधइ।
मारकी प्रकृति तजि सहज संतोष भजि,
लागि श्रुत सांभली धर्म धंधइ ॥६॥सु०॥

सुख अनइ दुक्ख विपाक फल दाखव्या,
अंग इग्यारमइ वीतरागइ।
चिर जयउ वीर शासन जिहां सूत्र थी,
कवि 'विनयचंद्र' गुण ज्योति जागइ ॥७॥सु०

॥ इतिश्री विपाक श्रुतांग स्वाध्याय ॥

आश्रव द्वार पाँच इहाँ आण्यां, पाचे संवर द्वारा।
महामंत्र वाणी मां लहीयइ, लबधि भेद सुखकारा ॥४॥आ०॥
सुयक्खंध एक दशमइ अंगइ, पणयालीस अज्झयणा।
पणयालीस उद्देश वलीपद, सहस्र संख्यात नी रयणा ॥५॥आ०॥
जे नर सूत्र सुणइ नहि काने, केवल पोपइ काया।
माया माहि रहइ लपटाणा, ते नर इम ही जाया ॥६॥आ०॥
सूत्र मांहि तउ मार्ग दोउ छइ, निश्चय नइ व्यवहारा।
'विनयचन्द्र' कहइ ते आदरीयइ, तजि मद मदन विकारा ॥७॥आ०

॥ इतिश्री प्रश्न व्याकरण स्वाध्यायः॥

(११) श्रीविपाकसूत्र सज्झाय

ढाल—तारि करतार संसार सागर थकी, एहनी

सुणउ रे विपाक श्रुत अंग इग्यारमउ,
तजउ विकथा वृथा जे अनेरी।
ललित उवंग जस प्रवर पुष्फचूलिका,
मूलिका पाप आतंक केरी ॥ १॥सु०॥
अशुभ किंपाक सम दुकृत फल भोगवी,
नरक मां गरक जे थयां प्राणी।
सुकृत फल भोगवी स्वर्ग मा जे गया,
तास वक्तव्यता इहां आणी ॥२॥सु०॥
दोइ श्रुतखंध नइ वीस अध्ययन वलि,
वीस उद्देस इहाँ जिन प्रयुंजइ।

सहस संख्यात पद कुन्द मचकुन्द जिम,
वहुल परिमल भ्रमर चित्त गु जइ ॥३॥सु०।

सरस चंपकलता सुरभि सहु नइ रुचइ,
अन्य उपगार नी बुद्धि माटइ।
सूत्र उपगार तेहथी सबल जाणियइ,
जेहथी पुरुष सुख अचल खाटइ ॥४॥सु०॥

बध नइ मोक्ष ना बेउं कारण अछइ,
दुकृत नइ सुकृत जोअउ विचारी।
दुकृत नउ परिहरी सुकृत नइ आदरी,
जिन वचन धारियइ गुण संभारी ॥५॥सु०

म करि रे म करि निंदा निगुण पारकी,
नारकी तणी गति काइ बंधइ।
मारकी प्रकृति तजि सहज संतोष भजि,
लागि श्रुत साभली धर्म धंधइ ॥६॥सु०॥

सुख अनइ दुक्ख विपाक फल दाखव्या,
अंग इग्यारमइ वीतरागइ।
चिर जयउ वीर शासन जिहां सूत्र थी,
कवि 'विनयचंद्र' गुण ज्योति जागइ ॥७॥सु०

॥ इतिश्री विपाक श्रुताङ्ग स्वाध्यायः ॥

॥ एकादशांग स्वाध्यायः ॥

ढाल—अयोध्या हे राम पधारीया, एहनी

अंग इग्यारे मइं सुण्या सहेली हे आज थया रङ्ग रोल कि।
नन्दी सूत्र मइ एहनउ सहेली हे भाख्यउ सर्व निचोल ॥१॥
सहेली हे आज वधामणा ॥
पसरी अंग इग्यार नी सहेली हे मुझ मन मंडप वेलि कि।
सींचूं नेह रसइ करी सहेली हे अनुभव रमनी रेलि ॥२॥
हेज धरी जे साभलइ सहेली हे कुण बूढा कुण बाल कि।
तउ ते फल लहै फूटरा सहेली हे स्वादइ अतिहि रसाल ॥३॥
हर्ष अपार धरी कियइ सहेली हे अहमदाबाद मझार कि।
भास करी ए अंगनी सहेली हे वरत्या जय जयकार ॥४॥
संवत सतर पंचावनइ सहेली हे वर्षा रिति नभ मास कि।
दसमी दिन वदि पक्ष मा सहेली हे पूर्ण थई मन आस ॥५॥
श्री जिनधर्मसूरि पाटवी सहेली हे श्रीजिणचन्दसूरीस कि।
खरतर गच्छ ना राजीया सहेली हे तप राजइ सुजगीस ॥६॥
पाठक हर्षनिधानजी सहेली हे ज्ञानतिलक सुपसाय कि।
'विनयचन्द्र' कहइ मइं करी सहेली हे अंग इग्यार सिज्झाय ॥७॥

इति श्री एकादशांगानां स्वाध्यायः ॥१२॥

संवत् १७६६ वर्षे मिति वैशाख सुदि १४ दिने श्री विक्रमनगरे उपाध्याय श्री हर्षनिधानजी शिष्य प० ज्ञानतिलक लिखितं ॥ गणी विनयमाला शिष्यणी हर्षमाला पठनार्थं ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभमस्तु ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्रेयांसि प्रवर्धन्तां ॥

श्री दुर्गति निवारण सज्झाय

ढाल—बीबी दूर खडी रहि लोका भग्म धरेगा

सुगुन सहेजा मेरा आतम, तेरी शुभ मति जागी।
सहज संतोष मन्दिर मे मोह्या, मुगति वधू रस लागी ॥१॥
दुर्गति दूर खड़ी रहि, तेरा काम नहीं है ॥ आकणी ॥
शम दम दोऊ अजब झरोखे, तेज प्रदीप बनाया।
धर्म ध्यान का लाल दुलीचा, नीचइं खूब विछाया ॥२॥ दु०॥
समकित तख्त क्षमा का तकिया, मंडप शील सुहाया।
ज्ञान छत्र चामर चारित गुन, परम महोदय पाया ॥३॥ दु०॥
शुचि सुगंधता परिमल महके, सुरुचि सखी मन भाया।
उपशम पुत्र सुलच्छन सुन्दर, आतम नृप घरि आया ॥४॥ दु०॥
ए विलास सब मुगति रमनि के, छिन छिन मे सुखकारी।
सोहागिन से रंग लग्यो तब, तुझ सें दृष्टि उतारी ॥५॥ दु०॥
तूँ तो दुर्गति दुष्ट दुहागिन, लोकन से लपटानी।
पर प्रपंच सुत अरुचि सखी के, संगइ तोहि पिछानी ॥६॥ दु०॥
अति दुर्गन्ध अशुचिता प्रगटे, निरगुनता से लीनी।
तेरो संग करै सो भूरख, तूँ तो वहुत दुखीनी ॥७॥ दु०॥
समता सायर मेरो आतम, ज्योतिवंत अविनाशी।
परमानन्द विलासो साहिब, सज्जनता प्रतिभासी ॥८॥ दु०॥
मुगति प्रिया रस भीनो अहनिश, दुर्गति दूर निवारी।
विनयचन्द्र कवि आतम गुन से, होइ रहे अविकारी ॥९॥ दु०॥

श्री जिन प्रतिमा स्वरूप निरूपण स्वाध्याय

॥ दूहा ॥

विपुल विमल अविचल अतुल, निस्तल केवलज्ञान।
तास प्रकाशक चरम जिन, मन धरि तेहनउ ध्यान ॥१॥
जिन प्रतिमा वंदन तणउ, हिव कहिस्युं अधिकार।
जे निर्गुण मानइ नहीं, तेहनइ पड़उ धिकार ॥२॥
अभव छेदक भाव थी[1], लख्यउ न जायइ दंभ।
संमूर्छिम कपटी तणउ, क्षण ऊतरस्यइ अभ ॥३॥
शास्त्र तणी युगति करी, सद्गुरु भापइ तास।
कुमति वास नें तुं पड्यउ, किसी सुगति नी आस ॥४॥
अरे दुष्ट बुद्धि विकल[2], किम निंदइ जिन बिंब।
अंब सपल्लव छोड़ि नइ, किम भजइ तुं निंब ॥५॥
जिन प्रतिमा निश्चय पणइ, सरस सुधारस रेलि।
चिन्तामणि सुरतरु समी, अथवा मोहनवेल ॥६॥
नेह विना सी प्रीतडी, कण्ठ विना स्यउ गान।
लूण विना सी रसवती[3], प्रतिमा विण स्यउ ध्यान ॥७॥
द्वेज[4] दिद्दक्षायें धरउ, जिन मूरति नउ संग।
ते नर जस साम्प्रति लहै, जेहवा गंग तरंग ॥८॥
तीर्थंकर पिण को नहीं, नहीं को अतिशय धार।
जिन प्रतिमा नउ इण अरइ, एक परम आधार ॥९॥

१—व्यक्ति युक्ति नै निरखतां २—निठुर
३—दीपक विण मन्दिर किस्यउ ४—दृष्टुँ इत्यादि दृष्टातया

ढाल—१ ते मुझ मिच्छामि दुक्कड एहनी

तें तउ रे निज मत संग्रह्यउ, सहु नी तजि लाज रे।
तिण कारण तुझ नइ कहुं, सुविदित हित काज रे ॥१॥
जिनवर प्रतिमा वंदियइ, मन मा धरि रंग।
समकित संकित कारणें, थायइ बहु भंग रे ॥२॥ जि०॥
तुझ नइ रे कहता स्युँ हवइ, वायस नइ श्रावइ[1] रे।
जउ दुग्धइ प्रक्षालियइ, पिण धवलता नावइ रे ॥३॥ जि०॥
उपल मुद्‌गशेलिक तणइ, ऊपरि घन वरसै रे।
आर्द्र तदपि न हुवइ कदा, तुझ ते गुण फरसै रे ॥४॥ जि०॥
वलि ऊखर धर ऊपरइ, जउ बीज कउ वाहै रे।
अंकुर मात्र न नीपजइ, नहु एम सराहै रे ॥५॥ जि०
वधिर भणी जउ को कहइ, अनुगामि प्रमाण रे।
पिण तसु मन अहि कातनी, व्यापकता जाण रे ॥६॥ जि०
श्वान तणी वलि पूछनउ, दृष्टान्त दृढायौ रे।
पिण कुमति तुझ चित्त मा, आखर ते नायउ रे ॥७॥ जि०॥

ढाल—२ माखी नी देशी

शुद्ध परंपरा मानियइ, प्रतिमा नो प्रतिरूप ।अज्ञानी।
जिन सादृशतायें सही, इम व्यवहार प्ररूप अज्ञानी ॥१॥
एहिज तत्व विचारियइ, जउ क्युं जाणै साच अज्ञानी।
आनहितउ ते ताहरइ दिसा, पाच तजी ग्रह्यउ काच अ० ॥२॥

१—श्रवण-श्रावस्तेन

समकित विण प्रतियोग थी, शक्ति न ताहरइ वाहि अज्ञानी।
आ गुण सद्भाविक देखतां, न मिलइ तुझ घट माहि अ० ॥३॥
वंदन अंग उपासकें, वलि ठाणांग मझार अज्ञानी।
रायपसेणी मइ कह्यउ, सूरीयाभ सविचार[1] अज्ञानी ॥४॥ए०॥
न्याता अंगइ जाणियइ, द्रूपदि नइ अधिकार अज्ञानी।
तिम अंबड़ अधिकार थी, निरखि उवाई सार अज्ञानी ॥५॥ए०॥
चारण श्रमण नमइ सदा, जिन प्रतिमा सस्नेह अज्ञानी।
ते छइ भगवई अंगमां, किम मन आणइ रेह अज्ञानी ॥६॥ए०॥
एक सदय गुण तूं करइ, सूत्र वहुल नउ लोप ॥ अज्ञानी ॥
तउ तुझ नइ दीठां विना, मन नइं आवइ कोप अज्ञानी ॥७॥ए०॥

ढाल (३)

चाल—जोसीडानी

दश्य पणइ आवश्यकै रे, भावित कायोत्सर्ग।
प्रतिमा विण निःफल कह्यउ रे, तौ स्युं वाखियक वर्ग ॥१॥
अधर्मी प्रतिमाये स्यउ वंध।
जड़मति नइ अनुभाव थी, जाति तणउ तू अंध ॥२॥अ०॥
विजयदेव अति भक्ति सुं रे, पूज्या श्री जिनराय।
इम छइ जीवाभिगम मां रे, ते तुझ नावइ दाय ॥३॥अ०॥
वलि जिन पूज्या शुभ मनइ रे, श्री सिद्धारथ राय।
कल्पसूत्र संपेखि नइ रे, तसु अवगम चित लाय ॥४॥अ०॥
दानादिक सम भाखियउ रे, अरचा नउ फल सूध।
महानिशीथे ते लहउ रे, तो स्यू तेह असूध ॥५॥अ०॥

१—विचारेण सहित

कुगुरु स्वाध्याय

॥ दूहा* ॥

जैन युक्ति सुं साधना, आगम सु अनुकूल ।
नित अविहित लक्षण हरण, सुविहित लक्षण मूल ॥१॥
सिद्धि शक्ति धारक सदा, व्यक्ति गुणइ अनुबन्ध ।
निहत निरंजण भक्ति विधि, जानि हेतु निरबंध ॥२॥
धंध गिणइ संसरण सुख, चरण करण गुण लीण ।
अतिशय सुध जसु आचरण, क्रिया धरण सुप्रवीण ॥३॥
मिथ्या भ्रम रूपक द्विरद, तिहां पंचायण जेह ।
चिदानंद चिद्रूप सुँ, निस दिन अधिक सनेह ॥४॥
एहवा सद्गुरु वंदियइ, जिम थायइ भव अंत ।
कुगुरु कपटधर वंदता, तद्गुण न रहइ तंत ॥५॥

ढाल (१)

चाल—हठीला वयरीनी

[सार सु] प्रवचन नउ ग्रही रे,
विदित प्रपंचक भाव रे ॥सगुण नर॥
अनुभव कहि [सुरं] गसु रे लाल,
कुगुरु तणइ प्रस्ताव रे ॥सगुण नर ॥१॥

---

* प्रारम्भ करनेके पूर्व आलिये पर लिखे दोहे :—

धर्म वचन साधक सदा, जिन वचनां पक्षीण ।
प्रस्तुतानुयोगिक सदा, जे सोधिक सुकुलीण ॥१॥
उपादान मित भुक्तविधि, अन्वेपणीय प्राय ।
प्रस्तुतानुयोगिक तणा, जे सोधिक मुनिराय ॥२॥
मारग साधु तणउ कह्यउ, दर्शन ज्ञान चरित्र ।
तिणथी खिण विरचइ नहीं, निशिदिन पुण्य पवित्र ॥३॥

धर्म विशेष विरुद्धता रे, तें प्रारंभी मूध।
ते हिव शोभा किम रहइ रे, जिम काजीयइ दूध ॥६॥अ०॥
साधन फल तें आदस्यउ रे, करण विना परतक्ष।
पिण कितलाइक दिन रहै रे, नदी कनारै वृक्ष ॥७॥अ०॥

ढाल (४)

चाल—मोहन सुन्दरी ले गयउ, एहनी

चिदानंद फल जउ ग्रहइं, जिन पूजा मन धार।
आधाकर्मिक भाति नउ हो, दूषण नहीय लिगार ॥१॥
मूरख रे मानि कथन तू माहरउ ॥आंकणी॥
ताहरउ मन भ्रामिक थयउ, अर्चित हिंसा हेत।
नाग भूत यक्षादि नउ हो, विवरण सगलउ चेत ॥२॥मू०॥
पिण जिन हेति नवि कह्यउ, सूयगडाग मइ देखि।
भाष्य चूर्णि निर्युक्तियइ हो, एहिज अर्थ विशेप ॥३॥मू०॥
मानइ सूत्र सहु वली, पिण प्रतिमा सुं द्वेष।
तउ ताहरइ मुखि दीजियइ हो, मषीय कूर्चिका रेख ॥४॥मू०॥
जिनवर जैन समाचरइ, शैव ब्रह्म हरि राम।
तूं तउ एकण मा नहीं हो, निर्गत भेप प्रकाम[1] ॥५॥मू०॥

कलश

इम सुगम कहतां जउ न समझै, सूत्र नउ बोधक पणउ।
भव मे अनंतानंत कालइ, दुख देखिस तू घणउ॥
आणा विना जे मत उपाजइ, नरक तासु निदान ए।
कवि विनयचन्द्र जिनेश प्रतिमा, तणउ धरिये ध्यान ए॥१॥

इतिश्री जिन प्रतिमा स्वरूप निरूपण स्वाध्याय, सर्व गाथा ३६

[पत्र १ आचार्य ख० गच्छ भण्डार]

---

1 प्रकाम—अतिशयेन

कुगुरु स्वाध्याय

॥ दूहा * ॥

जैन युक्ति सु साधना, आगम सु अनुकूल।
नित अविहित लक्षण हरण, सुविहित लक्षण मूल ॥१॥
सिद्धि शक्ति धारक सदा, व्यक्ति गुणइ अनुवन्ध।
निहत निरंजण भक्ति विधि, जानि हेतु निरवंध ॥२॥
धंध गिणइ संसरण सुख, चरण करण गुण लीण।
अतिशय सुध जसु आचरण, क्रिया धरण सुप्रवीण ॥३॥
मिथ्या भ्रम रूपक द्विरद, तिहा पंचायण जेह।
चिदानंद चिद्रूप सुँ, निस दिन अधिक सनेह ॥४॥
एहवा सदगुरु वंदियइ, जिम थायइ भव अंत।
कुगुरु कपटधर वंदता, तद्गुण न रहइ तंत ॥५॥

ढाल (१)

चाल—हठीला वयरीनी

[सार सु] प्रवचन नउ ग्रही रे,
विदित प्रपंचक भाव रे ॥सगुण नर॥
अनुभव कहि [सुं रं] गसुं रे लाल,
कुगुरु तणइ प्रस्ताव रे ॥सगुण नर ॥१॥

---

* प्रारम्भ करनेके पूर्व ओलिये पर लिखे दोहे :—

धर्म वचन साधक सदा, जिन वचना पक्षीण।
प्रस्तुतानुयोगिक सदा, जे सोधिक सुकुलीण ॥१॥
उपादान मित भुक्तविधि, अन्वेपणीय प्राय।
प्रस्तुतानुयोगिक तणा, जे सोधिक मुनिराय ॥२॥
मारग साधु तणउ कह्यउ, दर्शन ज्ञान चरित्र।
तिणथी खिण विरचइ नहीं, निशिदिन पुण्य पवित्र ॥३॥

श्रुति विकसित चित साभलउ रे लाल,
अधिक प्रयोजन आणि रे ।।स०।।
अंतरगत गुण पामिस्यउ रे लाल,
ए समवाय प्रमाण रे ।।स०।।२।।श्रु०।।

प्रथम द्रव्य भावइं रहइ रे लाल,
विकल सकल आचार रे ।।स०।।
चलन अवधि स्वच्छन्द सुँ रे लाल,
नित निर्गत उपचार रे ।।स०।।३।।श्रु०।।

वाह्य दृष्टि विरतंतनउ रे,
भेदक विविध प्रकार रे ।।स०।।
प्रवहमान पर वृत्ति सुँ रे लाल,
जेम जलदनी धार रे ।।स०।।४।।श्रु०।।

इन उन्मारग चालता रे,
नवि पामइं तिहा लाग रे ।।स०।।
चित्त विचारि समाचरइ रे लाल,
चलि मरकट वइराग रे ।।स०।।५।।श्रु०।।

ढाल २ सोरठ देश सुहामणउ, एहनी

अंतरगति आतप करइ, जप वहिरंग प्रधान लाल रे।
अवर माहे जे धरइ, शवकर पट उपमान लाल रे ।।१।।
अवयव तादृश आचरइ, वचन तथा विध थाय लाल रे।
सविकल्प चिन्तन करइ, अहनिशि अध्यवसाय लाल रे ।।२।।
चाहइ वेगि निरूपणा, सम पूरव पद चार लाल रे।
पिण इण कलि माहे नहीं, साप्रति सहु परिवार लाल रे ।।३।।

रस आसंकायइं करइं, ज्वर औषध विधि जेम लाल रे।
कारिज नइ आलंबता, पृथिवी सुत सुं प्रेम लाल रे॥४॥
इम संचरता हित धरी, ते स्तुति करि कहइ धन्य लाल रे।
ते जग माहे जाणियइ, परतखि पण्डित मन्य लाल रे॥५॥

ढाल ३ हरिया मन लागउ, एहनी

जिण अधिकारइ ऊपनउ, जे अनवस्थित दोष रे।
साजन सुणि मोरा।
हिव तेहिज विवरणा तणउ, निश्चय करिस्युं पोप रे।सा०॥१॥
जउ पूरव विधि मइ रहइ, न करइ किम विपरीत रे।सा०।
पिण पासत्थउ ते खरउ, सर्व देश परिणीत रे। सा०॥२॥
ज्ञानादिक गुण जे तजइ, न वदइ मारग सूध रे। सा०।
साध तणी निंदा करइ, लोक भ्रमावइ मूध रे। सा०। ३॥
नवेय वखाणे जे करइ, कल्प वाचनता तेम रे। सा०।
साहशता तेहनी लहइ, कल्पचूरणि मइ एम रे। सा०॥४॥
नित्य सिझातर अन्नइ, आगलि देइ पिंड रे। सा०।
जे ल्यइ तिणनइ तिण विधइ, आवश्यक घइ दंड रे।सा०॥५॥

ढाल ४ मेरे नन्दना, एहनी

साधु कहावइ सइं मुखइ रे हां, न मिले वचन विवेक।
वचन किसा कहुँ।
अवलंबन किहां थी ग्रहइ रे हां, इहा छइ जुगति अनेक। व०॥१॥
जे नव कलपी नवि करें रे हा, उद्यत मुदित विहार। व०।
मास दिवस ऊपरि रहइ रे हां, सेपइ काल अपार। व०॥२॥
तिण सरिखउ ते दाखव्यउ रे हां, आचाराग मझार। व०।
आधाकर्मिक आश्रहइ रे हां, ते ठाणाग विचार। व०॥३॥

रस आसंकायइं करइं, ज्वर औपध विधि जेम लाल रे।
कारिज नइ आलंबता, पृथिवी सुत सु प्रेम लाल रे ॥४॥
इम संचरता हित धरी, ते स्तुति करि कहइ धन्य लाल रे।
ते जग माहे जाणियइ, परतखि पण्डित मन्य लाल रे ॥५॥

ढाल ३ हरिया मन लागउ, एहनी

जिण अधिकारइ ऊपनउ, जे अनवस्थित दोष रे।
साजन सुणि मोरा।
हिव तेहिज विवरणा तणउ, निश्चय करिस्युं पोप रे ।सा०॥१॥
जउ पूरव विधि मइं रहइ, न करइ किम विपरीत रे ।सा०।
पिण पासत्थउ ते खरउ, सर्व देश परिणीत रे। सा० ॥२॥
ज्ञानादिक गुण जे तजइ, न वदइ मारग सूध रे। सा०।
साध तणी निंदा करइ, लोक भ्रमावइ मूध रे। सा० । ३ ॥
नवेय वखाणे जे करइ, कल्प वाचनता तेम रे। सा०।
साइशता तेहनी लहइ, कल्पचूरणि मइ एम रे। सा० ॥४॥
नित्य सिभ्मातर अन्नइ, आगलि देइ पिंड रे। सा०।
जे ल्यइ तिणनइ तिण विधइ, आवश्यक चइ दंड रे ।सा०॥५॥

ढाल ४ मेरे नन्दना, एहनी

साधु कहावइ सइं मुखइ रे हां, न मिले वचन विवेक।
वचन किसा कहुँ।
अवलंबन किहा थी ग्रहइ रे हां, इहां छइ जुगति अनेक। व०॥१॥
जे नव कल्पी नवि करै रे हा, उचत मुदित विहार। व०।
मास दिवस ऊपरि रहइ रे हां, सेपइ काल अपार। व०॥२॥
तिण सरिखउ ते दाखव्यउ रे हा, आचारांग मझार। व०।
आधाकर्मिक आश्रहइ रे हा, ते ठाणांग विचार। व०॥३॥

शास्त्र लिखावइ जे वली रे हा, पिण न रहइ व्यवहार। व०।
इम अधिकतायइ कहइ रे हा, प्रवचन सारोद्धार। व० ॥४॥
(वात करइ जे मारगै रे हा, उत्तराध्ययनइ तेह ।व०।)
व्याख्यानादिक नित करइ रे हा, उपदेशमाल मे तेह। व०।
इत्यादिक आगम तणी रे हा, साख कही निसंदेह। व० ॥ ५ ॥

ढाल ५ यत्तिनी

हिव तास प्रसगइ जेह, ते पिण कहीयइ ससनेह।
उसन्नउ दुविध प्रकार, तसु अन्त पणइ व्यभचार ॥१॥
वलि भाख्यउ त्रिविध कुशील, नाण दंसण चरण निमील।
विहुँ भेद कह्यउ ससत्तउ, शुभ अशुभ प्रकृति संपत्तउ ॥२॥
जह छंद लगइ ए पंच, सद्भाविक सगलउ संच।
चिहुँ नउ निर्णय नवि कीधउ, स्वाभाविक फल गुण लीधउ ॥३॥
परमातम ग्रहण विशेप, ते संग्रहिज्यो अवशेप।
भापित त्रिहुँ नउ अनुयाय, व्याकृति समयादिक न्याय ॥४॥
निज कल्पित दोइ प्रकार, शास्त्रादिक पच उदार।
पासत्थादिक सूं दूर, तसु वन्दन ऊगत सूर ॥५॥

॥ कलश ॥

इम युक्ति साधन धरी चितमइ कीध सबल सरूपता।
जाणिस्यइ तौ पणि तेह लहिस्यै प्रवल अनवच्छिन लता ॥
उच्छेदि असमर्थक तणउ मत विनयचन्द विख्यात ए।
उपदिसइ सहु नी प्रार्थना वशि इण परइ आख्यात ए ॥१॥

॥ इति श्री कुगुरु स्वाध्यायः ॥ सर्वगाथा २१

कविवर विनयचन्द्र विरचित

श्री उत्तमकुमार चरित्र चौपाई

॥ दूहा ॥

एकदन्तो महावीर्य्यो, नमोस्तु सरस पाणिने।
सिद्धन्ति सर्व कार्याणि, त्वं प्रसाद विनायकः ॥१॥
ॐ अक्षर अतुल वल, चिदानन्द चिद्रूप।
सकल तत्व सपेखता, अविचल अलख अनूप ॥२॥
अजर अमर अविकार निति, ज्योति तणो जे ठाम।
सत्व रूप साराहियै, पूरण वंछित काम ॥३॥
जेहनै नाम स्मरण थी, फीटै सगला फंद।
मंदमती पंडित हुवै, दूरि टलै दुख दद ॥४॥
योगी ध्यावै युक्ति सुं, भक्ति करी भरपूर।
सपै तेहनै व्यक्ति गुण, शक्ति सहित ससनूर ॥५॥
मंत्र मुख्य वीजक कह्यो, सार सहित सुविलास।
अरिहंतादिक पंच नो, अन्तर जास निवास ॥६॥
अभ्र माहि जिम ध्रू अडिग, शेषनाग पाताल।
मृत्युलोक मां मेरु जिम, तिम ए वरण विसाल ॥७॥
ते अक्षर तो छै वलू, मन पिण आगेवाण।
सरसति माता आपजे, मुझ नै अमृत वाणि ॥८॥
श्रीजिनकुशलसुरिंद गुरु, पूरो मुझ मन आस।
अंतरजामी जाणि नैं, करीयें निज अरुदास ॥९॥

जोड़ि तणी का सुद्धि नहीं, हूं अति मूढ अयाण।
तुम सुपसाये जे कहुँ, चाढो तेह प्रमाण ॥१०॥
दान सुपात्र समो न को, मुक्ति तणो दातार।
उलट धरि द्यै ते तजै, सलिल निधि संसार ॥११॥
सालिभद्र आदिक उपरि, दान तणै अधिकार।
जिनशासन मा जोवता, चरते नावै पार ॥१२॥
तो पणि उत्तमकुमर नौ, चरित सुणो मन रंग।
साधु प्रशंसित दान जिण, दीधो आणि उमंग ॥१३॥
वात चित कौ मत करौ, छोडो कुमति किलेस।
वाचंतां कविता तणो, मन जिम थाय विशेष ॥१४॥

ढाल—(१) गौतम स्वामि समोसस्या एहनी

वचन रचन सुणज्यो हिवै, आणी भाव प्रधानो रे।
देज्यो दान इसी परै, जेम लहो तुमे मानो रे ॥१॥व०
इणहिज जंबूद्वीप मा, दक्षिण भरत उदारो रे।
काशी देश जिहां भलौ, पृथिवी नो सिणगारो रे ॥२॥व०
नयरी तिहां वणारसी, अलिकापुरि सम तेहो रे।
जहां सुर सरिखा मानवी, निशदिन चढते नेहो रे ॥३॥ व०
वलि तेहनै चौ पाखती, विकट दुरंग विराजै रे।
घण वाजित्र सदा घुरै, घन गरजारव लाजै रे ॥४॥ व०
ऊँचा मंदिर अति घणा, दीठा आवै दायौ रे।
तिम चित चोरै कोरणी, जोता दिन वहि जायो रे ॥५॥ व०

गोखै बेठी गोरड़ी, अपछर नै अनुहारो रे।
केलि करै मन मेलि नै, सहियर सुं सुखकारो रे ॥६॥ व०
जिनमन्दिर रलियामणा, दंड कलश करि सोहै रे।
अति ऊँची धज लहलहै, सुरनर ना मन मोहै रे ॥७॥ व०
चौरासी वलि चौहटा, मिलिया बहु जन वृन्दो रे।
देश अने परदेश ना, पावै परमाणंदो रे ॥८॥ व०
सरस सरोवर चिहुं गमा, भरीया जल करि पूरो रे।
हंस प्रमुख कल्लोल सुं, निवसै दुख करि दूरो रे ॥६॥ व०
वली विशेषै तरुवर करी, सोहै वन सश्रीको रे।
कोकिल करै टहूकडा, रहै पंखी निरभीको रे ॥१०॥व०
बारै मास लगै सदा, नील हरी जिहां दीसै रे।
फल फूले छाड वणुं, हीयडो देखी हीसै रे ॥११॥व०
राज करै नगरी तणो, मकरध्वज भूपालो रे।
सूरवीर अति साहसी, न्याय नीत सुदयालो रे ॥१२॥व०
दुर्जन जे वाका हता, नार कीया ते जेरो रे।
जिम मृगपति नै आगलै, न सकै गयवर फेरो रे ॥१३॥व०
इन्द्र समोवर जाणीयें, रिद्धि करी राजानो रे।
गुनह खमै निज प्रजा तणो, दिन दिन वधतै वानो रे ॥१४॥व०
यत :—उदै अट्टक्कै भूप नहि, पहिल्या नांही भूप।
खुंद खमै सो राजवी, निरख सहै सो रूप ॥१५॥
तेहनै राणी रूवडी, पतिभगती गुण खाणी रे।
नामे श्री लखमीवती, इन्द्राणी सम जाणो रे ॥१६॥व०

जाणै ते चौसठि कला, निरूपम वचन विलासो रे।
चन्द्रवदन मृगलोयणी, गय गजराज उलहासो रे ॥१७॥व०
पालै सील भली परै, धरम करी सुविकासै रे।
एम विनयचन्द्र हेज सुं, ढाल प्रथम परकासै रे ॥१८॥व०

॥ दूहा ॥

ते सुख विलसै दंपती, विविध परै ससनेह।
मास घडी सम लेखवै, जिम दोगंधक देह ॥१॥
शुभ स्वप्नै सुत ऊपनौ, राणी उयर मझार।
सुख ऊपरि सुख तौ लहै, जौ तूसै करतार ॥२॥
ललित लच्छि पुण सुत निपुण, गौरी गजगति गेलि।
पुण्य प्रमाण पामीयै, विनयचन्द्र गुण वेलि ॥३॥
दिन-दिन डोहला पूरता, वोलया पूरा मास।
सुत जायौ रलियामणौ, सहुनी पूगी आस ॥४॥
ए अद्भुत प्रगटीयौ, प्रथम हतो जे भूप।
दीप थकी दीपक हुवै, ए दृष्टान्त अनूप ॥५॥
राजा अति उच्छवक थकै, जनम महोच्छव कीध।
घरि-घरि तोरण वाधीया, दान वली तिहां दीध ॥६॥
दशऊठण कीधा पछी, उत्तम लक्षण देखि।
नाम दीधो सहु साख ले, उत्तमकुमर विशेष ॥७॥

ढाल—(२) वींछियानी

हा रे लाल तेह कुमर दिन-दिन वधै,
जिम चन्द्रकला सुविसाल रे लाल।

धाइ माइ पालीजतौ,
थयो आठ वरस नो बाल रे ॥१॥
वाल्हो लागे रंगीलो रे कुंमरजी,
ते खेलै राज दुवार रे लाल।
मोह्या मुख मुलकै सहु,
तिम निजर तणै मटकार रे ॥२॥ वा०
हाँ रे लाल मात पिता बहु प्रेम सुं,
तजिवा बालापण लाज रे लाल।
आडम्बर करि कुमर नै,
मुंक्यौ भणवा नै काज रे। ३॥ वा०
हाँ रे लाल लेखक शाला माहि जे,
जुड़ि बैठा छात्र अनेक रे लाल।
ते सहु पाछलि तेह नै, अध्ययन करै सुविवेक रे ॥४॥ वा०
कितले दिन जाते थयौ, ते सकल कला नो जांण रे।
लघु वय सकज सकल वधै, ए पुण्य तणा परमाण रे ॥५। वा०
सत्य वचन बोलें सदा, वाम्ह वलि राखै नीति रे।
तो हिज वाधइ लोक मा, तेहनी पूरी प्रतीति रे ॥६॥ वा०
कांटो वाजै पगतलै, ते खटकै वारो वार रे।
जीव कहौ किम मारीयें, इम जाणीदया करै सार रे। ७॥वा०
अणदीधो लीजै तृणो, तो ही अदत्तादान रे।
एम विचारी परिहरै, सुकलीणो कुमर सुजाण रे ॥८॥ वा०

नरक महल चढिवा भणी, नीसरणी सम परदार रे।
अकलंकित तनु जेहनो, वलि कनकाचल सम धीर रे॥६॥वा०

सहज सलूणो कुमर जी, सायर री परि गभीर रे।
गमन निवारै जाणि नै, देखी अति गहन विचार रे॥१०॥वा०

कला वहुत्तर आगलो, दाता ज्ञाता जिम सूर रे।
प्रसिद्धि भलेरी जगत मा,जस अधिको प्रवल पडूर रे॥११॥वा०
खेल करै निशि वासरै, मन मेलू लेई संग रे।
विषमा अरियण अवहटै, ए राजवीया रो अंग रे॥१२॥वा०

दीन हीन नै ऊधरै, दुखीयां केरो प्रतिपाल रे।
विनयचन्द्र कहै एतलै, पूरी थई बीजी ढाल रे॥१३॥ वा०

दूहा सोरठा

सुख विलसता तेम, निशि भर कुमर इसी परै।
एक दिन चितै एम, तरुण थयौ हिव हुं सही॥१॥
तौ स्युं वैठो आम, परवशि थई मुधा परै।
ए कायर नुं काम, घर सूरा किम थईयइं॥२॥
यत :—गुण भमतां गुणवंत नै, वैठा अवगुण जोय।
वनिता नै फिरिवौ बुरौ, जो सुकलीणी होय॥३॥
खाटी लखमी जेह, वाप तणी किम विलसीयै।
तौ नहीं ए मुझ देह, जउ मन चित नवि करूं॥४॥
इम मन मा आलोचि, हाथ खड्ग ले उठीयौ।
कीयौ न काइ सोच, स्वजन तणौ तिण अवसरै॥५॥
चाल्यौ होइ निचंत, ते परदेशैं पाधरौ।
खरी आणी मन खत, कुमर परीक्षा कारणै॥६॥

ढाल—(३) धण री सोरठी

लाघै विषमी चालता होजी, वाट अनड़ वर वीर, प्रबल पराक्रमी।
धरम धुरंधर धीर प्र० महीयल शोभा आक्रमी होजी,
गुण निधि गुण गंभीर ; १ प्र०

सूर तपै सिर ऊपरै होजी, लू पिण भेदै अंग, खलहल खलकती।
तिहा पणि उतरै ढलकती होजी, नदियाँ परवत शृङ्ग ; २ ख०
सुख दुख पामै ते सहै हो जी, कौतकियाँ नो राव।
मलपइ मन नी रली, तो पणि सुविशेष वली होजी,
देखी खेलै दाव ; ३ म०

तिहां किण आवै पंथ मा हो जी, अटवी एक अपार।
सरस सुहामणी, घणी तिहा सरवर तणी होजी,
लहिर सदा सुखकार ; ४ स०

अवलोकै रन वन घणा हो जी, तरुवर नो नहिं ग्यान।
नयणा निरखती, जाण कि अमृत वरषती होजी,
कुमर तणी तिण ठाम ; ५ न०

किहा किण कमल तणी भली हो जी, कलिया अति सोरंभ;
विहसै विकसती, नानी मोटी निकसती होजी,
करती वडो रे अचंभ ; ६ वि०

अनुक्रमि नियत प्रमाण मां हो जी, लाघै ग्राम अनेक ;
दीपै दिनमणी, मन माहे धीरप घणी हो जी,
संगि न कोई एक, ७ दी०

भमतो भमर तणी परै हो जी, आयौ गढ चीत्रोड,
हेजे हरखती, हेलै जिण जीता अरी होजी,
सुहड़ा सिरहर मौड़, ८ हे०

राजा तिण नगरी तणो होजी, मछरालौ महसेन,
मानी महिपति, अछै सभा दो शुभमती होजी,
दायक जिम सुरधेन; ६ मा०

देशा माहे दीपतो होजी, देश वडो मेवाड़,
राखै तसु रली, जेहनै को न सकै छली होजी,
वैरी तणो रे विभाड़, १० रा०

गुणीयण जस जेहनो कहै होजी, चावो चारे खंड;
कमणा का नहीं, सरिखा छै तेहने सही होजी,
हय गय प्रवल प्रचण्ड, ११ क०

अवर सहु कौ राजवी होजी, सीस नमावै जास,
अधिक वयण अमी, ए पणि मोटा राजवी होजी,
राखै महिर उल्लास, १२ अ०

विरुओ दुर्मुख ऊपरै होजी, पिण जिन धर्म करंत;
रयण दिवस रही, समकित सुद्ध सुमति ग्रही होजी,
भजै सदा भगवंत, १३ र०

भामणि सेती भोगवै होजी, जे सुख संसारीक;
अवसर आपणी, सुत कारण सहु अवगिणी होजी,
माणै लाछि अलीक, १४ अ०

बीजो कोइ बौलै नहीं, घणी थई तिहां वार रा०
तेह सरूप अलक्ष छइ, पिण मंत्री करै विचार रा० ५ कि०
राजा अति आतुर थयौ, तेहनै कीधी रीस रा०
उत्तम तिहा किण आविनै, बोलै विसवा वीस रा० ६ कि०
हुँ परदेशी छु प्रभो, तो पणि सांभलि वात रा०
तुम आगलि किम राखियै, कूड़ कपट तिल मात रा० ७ कि०
हुं कहिस्युँ मति अनुसरै, अश्व तुमारो एह रा०
महिषी दूध पियौ घणौ, तिण मदी गत छेह रा० ८ कि०
वाई पय प्रायै हुवै, चंचल गति तिण नांहि रा०
राय कहै वछ माहरै, तुं वसीयो मन माहि रा० ९ कि०
तुं ज्ञानी तुझसुं कहु, इण साचइ अहिनांण रा०
स्या कहीयै गुण ताहरा, तु कोई चतुर सुजाण रा० १० कि०
दूषण किम ते जाणीयौ, कुमर कहै वलि एम रा०
जाणुं हयवर पारिखौ, तिण कारण कह्यो तेम रा० ११ कि०
मा मूई जब एहनी, तब ए लघुतर बाल रा०
पय पाई मोटो कियौ, एम कहै भूपाल रा० १२ कि०
इण परि चौथी ढाल में, रीझयौ चित राजान रा०
विनयचद कहै कुमर नैं, थास्यै आदर मान रा० १३ कि०

|| दूहा ||

इतला दिन हुं घरि रह्यो, विण सुत अति निस्नेह ;
हिव तु हिज सुत माहरै, दूधे वूठा मेह , १

मारे भागे तू मिल्यौ, सगली वात सकज्ज ;
पर उपगार शिरोमणी, सहु साधण पर कज्ज ; २
ए हय गय रथ ए सुभट, ए मंदिर ए सेज,
आदरि तुं संतोष धरि, माहरो तो परि हेज ; ३
चारित्र लेवा ऊमह्यो, ज्ञानी गुरु नइं पास ,
तुझ आगलि तिण कारणै, कहियें वचन विलास , ४
आचारे लखीयें सही, तुं छै राजकुमार ;
मन गमतो मुझ राज्य ले, मत को करे विचार , ५

ढाल (५)

रमीयानी

तव ते कुंवर कहै कर जोड़ि नें, तात सुणो मुझ वात, मया करि
हुँ परदेशी रे कुतूहल जोइवा, नीसरियो सुविख्यात, म० १ त०
हिव आगें चालीस एकलो, देखीस सकल विनोद, दया पर
तुम चरणे राजन जी हुं आविसु, मन धरि परम प्रमोद, द०२ त०
इम कहि लेइ सीख सनेहसुं, ततखिण चाल्यो रे ऊठि, सुगुण नर
एकलड़ो पिण स्यौ डर तेहनैं, जगगुरु जेहनें रे पूठि, सु० ३ त०
लांघै ग्राम नगर वहिला घणुं, तिमगिरि गह्वर नीर, चतुर नर
कितलाइक दिन मारग चालतो, पहुतो भरुच्छ तीर च० ४ त०
नगरी तणी छवि देखइं सोहामणी, प्रसन थयो मन माहिं सोभागी
जोवा लायक सगली जाइगा, जिण मुँकी अवगाहि सो० ५ त०
तिहाँ जिनवर मुनिसुव्रत स्वामिनें, देवगृह निज आय, सहीसुँ
वारो वार करै गुण वर्णना, मन सुद्ध प्रणमै रे पाय, स० ६ त०

जन्म सफल गिणि सरवर आवीयो, बैठो तरुवर छाय, रसिक नर
नीर भरै पणिहारी तिहां किर्णे, निरखै ते मन लाय, र० ७ त०
मांहो मांह वात करै त्रिया, सुणि वहिनी मुझ वात, सहेली
कुबेरदत्त नामा विवहारीयौ, आज चलेस्यै रे जात, स० ८ त०
पिण प्रवहण पूरेस्यै पाचसै, द्वीप मुगध मा रे जाय, सुरंगी
ते तो अष्टादश योजन शत, मान इसुं कहिवाय, सु० ६ त०
मध्य भाग लवणोदधि नै रह्या, जिहाँ लंका कहवाय, सलूणी
द्रव्य उपावण साथे मानवी, त्या सुं पूरी रे प्रीत, स० १० त०
इम सुणि बात घणुं हरखित थयौ, कुमार विचारइ रे एम, सनेही
सायात्रिक संघातइं ते भणी, पूछि चढुं तिहां खेम, स० ११ त०
प्रवहण ऊपर बैठो पूछनै, सहु सुं मिलीयो रे आप, विनय सुं
मीठा वचन कही रीझ्या सहु, सकल टल्यो रे संताप, वि०१२ त०
शुभ महुरत ले पूरीया, लाध्यो कितरो रे माग, चलंता
जल खूटौ तिहा पोतक वणिक कहै,पूरो कोई रे अभाग, च०१३त०
इतलै वखत तणै वसि आवीयो, एक तिहाँ सूनो रे द्वीप, हरखसुं
सहु ऊतरि जल भरवा नै गया, वहिला कूप समीप, ह० १४ त०

यत :—पेखी नदी जल पूर, तिरस वसै जायै तृषित
जग मे गरज गरूर, विनयचन्द्र इण परि वदै ?

जल सग्रह करंता लोकाँ भणी,खिण इक लागी रे वार, करम वसि
भ्रमरकेतु राक्षस तिहाँ आवीयौ,सरजित तणै रे प्रकार, क०१५त०
ढाल कही रूडी पाँचमी, विनयचन्द्र वहु जाण, भविकजन
भय करसी राक्षस पणि धरमथी,थास्यै कुशल कल्याण,भ०१६त०

॥ दूहा ॥

ते रात्रैचर अति विटल, विकल वदन विकराल ;
विषम वचन मुख वोलतो, रूठो जाणि कराल ; १
साठि सहस्र वलि जेहनै, राक्षस पूरइं पूठि ;
सीक न राखै केहनी, दूरि किया जिण दूठ ; २
पिण भूखौ ते स्युं करै, आव्यौ अवसरि देखि ,
मांस भखेवा उलस्यौ, माणस नौ सुविशेष , ३
वलि काढंतो जीभ ते, लोक डरावै सर्व्व ;
कर झाले करवाल इक, धरि मन मांहि गर्व्व ; ३
वचने करि सहु नै कहै, किहां जास्यौ रे आज ,
इम कहतो आव्यो कन्है, करतो अधिक अगाज ; ५

ढाल (६) तारि करतार समार सागर थकी, एहनी

कोप करि लोक तिण पकडि कचजं किया,
विगर वर वार हूआ वियोगी,
नासतां भूंइं भारी पड़ी त्यां नरां,
सबल पानै पड्या थया सोगी १ को०
केइ झाल्या जकड़ि पकडि नै काख में,
दाचीया केई करथी सदावै ,
तेम चांप्या पग हेठि पापी तणै,
एण अवसर कवण केडि आवै , २ को०
अतुल वल फोरि करजोर हिव आपणौ,
कुमर तिण ठौर भरडाक आयौ ;

साहसी इम कहै दुष्ट पापिष्ट सुणि,
सीह सूतो किस्यानै जगायो ; ३ को०
नीच तुझ थी इसौ वयर कोई नहीं,
नास दांते तृणो लेई निबला ,
राति दिन रांक नर मारिवा रड़ वड़ै,
साह न सकीसि मो जिसा सबला, ४को०
चित्त मां इम सुणी प्रेतपति चमकीयौ,
बाल वय एम सुं वचन बोलै ,
किसी वलि देह घट मांहि पोरस किसौ,
डिगमिगै वचन मन केम डोलै , ५ को०
वचन कांकल प्रथम मांडि वड वेग सुं,
झडा झड़ि झूझ माड्यौ झडाकै ,
सड़ा सड सोक तीरां तणी सवल द्यै,
तड़ा तड वहै धजवड़ तड़ाकै , ६ को०
झणण धरि बाण करि वणण रमझमक द्यै,
खसर कसमस हसै करि खंगारा ,
सणण चिहुं दिशि नासि सेना चरा,
जाण छूटी छलद जलद धारा , ७ को०
धडाधडि धरणि गडडाट नभ धड़हडै,
राग्डिद्धिधरि रीस ते लीयैं रटका ,
खाग्डिद्धि खेलै खडाखड विहुज सखरइं,
वडा वडा उडै समसेर वटका , ८ को०

भाग्डिदि भुंइ लुटै खिण छुटै वलि अभ्भटै,
प्रगट भट ऊछलै जिम पतंगा
तिहां करै घाव देइ ओट वड वेग सुं,
मरद न मुडै ज्जुडै जिम मतंगा ; ९ को०
अंत तस वल घट्यौ कुमर तव ऊलट्यौ,
कट्यौ जंजाल सहु लोक छूटा ;
जुद्ध हुइं रह्यौ हथियार रो जिण घड़ी,
जोर धरि वले अंग जूटा ; १० को०
झपटि द्यै थापटे चापटे झापटे,
गहग गंभीर मुख करै गाजा
मूठि अर मुठि पडि ऊठि भड दूठ मचि,
लडि लगावै रखे कोइ लाजा ११ को०
अधिक नहीं वात दइं लात करि वात अति
धग्डिदि धुकि झबकि झुकि दीयै धमका;
जाणि खैंकार करती जिसी अपछरा
ठमकि पद ठावति करैं ठमका ; १२ को०
प्रबल भुज जुद्ध खिण मां उपसम थयौ
निठुर कायर भ्रमरकेतु नाठो
धन्न हो धन्य जोगणि कहै चित्त धरि
कीयौ राक्षस थकी हीयो काठौ १३को०
पोन्य पोते हुवे तेह जीपइं सदा
धरम न करैं तिके धमधमीजें

पुण्य थी शत्रुदल तेह आई नडै
पुण्य थी शिवसुख तुरत लीजै; १४ को०
सुजस वाध्यो घणो कुमर उत्तम तणौ
कीयो उपगार तिण विण निहोरइ
ढाल छट्ठी विनयचन्द्र इण परि भणै
उत्तस्या वादला वाय जोरै; १५ को०

॥ दूहा ॥

आवै कुमर तिहा थकी, सायर तट मन रंग;
मनुष्य मात्र दीसै नहीं, तुरत कीयौ मन भंग, १
सहु नै राख्या जीवता, मै कीधो उपगार,
तो पिण मुझनै अवसरै, मूकि गया निरधार; २
लाज विहूणा लोकए, नीच निगुण निसनेह
आप सवारथ साधिनै, निश्चय दीधो छेह, ३
वहिला खेड़ जिहाज नै, मुझ सु खेली घात,
तो काइक दीसै अछै, वखत लिखतनी बात; ४
मै तो कीधी मो दिसा, जेह भलाई आज;
जो न गिणी तो तेहनै, पूछेसी महाराज; ५

ढाल ७ इण रित मोनै पासजी सांभरै, एहनी

वलि मन माहे चींतवें सखी, ते तो लोक विनीत,
राक्षस आगलि स्यु करै सखी, मन मा सवली भीति रे;
किण परि राखै मुझ चीत रे, भय मरण तणो विपरीति रे;
तिहां दूरि रही ते प्रीति रे, पछै सहु को नी रीति रे, १

भाग्डिदि भुंइ लुटै खिण छुटै वलि अभ्भटै,
प्रगट भट ऊछलै जिम पतंगा
तिहां करै घाव देइ ओट वड वेग सुं,
मरद न मुडै ज्जुडै जिम मतंगा ; ९ को०
अंत तस वल घट्यौ कुमर तव ऊलट्यौ,
कट्यौ जंजाल सहु लोक छूटा,
जुद्ध हुइं रह्यौ हथियार रो जिण घड़ी,
जोर धरि वले अंग जूटा ; १० को०
झपटि द्यै थापटे चापटे झापटे,
गहग गंभीर मुख करै गाजा
मूठि अर मुठि पडि ऊठि भड दूठ मचि,
लडि लगावै रखे कोइ लाजां ११ को०
अधिक नहीं वात घइं लात करि घात अति
धग्डिदि धुकि झचकि झुकि दीयै धमका,
जाणि खेंकार करती जिसी अपछरा
ठमकि पद ठावति करै ठमका ; १२ को०
प्रवल भुज जुद्ध खिण मां उपसम थयौ
निठुर कायर भ्रमरकेतु नाठो
धन्न हो धन्य जोगणि कहै चित्त धरि
कीयौ राक्षस थकी हीयो काठौ १३को०
पोन्य पोते हुवै तेह जीपइं सदा
धरम न करै तिके धमधमीजै

पुण्य थी शत्रुदल तेह आई नडै
पुण्य थी शिवसुख तुरत लीजै; १४ को०
सुजस वाध्यो घणो कुमर उत्तम तणौ
कीयो उपगार तिण विण निहोरउं
ढाल छट्ठी विनयचन्द्र इण परि भणै
उत्तस्या वादला वाय जोरै, १५ को०

॥ दूहा ॥

आवै कुमर तिहां थकी, सायर तट मन रंग;
मनुष्य मात्र दीसै नहीं, तुरत कीयौ मन भंग, १
सहु नै राख्या जीवता, मैं कीधो उपगार,
तो पिण मुझनै अवसरै, मूकि गया निरधार; २
लाज विहूणा लोकए, नीच निगुण निसनेह :
आप सवारथ साधिनै, निश्चय दीधो छेह; ३
वहिला खेड़ जिहाज नै, मुझ सुं खेली घात;
तो काइक दीसै अछै, वखत लिखतनी वात; ४
मैं तो कीधी मो दिसा, जेह भलाई आज;
जो न गिणी तो तेहनै, पूछेसी महाराज; ५

ढाल ७ इण रित मोनै पानजी सामरै, एहनी

चलि मन माहे चींतवै सखी, ते तो लोक विनीत,
राक्षस आगलि स्युं करै सखी मन मां सवली भीति रे;
किण परि राखै मुझ चीत रे, भय मरण तणो विपरीति रे;
तिहा दूरि रही ते प्रीति रे, पछै सहु को नी रीति रे, १

उम जाणी रिदै गुण संभरै,
एहिज वृक्ष सुहामणा सखी, घणा वली फल फूल,
तो हिव इण हिज थानके सखी, वसियै करनै सूल रे,
किहा तो न पड़ीजै भूल रे, जिन ध्यान मां रहीयै भूल रे;
करिय गुण ग्रास अमूल रे, जिम न हुवइं चित्त डमडूलरे,२सु०

इहा रहंता कुण जाणसी सखी, एहवो चित्त विमास,
एकण तरुवर ऊपरै सखी, ध्वज बाधी सुविलास रे,
तिहा समरै जिनवर पास रे, अवहड़ मन धरतो आस रे, -
कहतो मुखथी जसवास रे, अमृत सम वचन विलास रे, ३सु०

तेहज द्वीप निवासनी सखी, देवी देखि कुमार,
मन चिंतइ रंजी थकी सखी, माहरइ प्राण आधार रे;
मिलीयो दुखियां साधार रे, जो आय चढै घर बार रे,
तउ सफल गिणुं अवतार रे, थायैं मन मांहि करार रे; ४ सु०

हिव आगलि आवी कहै सखी, सुणि मनमोहन बात रे;
तुम्फ सुं लागी मोहनी सखी, भेदी साते धात रे,
मुम्फ दाफै खिण खिण गात रे, मुम्फ सेती न रह्यो जात रे;
तुं दिल मां परम सुहात रे, स्युं कहियै बहु अवदात रे; ५ सु०

तुं तौ प्रीतम मानवी सखि, हुं छुं अपछर नारि;
तिहां सुख भोगवतां छतां सखी, करमा अन्य प्रकार रे;
संतावें मदन अपार रे, तन बाध्यो मदन विकार रे!
मिलवो तोसुं इकवार रे, में कीधो एह विचार रे; ६ सु०

जोरइ पिण हिव ताहरइं सखी, गलि माहि घालिस बाह,
जे मिलवा नै उल्हसै सखी, किसी विमासण ताहि रे;
ए जोवण लहिरै जाहि रे, टाढी तरुवर नी छाहि रे,
कहियौ आणौ मन माहि रे, अणबोल्या वणसी नांहि रे, ७ इ०
राजकुमर तव इम कहै सखी, स्यानै खोवै लाज;
ताहरइ मन मे जे अछै सखी, मोसुं न सरइ काज रे;
इवड़ी करइं केम आवाज रे, तुं सहु देव्या सिरताज रे,
माहरौ राखीजै माज रे, इतलो हिज दीजे राज रे, ८ इ०
परनारी वहिनी अछै सखी, वलीय विशेपै मात,
तिण तुझ नै साची कहुं सखी सो बाते इक बात रे,
इण वात नरक मा पात रे, नव लक्ष जीव नो घात रे;
दुख सहियै दिन ने राति रे, नवि लहियै खिण सुख सात रे, ६ इ०
वईयर वालै रूसणै सखि भाखै देवी वाणि;
सगपण भगनी मात नो सखी, दाखै केम अयाण रे,
माहरो करि वचन प्रमाण रे, जो चाहै घट मा प्राण रे,
तुं भावै जाणि म जाणि रे, रहिस्यै नहिं काइ काण रे, १० इ०
देवी तव रूठी थकी सखी, काढि खडग कहै ताम,
विण जीवी तु काइ मरै सखी, करि मूरख ए काम रे,
तुझ नै नवि लागे दाम रे, ए सजल सरस छै ठाम रे,
तुं जे नवि घालै हाम रे, कहि ने किम चलसी आम रे, ११ इ०
सूर अवर दिश ऊगसैं सखी, मेरु डिगै वलि जेम;
सायर मरयादा तजै सखी, पिण नवि चूकु तेम रे,

परस्त्री सुँ रमवा नेम रे, तव चिंतइ अपछर एम रे
एतौ नवि राखै मुझ प्रेम रे, निठुरो करीये कहो केम रे ॥१२ उ०॥
निश्चल मन कुमर कीयौ सखी, न पड्यो माया जाल ;
टेक ग्रही ते नवि तजी सखी, वचन तणो प्रतिपाल रे ;
कंठें ठवि शीलनी माल रे, सहु दूर मिट्यौ जंजाल रे ;
एतलै ए सातमी ढाल रे, कहै विनयचन्द्र चौसाल रे॥१३ उ०॥

॥ दूहा ॥

देवी इण परि वीनवै, रीस करी जे काय ;
ओछो अधिको जे कह्यो, खमज्यो तुं महाराय : ॥१॥
एकण जीभइं ताहरा, गुण मोसुँ न कहाय ;
ताहरैं नामै जनम ना, पातक दूर पुलाय ॥२॥
जे बोल्या दशवीस तें, अमीय समाणा बोल ,
हितकारी सहुनें अछै, पिण हुँ निठुल निटोल ॥३॥
हाव भाव विभ्रम कीया, वलि तिमहीज विलाप ;
तो पिण तें तिलमात्र इक, नाण्यो मन संताप ॥४॥
सील लील राखण भणी, तजिवा मांडी देह ,
पिण परनारी जाणि नैं, न कीयौ विषय सनेह ॥५॥

ढाल—८ मृगनयणी राधाजी रे कत कहा रति माणि राजि ए देशी

न कीयौ छेह नेह धरि गाढौ, धरम नी वात वखाणी राज हां ध०
गति मति नैं ध नि ज्ञानी रहै, नहीं वाणी अमीय समाणी राज १
अम्हे पणि जाणी राजि जाणी तु एतो मन जोवा नैं माटैं कुमरजी

मुझ थी वात कहाणी राज जिण धरमनी वात कुमरजी
विषय निजर तुमे नाणी असे० २
इम कहि बारह कोड़ि रयणनी वरषा करि सुप्रमाणी राजि
जिण धरमनी देसण ठाणी मुगति तणी अहिनाणी ३ अ०
मन नी कासल छोड़ि गई हिव निज थानकि सुरराणी राज
कुमर तणा गुण खिण खिण समरै जास कुमत्ति कमलाणी राज ४
प्रवहण देखि इसै इक नैडो नयण तिहा विकसाणी राज
सरलै साद कहै रे भाई ल्यो तुम्हे खबर अम्हाणी, ६ अ०
साभली वाणी पुरुष नी एहवी समुद्रदत्त मन भाणी राज
कोइक नो भागो छै वाहण ल्यौ तुमे खबर आफाणी, ७ अ०
सगला नर तिण पासे आवे, देखि धजा लहकाणी राज
उत्तमकुमर तिहा निज वाता, भाखी चित्त सुहाणी राज ८ अ०
कुमर तणा गुण देखि सहूनी, अंतरगति उलसाणी राज
हिलमिल वैसि चल्या सायरमा, खूटि गयौ वलि पाणी, ९ अ०
भर दरीया माहे ते जल विण, सु करै प्रीति पुराणी राज
तड़कै भडकै भूत थई तसु, वींधइ उदर कृपाणी; १० अ०
निर्यामक कहे शास्त्र निहाली, म करो खाचाताणी राज
हिवणा वेलि उतरसी जलनी, धीर धरो तुमे प्राणी ११ अ०
प्रगट हुस्यै गिर फिटक रयण सौ, कूपक तिहा सुखदाणी राज
जल निरमल ते माहे अछे पिण एहवी वात सुहाणी १२ अ०
राक्षस धीठ रहै इण थानक लोक उकति कहवाणी राज
आठमी ढाल कहै मनरंगे, विनयचन्द्र गुण खाणी; १३ अ०

॥ दूहा ॥

निर्यामक सुणि वातडी, लोक कहै गुण गेह ;
राक्षस ते केहवो अछै, अंगत आकारेह ; १
तेह कहै दीठो किणै, पिण लोकां री वात ;
जे आवै इण थानकें, करै तेहनो घात ; २
महाक्रूर रुद्रातमा, मासभखी विप नयण ;
भ्रमरकेतु नामैं इसो, दुर्द्धर जेहना वयण , ३
जलधि देव नै आगलै तिण ए कीधो नेम ;
वाहण मा जन नवि भखुं, वाहिर थी नहि नेम ; ४
वात करंता तेहवें, ते परवत तिण ठाम ;
जगा ज्योति प्रगट थयौ, सहु को हरख्या ताम ; ५

ढाल—६ योगिना री

कूप तिहां ते निरखि नै रे, जल पूरत सखुवाद सजन जी
सहु निर्यामक नै कहै रे, विरुओ तेह पलाद ; १
सजनजी एक सुणो अरदास स० तेहनो एछै वास स०
करिस्यै सहुनो नास स० थइयै तेण निरास ; २
प्रवहण थी नवि ऊतरै, राक्षस भय असमान
केई नर आगे भख्या रे, कहतां नावै ग्यान ; ३
तिण कारण मरवो भलो रे, तिरपारत इण ठाम ;
पिण न हुवां तेहना वसूरे, लोक वदै सहु आम ; ४
वात सुणी उम लोकनी रे, देई अवचल वाच ;
कुमर विदा वर साहसी रे इण परि जंपै साच ; ५

मुझ सरिखौ माथै छता रे, काइ डरावै आम ;
सुरपति तिण मुझ सामुही रे, घाल सकै नहीं हाम ; ६ स०
तौ ए स्यु छै वापड़ौ रे, एहनी सी परवाह,
स्याल तणौ स्यौ आसरौ रे, सीह तिहां गज गाह, ७ स०
ऊतरि प्रवहण थी तदा रे, जल भरिवा नै काज ;
कूप समीपइं आविया रे, लोकां तणौं समाज ; ८ स०
मन संकित पण तो हिवै रे, लेइ नै जल पात्र ;
राढू आगलि वांधि नै रे, मूक्यो सरलै गात्र, ६ स०
पाणी तिहां नवि नीकलै रे, सोकातुर सहु जात,
चिंतवणा एहवी करै रे, एतौ विरुद्ध वात, १० स०
रीव करइं वलि तरफलै रे, जिम थोड़ै जल मीन ;
ऐ ऐ दुर्जय ए त्रिषा रे, जेण थया सत्वहीन ; ११ स०
मांहो मांहे ते कहै रे, दीसै जलि भृत कूप ;
तोही विन्दु न नीकलै रे, कोइक दैव सरूप, १२ स०
अरति अंदोह करै घणुं रे, मरणौ आयो माय ;
स्युं कीजै हिव वापजी रे, तिरप न खमणी जाय ; १३ स०
के संभारै गेहनै रे, के महिला सुख सेज ;
के वाई के वहिनड़ी रे, के भाई के भाणेज, १४ स०
इम चिंतातुर लोक नै रे, देखी राजकुमार ;
कूप प्रवेशन आदरी रे, सहु मन कीध करार ; १५ स०
जेह विरुद मोटा वहै रे, तेह करै उपगार
नवमी ढाल कही भली रे, विनयचन्द्र हितकार ; १६ स०

॥ दूहा ॥

रज्जु विलंबी नैं कुमर, पइसै कूप मझार,
तिण माहे इक इण परैं, निरखै देव प्रकार ; १
जाली कंचन माहि सुभ, जल ऊपरि तिहा कीध;
मन मा अचरिज ऊपनो, आडी किण ए दीध , २
सुणो सुणो रे लोक सहु, विस्मय वाली वात ;
जाली सोवन नी अछै, दीठां उल्लसै गात ; ३
तिण नीचै जल देखि नै, वडवखती वड़वीर ;
दरी परही करि जालिका, भाजै धर मन धीर , ४
पाणी सुगम कीयौ कुमर, जेह हतो दुरलंभ ,
रलियाइत सहु को थया, पीछो परिघल अंभ ; ५

दूहो सोरठो

गुण समरी नर तेह, कुमर तणा तिण अवसरैं ,
तास चरण नी खेह, सहु को आपण नैं गिणै ; ६

ढाल—१० राग—सामेरी

चतुर नर एह वड़ी अधिकाई,
वाल अवस्था माहि अछै पणि, कुमर थयौ सुखदाई ; १ च०
हिव चालौ प्रवहण पूरी नैं, करि जल तणी सझाई ,
चन्द्रद्वीप माहे वैठा किम, आवै वडम वडाई , २ च०
वात करंतां कूपक माहे, अद्भुत भींत वणाई ;
देव दुवार सहित पाड्डोए, निरखै कुमर सवाई ; ३ च०

लोकां ने कहै हुँ परदेशी, कीधो भाग्य सहाई,
तो देखीजै केलि कुतूहल, खोड़ि नहीं छै काई; ४ च०

प्रथम तजि गृह ते चीत्रोड़े, जाई सगुणता पाई;
राज तिहां महसेन दियो पणि, न लीयौ लोभ समाई, ५ च०

छोडान्या नर रात्रिचर स्युं, करि नै सबल लड़ाई,
साप्रत पाणी परगट कीधउ, सहु जाणें सुघडाई, ६ च०

हिव आगे स्यु थासी ते पिण, देखीजे मन लाई;
धुरि हुँति अभ्यास अछै मुझ, करवी सहु सुं भलाई, ७ च०

चाल्यो तिणहीज द्वार थई नइ, मन मा आणि जिकाई,
पाचे रंग तणा पाहण नी, वाधि वाट विछाई; ८ च०

कंचन मे सोपान सुपेखित, रोमराइ उलसाई;
आगे एक भुवन अति सुदर, वसुधा जाणि हसाई, ६ च०

रतन जडित अंगण तसु दीसैं, अधिकी जास सफाई,
भूमि प्रथम सोवन मा मंडित, विकसित रहे सदाई; १० च०

जोता कुमर इसी पर बीजी, भूमि चढ्यौ वलि जाई;
ते पिण मणि माणक मा मंडित, तिहां रहै चित लोभाई, ११च०

तीजी मुक्ताफल दीपति, तिम चौथी मन भाई;
वलि पांचमी छट्ठी मन मोहै, सातमी भूमि सुहाई; १२ च०

दसमी ढाल थई ए पूरी, विनयचन्द्र चतुराई,
सुणिज्यो आगलि कुमर कुतूहल, तजि मन विघन बुराई,१३च०

॥ दूहा ॥

तिहां कणि तीजी भूमि परि, वैठी एक ज नारि ;
अति वूढी वलि खीण तन, दीठी तेह कुमार ; १
मुख नहीं खिण दांत विण, मुख माखी विणकार ;
केश पणि चक्षु मांजरी, कूबजा नै आकार ; २
देखी कुमर भणी निकट, इम जंपै सुविचार ;
कांइ मरै रे आयु विण, रे गुणहीन गमार ; ३
राक्षस तइं नवि साभल्यौ, भ्रमरकेत इण नाम ;
निज घर तजि आयौ इहां, कोइ नहीं स्युं काम ; ४
कुमर कहै रे डोकरी, ते जोरावर दीठ ;
एक धकै मार्‍यो गुडै, पड़ै स ऊठै नीठ ; ५
पणि ए गृह छै केहनौ, केण करायौ कूप ,
वलि तुं वृद्धा कवण छैं, ते सहु दाखि सरूप ; ६

ढाल (११)

जिनवर सु मेरो मन लीनौ, एहनी

सुणि पथी एक वात हमारी, वृद्धा कहै मन लाई रे ;
तैं पूछ्यो ते ऊत्तर देवा, मुझ मन हरपित थाई रे ; १ सु०
राक्षसद्वीप इहा थी नेड़ो, जिहां नगरी छै लंक रे ;
राज करै तेहनो राक्षसपति, भ्रमरकेतु निसंक रे ; २ सु०
अति वल्लभ तेहनें पुत्री इक, जास मदालसा नाम रे ;
रूपैं करि जीती जाणे रति, अपछर जिम अभिराम रे ; ३ सु०

नवली भली कुमुदिनी विकसै, रवि ऊगमतैं जेम रे ;
भर यौवन रवि ऊगै दिन दिन, कुमरी विकसै एम रे ; ४सु०
भ्रमरकेतु राक्षस एक दिवसै, भर दरवार मझार रे ;
नैमित्तिक नै पूछै चित धरि, प्रसन कहौ सुविचार रे ; ५ सु०
कवण हुस्यै मुझ पुत्री नै वर, ते भाखै मतिवंत रे
कहिस्युं तंत तुम्हारै आगलि, रीस म करज्यो अंत रे , ६ सु०
ताहरी पुत्री नें वर थासी, राजकुमर सुप्रसिद्ध रे ;
तीने खण्ड तणो जे अधिपति, सगली वाते समृद्ध रे , ७ सु०
एहवौ वचन सुणी विलखाणो, मन मा चिंतै वात रे ,
देवकुमर लायक मुझ पुत्री, भूचर किम परणात रे , ८ सु०
इम जाणी मन मांहि न आणी, तास कहाणी जास रे ;
सायर मे गिरिवर नै शृंगै, कूप कराओ खास रे ; ९ सु०
... .
पूर लूण कपूर धुरा धुर, कौणि मन विसवा वीस रे ; १० सु०
जाली कुपक माहि लगाई, पड़िवा नें भय एह रे ;
वात कही तें पूछी ते सहु, वलि सांभलि ससनेह रे ; ११ सु०
ढाल एकादशमी सांभलता, जाणीजै सदभाव रे ,
विनयचन्द्र कुमर तिहा ऊभो, देखै अपणौ दाव रे ; १२ सु०

॥ दूहा ॥

अवर निमित्ती नें वली, पूछइ मन धरि राय ;
मुझ पुत्री कुण परणस्यै, ते मुझ तुरत वताय ; १
ते जल्पै तेहनी परइं, नृप मन आवी रीस ;
कोड़ि उपाय कीया इसु, किम करिस्यै जगदीस ; २

दिल भरि दिल फेर कहि, स्युं तेहनो अहिनाण ;
सांयात्रिक जन मारिवा, तुं गयौ करिनें प्राण ; ३
द्वीपमांहि तोसुँ लड्यो, जिण माहे वहुमांण ;
तुम नै जीतो जोर करि, ते तुं निश्चय जाणि. ४
दल वादल वहु मेलिने, तेह चड्यौ तसु काज ,
एम प्रतिज्ञा करि गयौ, मारेवौ तसु आज ; ५

ढाल (१२)

बिंदली नी,

मास थयौ इक तेहनें, हिव पूछुं खबर हुं केहनें हो,
चटपट चित्त लागी ,
हुं संभारुं जेहनें, जिम मोर चींतारें मेहनें च० १
हीयड़े कुमर विचारइं, माहरो स्युं तेहनै सारैं हो च०
ते फोकट आपौ हारैं, एहवौ कुण मुझनें मारैं हो च० २
सवला नी उमझ्वाट, आयौ तेहनैं निराधाट हो च०
जोरो क्युं मुझ घाट, तो करिस घणा गहगाट हो च० ३
तेह जाणे हुं धीगो, तो मारग रोकी रीको हो च०
हुं पिण छुं रे दड़ीगो, ठीगा ऊपरलो ठीगो हो च० ४
वात विमासैं तेहवैं, ते कुमरी आवी तेहवैं हो च०
यौवन रूपें केहवैं, कवियण भाखैं सहु एहवैं हो च० ५
भर यौवन मां माती, पिण जैन धरम री राती हो च०
न सकैं देखि मिथ्याती, जिणें दूर कीया कुरापाती हो च०६

(यतः) नारी मिरगानयन, रंग रेखा रस राती,
वदे सुकोमल वयण, महा भर यौवन माती ;
सारद वचन सरूप, सकल सिणगारे सोहै,
अपछर जेम अनूप, मुलकि मानव मन मोहै ,
कल्लोक केलि बहु विध करै, भूरि गुणे पूरणभरी,
चंद्र कहै जिण धरम विण, कामिणि ते किण कामरी, १

रमझमकतें चालै, हंसला रै हीयड़ै सालै हो ; च०
रीसै नयण निहालै, पिण घात किसी परि घालै हो ; च० ७
चरण कमल नें ठमकै, निशिदिन काछबियो चमकै हो , च०
नासि गयौ तिहां धमकै, जिम कायर ढोल नै ढमकै हो , च० ८
जेहनी जाघ विराजै, कदली थंभा स्यै काजें हो ; च०
कटि देखी जसु लाजै, निज मा उपमान छाजै हो , च० ९
हृदयकमल सुविकाशे, सोहै दोइ पयोहर पासै हो ; च०
एहवा ते प्रतिभासै, भली कनक कलश छवि नासै हो : च० १०
बांह विहुं लटकाली, अति ओपै लुव मुंत्राली हो , च०
रूड़ी नै रलियाली, हीणी करि चंपक डाली हो ; च० ११
करनो निरखि प्रकाश, आकाश थयो नीरास हो ; च०
कहज्यो मुख थी खास, ए भावातर सुविलास हो ; च० १२
देखी मुख अरविन्द, ढिवसै नवि ऊगं चन्द हो ; च०
माया सुरनर वृन्द, रीझ्या देखी किंनर नागिंद हो ; च० १३
रक्त अधर वलि जाणी, परवाली मन विलखाणी हो ; च०
इण मोसुं अति ताणी, तिण वास्यो कीधो पाणी हो ; च० १४

दन्त पंकत सोभावै, दाडिम कलीया लोभावै हो ; च०
नाक तणै जसु दावै, जिह्वा दीपशिखा पणि नावै हो ; च० १५
आंखड़ीयां अणीयाली, विचि सोहै कीकी काली हो ; च०
हिरण घसैं खुरताली, मारी आँखि लीधी मटकाली हो च० १६
भुंअ सजोड़ै दीपै, वाकड़ी कवाण नै जीपै हो ; च०
मांहो माहि न छीपै, ते भाल विसाल समीपैं हो ; च० १७
वेणि निरखि विशाल, शेपनाग गयौ पाताल हो ; च०
एहवौ रूप रसाल, नहीं छै सही इण कलिकाल हो ; च० १८
रमणी जेह कुरूप, स्युं कहीयै तास सरूप हो ; च०
विनयचन्द्र चित्त चूप, कहै वारमी ढाल अनूप हो ; च० १६

॥ दूहा ॥

सखीया सोल सिंगार जिण, स्युं कहीयें ते नाम ;
रूप तणै अनुमान सहु, जाणो निज निज ठाम ; १
देखै देह कुमार नै, नाखै सनमुख नयण ;
फिर पूठी चढ मालीयै, वोलै मीठा वयण , २
हे वृद्धा तुं माहरै, पासै वहिली आवि ;
स्युं भुंडी आलस करै, खिण इक वार म लाउ , ३
तिण पासै हिव ते गई, पूछै एहनी वात ,
कुण ऊभौ मुझ आंगणै, एह पुरुप शुभ गात ; ४

ढाल (१३)

नणदल नी

इण मन वेध्यो हे माहरो, सर विण केण प्रपंच हे सजनी
ते कहै माहरै आगलै, सचल करै मन खच हे सजनी, १इ०
तेज प्रबल एहनौ अछै, निरमल सूर समान हे स०
नयणे अमृत रस वसै, निरुपम योध जोवान हे स० २ इ०
सारद वदन सोहामणो, हृदय कमल सोभंत हे स०
रूपै मदन थकी रूयडौ, गौर वरण गुणवंत हे स० ३ इ०
पुरुष घणा दीठा हुस्यै, कोइ न आवै दाय हे स०
इण दीठा मन माहिलौ, दौडी मिलवा जाय हे स० ४ इ०
कवण अछै पिण जातिनो, ते कल न पड़ै काय हे स०
पूछ्यां विण हिव तेहनै, मन किम ठाम रहाय हे स० ५ इ०
ऊतर आपै डोकरी, सुंदरि म करि विलाप हे स०
विरह गहेली तुं थई, जाग्यौ मदन नो ताप हे स० ६ इ०
एह मन मान्यौ ताहरै, तिणि कारण सर जाण हे स०
जौ चूकै ए निजर थो, तिण भय तु तजै प्राण हे स० ७ इ०
मोह तणै वसि जे पडया, थाइ सही सु अंध हे स०
जिण सुं रस कस तिण विना, जाणै अवर ते धध हे स० ८
स्युं तुझनै नवि साभरं, इण मन्दिर नो हेत हे स०
एहनै मिलवा टलवलै, पिण पहिली हो चित चेत हे स०९इ०
तेह वचन अवहेल नै, तेडै कुमर सुजाण हे स०
ऐ ऐ मन नी मोहनी, स्यु न करै काम हे स० १० इ०

परदेशी तुं हो कवन छै, बोलै इम धरि नेह हे स०
कुमर कहै छु मानवी, स्यु इवड़ौ संदेह हे स० ११ इ०
वारू किम आया इहां, कुमर पयंपइ एम हे स०
केवल तुझ नै निरखवा, आयो छुं धरि प्रेम स० १२ इ०
लाजन लोपै सुन्दरी, सुकुलीणी सिरदार हे स०
छोड़ि कपट हाजी कहै, ना न कहै सुविचार हे स० १३ इ०
ढाल वखाणी तेरमी, विनयचंद्र तजि रेह हे स०
ते तिम हिज करि जाणज्यो, मत आणौ संदेह हे स० १४इ०

॥ दूहा ॥

भले पधास्या कुमरजी, पावन कीधो गेह,
चक्रवाक रवि नी परै, थास्युं लागौ नेह, १
नाम तुमारूं स्युं अछै, किम छोड्या मा बाप,
किण नगरो किण देशना, वासी छो महाराज, २
कुमर कही सहु वातड़ी, करि कुमरी आधीन,
विहुंना मन लहस्या लियै, नीर विषैं जिम मीन; ३
वात कही वृद्धा भणी, पाणिग्रहण संकेत,
तिण दीधउ आदेश इम, जाणी विहुंनो हेत, ४
भावी न मिटै कुंयरी, तुम्हे थया छो एक,
मन मान्यो सोढो मिल्यो, परणो आणि विवेक; ५

ढाल (१४)

सीयाला हे मलइ आवीयो, एहनी

नवलो नेह लगाडिवा, कुमरी नै हो ते कुमर सुजाण,
सहेली हे नयणे मिलै, वलि वयणे हो ते चवै मीठी वाणि,
स० चोल मजीठ तणी परै, रंग लागोहे माहो माहे प्रमाण १

स० जोड़ी सरखी जाणि नै, ते परणै हे यौवन नै लाह;
स० विचि माहे थई डोकरी, तिहां कीधो हे गंधर्व वीवाह, २

स० हाथ मुकावण द्यै तिहा, मणि माणिक हे भलीरतन नीकोड़ि;
स० द्यै आसीस सुहामणी, मत लागो हो इण जोड़ि नै खोडि, ३

स० अंग विलेपन कीजिये, कस्तूरी हे नूतन घनसार,
स० कुमर कुसुम सायक समो, रंभा नै हे कुमरी अवतार; ४
स० खावो विलसौ भोगवौ, जो जग माहे किम जाणौ साच,
स० स्वाद अछै इण वात मां, इम जपइ हो ते वृद्धा वाच, ५

स० खिण खिण मा पहरइ तिके, जिहां भूषण हे नव नवला वेस,
स० मन गमती मोजा करै, भय नाणै हे केहनो लवलेश; ६
स० धरम तणी चरचा करै, मन रूडै हे वर वींदणी तेह;
स० जिम जिम चतुरपणो भजै, तसु तिमतिम हे हुवै विकसित देह, ७
स० फूलें फलै रलीयामणा, देखाड़ै हे कुमरी आराम,
स० जल ना कुंड सुहामणा, लेइ नै हे तिहां नाम सुठाम, ८
स० पालोकड़ निज हरणली, खेलायै हे मन धरि ऊछरग,
स० घडी घडी नै अन्तरै, विहु नो हे थयो चढतो रंग. ९

स० प्रीतम नो चित रीझीयो, मधुर स्वर हे गाई गुणगीत ;
स० पति भगती ए कुंयरी, पदमण नी हे जाणै सहुरीति ; १०
स० कुमर सतेजो हिवथयो, कौमुदी करि जाणे जिमचंद,
स० लोक सहु पिण इम कहै, नारी विण हे जाणौ नर मन्द, ११
स० ढाल कही ए चौदमी, तिण माहे हो पहिलौ अधिकार,
स० मनगमतां पूरौ थयौ, ते तौ थाज्यो हें सुणता सुखकार ; १२
स० निजमति विस्तरवा भणी, मैं कीधो हे ए प्रथम अभ्यास,
स० विनयचन्द्र कहै दाखिस्युं, आगै पणि हे द्वितीय प्रकाश, १३

इति श्री विनयचन्द्र विरचिते सरस ढाल खचिते सच्चातुर्य्य शौर्य्य धैर्य्य गांभीर्य्यादि गुण गणा मत्रे श्री मन्महाराज उत्तम-कुमार चरित्रे पर जनपद संचरण अश्व परीक्षा करण चित्राकूटावनिध मिलन भृगुकच्छपुर गमन यान यात्रा रोहण पलाद निर्द्दलन भूमिगृह प्रवेशन मदालसा पाणि-पीडनो नाम द्वितीयाग्रजो-ऽधिकारः ॥ १ ॥

द्वितीय प्रकाशः

॥ दूहा ॥

हिव समरूं श्री सिद्धपद, जेहनौ सबल प्रभाव ;
आतम तत्व विचार नै, ग्रहस्युं गुण सद्भाव ; १
बीजै अधिकारै सहु, साभलिजो वृत्तान्त,
विकथा वैर विरोधथी, थाज्यो भविक प्रशान्त, २
कुमर कहै कुमरी भणी, हिव तो हुं न रहेस ;
वैरी नो थानक तजी, जास्युं देश विदेश ; ३
कूड कपट बहु केलवै, राक्षस नी अपजात ;
तिण कारण हुँ चालस्युं, सो वाते इक वात, ४
तुं रहिजे इण थानकै, मुझ नै दे हिव सीख ;
तदनंतर कुमरी वदै, हुं छुं तुझ सरीख ; ५
स्यानै राखै छै इहा, स्युं रहिवा नौ काम,
हुं छाया जिम ताहरै, कहिवौ न घटै आम ; ६
कर सेती करजोड़ि नैं, जे नर दाखै छेह ;
तेहनैं भलो न को कहै, हेज विहूणा जेह ; ७

ढाल (१)

मेरी बहिनी कहि काई अचरिज बात, एहनी

जिण दिवस हुं तुझनै मिली, कीधो वीवाह विचार ;
तिण दिन थकी मांडी करी, कीधी में इकतार ; १

माहरा वालहा, ताहरी न तजुं लार, तुं हीयड़ा नुं हार;
तुं यौवन सिणगार, तुं भोगी भरतार ; मा०
स्त्री तणै वसि जे पड्या, निश दिवस कथन करेह ;
कुमरइं वचन मानी लियउ, अविहड़ नेह धरेह ; २ मा०
हिव रतन पृथिवी आदि दे, जे च्यार प्रगट प्रधान ,
पाचमो गगन तणी परै, सुन्दर नव नव वान , ३ मा०
ते पाच रतन मदालसा, लेई चलै प्रीउ साथि ,
स्युं करै रहिनें डोकरी, चलिता पकड्यो हाथ , ४ मा०
जण त्रिण एक मतं थई, आव्या कूपक तीर,
तिहा समुद्रदत्त ना आदमी, ऊभा काढै नीर , ५ मा०
नीसस्या रज्जु तणै वलै, तीने जणा तिण काल ;
मन दीयौ कुमरी मां सहु, निरखि निरखि सुकमाल , ६मा०
कुमर नें पूछै किहा जउ, परणी नवल ए वाल ;
अपछर किंवा किन्नरी, अथवा रंभ रसाल , ७ मा०
चिंता करीनें तुम तणी, अम्हे रह्या इण हिज ठाम;
नयणे निहाली तुम भणी, हरख्या आतम राम ; ८ मा०
विरतंत सहु कुमरे कह्यौ जिम थयौ धुर थी मांडि,
सापुरुप भूठ कहै नहीं, नेह न नाखै छाडि ; ६ मा०
प्रवहण तिहा थी पूरिया, करता अत्यन्त विनोद;
लोकनो कुमरे मन हस्यो, उपजावी आमोद ; १० मा०
पाणी वलि पूरौ थयौ, लांघतां कितलौ पंथ ;
एहिवुं थानक को नहीं, काढ जोई ग्रन्थ , ११ मा०

पूठिली परि ते गलगलै, पिण नहीं कोई उपाय .
सगलै जी कहै जल नैं विना, जीव विछूटौ जाय, १२मा०
मन मा कुमर इम चिन्तवै, ए थई तीजी वार ,
पीड़ा करै छै पापीयौ, विरुयौ कोई वेकार ; १३ मा०
अधिकार बीजैं ए कही, अति भली पहिली ढाल ,
इम विनयचद्र कुमार सुं, वात कही उजमाल , १४ मा०

॥ दूहा ॥

इण अवसर कुमरी कहै, सुणि सोभागी कंत ,
जिम सहुनो थास्यै भलौ, तिम करिस्यै भगवंत,१
एतौ गलिगलि लोक छै, थायै सवल अधीर ,
दे सहु नै आस्वासना, तनिक कोई सधीर , २
कुमर कहै किम थाय ते, सूका सहुना होठ ,
कहिवौ तो दूरे रह्यौ, मरण तणी छै गोठ ; ३
हिव तु जउ उपगार करि, मेटि सहुनी पीड़,
स्युं भाखै छै मो भणी, भाजि दुहेली भीड़ , ४
सी राखइं छै चित्त मा, गुगा केरी गाह ,
तिम करि माहरी सुन्दरी, जन जंपइ वाह वाह , ५

ढाल (२)

कन्त तमाखू परिहरौ एहनी

डावी नैं वलि जीमणी. वात वणै नहीं काय मोरा लाल
नीर विना दरियाव मा, लोक घणुं अकुलाय मो० १

मिठड़ा राजिंद् किल रहौ, इक मानो मोरी वात मो०
महिर करो मो ऊपरै, जिम न हुवें उतपात मो० २ मि०
रतन करंडक माहरो, तुम पासै छै जेह मो०
पाँच रतन ते माहि छै, गुण सांभलि गुण गेह मो० ३ मि०
भूदेवाधिष्टित भलो, पहलो रत्न उदार मो०
तेहनो निरखे पारिखो, जिम न हुवें अकरार मो० ४ मि०
थाल कचोला वाटला, वासण चरवी चंग, मो०
मग गोधूमादि दियै, प्रथवी रतन सुरंग, ५ मि०
नीर रतन भजे धरै, जल वरसै ततकाल मो०
तेहनो हिवणां काम छै, कटिसी दुख नो जाल मो० ६ मि०
अगनि रतन थी सिद्धि हुवै, ते सुणि दीनदयालु मो०
नवली नवली रसवती, चावल नें वलि दाल मो० ७ मि०
सुरकी नें लाडू भला, पइंडा सखर सवाद मो०
खाजा ताजा देखतां, हरइं क्षुधित विखवाद मो० ८ मि०
वात समीरण चालवें, सुरभि सीतल नें मंद मो०
गगन वस्त्र जास कहीयै, तजै तिमिरनो फंद मो० ९ मि०
पांच रतन ए लेइ नै, करि प्रीतम उपगार मो०
हुं करिस तो ताहरो, नवि रहसी व्यवहार मो० १० मि०
उपगारी सिर सेहरौ, तुं जग माहि कहाय मो०
केम कठिन थायै इहा, कहियौ करि महाराय मो० ११ मि०
वचन सुणी नारी तणा, कुमर विचारै एम मो०
ए गुणवती भामनी, वांछै सहु नें खेम मो० १२ मि०

बाप अधम छै एहनो, पण एहतो धरमीण मो०
आज लगै दीठी नहीं, एहवी नारि प्रवीण मो० १३ मि०
बीजै अधिकारै थई, बीजी ढाल विचित्र मो०
विनयचंद थास्यै सही, नीर प्रगट सुपवित्र मो० १४ मि०

॥ दूहा ॥

रत्न करंड उतारि नै, काढी नीर रतन्न,
कूवा थंभै बांधिनै, करि नै सबल यतन्न, १
केसर नें कस्तूरिका, कुंकम अगर कपूर;
चढतै मन पूजा करै, भाव सहित भरपूर, २
झर कर नै बरसै, तिहा, जलद अखंडित धार;
जाण्यो उलस्यौ भाद्रवो, ध्वनि गंभीर अपार; ३
सहु लोके भाजन भर्‌या, नीर तणौ करि पान;
शीतल तन करि चालिया, धरि निज रक्षकै धान,४
खूटि गयौ धन धान्य वलि, मारग मांहे नेट,
पृथिवी रतन दियौ तिहां, ना सति नाखी मीट; ५
पांचे रतन तणै वलै, जिहा तिहा पामै जैत,
बीजा ते सहु बापड़ा, कुमर बडौ बिरुदैत; ६
रावल राणा राजवी, गुण आगलि सहु जेर;
जाणो माणस गुण विना, धूलि तणो जे ढेर, ७

ढाल (३)

हा चन्द्रवदनी हा मृगलोयण हा गोरी गजगेल च० एहनी

सेठ तणै मन मांहि उदधि -मां कुमरी वसै निशदीश;
विरह विलूधो रे विसवावीस ;
नलिनी देखि भमर जिम अटकै, तिम तसु मिलण जगीस; १वि०
मुखडै जंपै रे हा जगदीस, सास खैंची नै रे धूणै सीस ;
हे गौरी तें ए स्युं कीधौ, मनडो लीधो खंच ; वि०
ताहरै सरिखी अंतेउर विच, मुझ न लागै अंच , वि० २
इम विलपतो जाणै जोडुं, भावैं जिम तिम प्रीत , वि०
एहवी नारी नै जो माणुं, तो न चढै काई चीति , वि० ३
इम मन धारी तेह विचारी, वचन कहै सुख कार ; वि०
कृपा करी इहाँ आवी वैसौ, उत्तम राजकुमार , वि ४
वात कहौ काई सुख दुखनी, तेवड़ि मुझ नै मीत , वि०
हुं पण कहिसुं माहरा मन नी, ए रूड़ी छै रीति , वि० ५
ताहरा गुण देखी नै रीझ्यो, रीझ्यौ देखी रूप ; वि०
हिव निश्चय सेवक छु ताहरो, तू मुझ स्वामि अनूप ; वि० ६
मोहनगारो तु मछरालौ, सगुणा सिर कोटीर , वि०
तइं तो प्रेम लगायो एहवौ, चोल रंग नो चीर ; वि० ७
पंचाख्यान माहे तुझ कह्या छै, मित्र पणैना तीन ; वि०
परम मित्र ते प्रथम वखाणौ, रहियै जसु आधीन , वि० ८
द्वितीय भलाई राखै मुख सुं अवसर पूछै खेम ; वि०
तृतीय मिलै मारग चलतां, मित्र तणी विधि एम ; वि० ९

रजनी तुं जाजे निज थानक, दिवसे करिस्यां ख्याल; वि०
ताहरै मिलियै माहरा मन नो, टलीयौ सबलौ साल ; वि०१०
माहरै तुं छै परम सनेही, प्राण तणौ आधार ; वि०
इत्यादिक वचने संतोषै, करि चुबन करि सार , वि० ११
कुमरी तेड़ि कहै निज पति नै, नीच थकी स्यौ नेह ; वि०
प्रीतम ए तौ वड़ौ ज अधर्मी, निपट कपट नौ गेह, वि० १२
मोर मधुर स्वर करि नै बोलै, रंग सुरंगौ होइ, वि०
पुँछ सहित विषहर नै खायै, इण दृष्टान्ते जोइ ; वि० १३
दाढ गलै सहुनी गुल दीठा, तेहवौ नारि शरीर , वि०
दृश्यमान उपमान नै नइण, जेहवौ वारिधि नीर ; वि० १४
केवल मुझ हरिवा नै काजै, माडै तुम सुं रंग , वि०
प्रीत तणा वीजा मुख दीसै, ए कायरो रे कुरग ; वि० १५
ए वीजै अधिकारै तीजी, ढाल कही सुविलास ; वि०
विनयचन्द्र जो मुझ नै चाहै, मानि मोरी अरदास ;वि० १६

॥ दूहा ॥

माणस कालै सिर तणौ, मिसरी घोलै मुख ;
हीयड़ा नौ कपटी हुवै, अवसर आपै दुख ; १
तिण ऊपरि साभलि कथा, वाल्हेसर सुविदीत ;
राजकुमर इक वन विषै, गयो सहू ले मीत ; २
वीजा पिण पाछलि कीया, तिज घोड़ो छोड़ाणि;
पहुतौ वन माहे तुरत, अंग पराक्रम आणि ; ३

कुमर परीक्षा जोइवा, आयो तिहा वन देव ;
रूप कीयो वानर तणो, तज पूरवली टेव ; ४

ढाल (४)

प्रोहितीया थारै गलै जनोई पाट की रे एहनी

वोलइ ते आगलि वानर कूदतो रे,
आवो मन ना मानीता मीत रे ;
आगति स्वागति करिस्युं थांहरी रे,
रजनी माहरै घरि करो व्यतीत रे, १बो०
आंबा रायण नालेरी तणो रे
सवल वल्यौ छै एहज कूँडरे ,
तेण थानक चालौ वैसियैरे,
पिण मुझ नैं जावौ मत छंडिरे ; २ वो०
रूंख तणै थुड़ि घोड़ो वाधि नै रे,
कुमर चढ्यौ वानर नै साथ रे ,
साख ऊपरि वैठा जाइनैं रे,
नेह धरी तिहां जोड़ै वाथ रे ; ३ वो०
जल निरमल ल्यावै नदीया तणौ रे,
पान तणा संपुट करी सार रे ,
सरस रसाफल आणि नैं रे,
ते करै कुमर तणी मनुहार रे ; ४ वो०
राजकुमर पूछै वानर भणी रे,
काइक अणदीठी कहि वात रे ;

तुं तो हिव माहरौ प्रीतो थयो रे,
तुझ नै दीठां उलसै गात रे ; ५ वो०
तिहा वली सवलो सिंह विकूरवी रे,
ते कहै मै दीठो इक सीह रे ;
माणस नी लेतो वासना रे,
आवै छै इण वार अवीह रे ; ६ वो०
न करो नींद कुमरजी थे हिवै रे,
इण तरु ऊपरि रहो सचेत रे ;
इतलै सीह तडूकी आवियौ रे,
फाटै मुख जलहलता नेत रे ; ७ वो०
कुमर कहै स्युं करिस्या वानरा रे,
सीह तणौ भय मुझ न खमाय रे ,
तिम वलि नींद आवै छै पापिणी रे,
करि करि वहिलौ कोइ उपाय रे , ८ वो०
राजि सूवो मुझ खोला मा तुमे रे,
दोइ प्रहरनी द्युं छै सीम रे ,
कुमर सयन करि वानर अंक में रे,
रयणि गमावे गलती हीम रे , ६ वो०
वानर नैं भाखै इम केसरी रे,
तुं वन नो वासी छै नेट रे ;
आस करै जो निज देही तणी रे,
तो करि कुमर तणी मुझ भेट रे , १० वो०

इम कहता हवै ते जागीयौ रे,
वानर सूतो तेहनै अंक रे,
मन लेवा नें कपट निद्रा करी रे,
खाचें स्वासोश्वास निसंक रे, ११ वो०
तिमहीज मृगपति कुमर भणी कहै रे,
खाईस हयवर ताहरो आज रे,
नहिं तर पटकी दे वानरो रे,
तिल भरि मकरि सूनी लाज रे, १२ वो०
कहता वे हाथे करि नांखीयो रे,
वानर ऊडि गयो आकाश रे;
सीह अरूपी लागो मारगे रे,
रहीयो मन मा कुमर विमास रे, १३ वो०
भाखी एहवी वात मदालसा रे,
उत्तम चतुर वात सुणी निरवंध रे,
इम अनुमान प्रमाणौ जाणियै रे,
इहां जुड़तो एहीज संबंध रे, १४ वो०
च्यार श्लोक तणै अनुयायिनी रे,
आगलि कहिज्यो वात सुरंग रे,
स्वाभाविक फल आश्रय आणिनें रे,
मै न कही श्रोता नै संगि रे, १५ वो०
बीजै अधिकारइं पूरी कही रे,
चौथी ढाल सरल श्रीकार रे,

जग मा विनयचन्द्र यश ते लहै रे,
जे न करै परद्रोह लिगार रे ; १६ वो०

॥ दोहा ॥

फेरी नै कुमरी कहै, प्राणपीयारा नाह ,
पछतावै पडस्यौ पछै, दिल ऊलससी दाह ; १
बात कुमर मानै नहीं, साचौ जाणै साह ,
सजन मन माहे रमणि, कूड कपट हुवे काह , २
सेठ अछै धर्मातमा, वहु राखै छै प्रेम ;
कहि नारी वरसि अगणि, चद्र किरण थी केम , ३
तेहवइ निजर चुकायवा, सेठ दिखलावै खेल ;
वर गिरवर जल कातिमय, वल जल रतनी रेल , ४
हुइं हीया नौ जालमी, करतो सबली हेल ;
पग सुंठेलि समुद्र मा, नाख्यो कुमर उथेल ; ५

ढाल (५)

चाल :—विडलै भाग घणौ छै राजि

कुमर पडंतो इण परि भाखै, मिश्र वचन शुभ भावै ;
गुण ऊपर अवगुण लेईनै, पापी खोडि लगावै , १
पापी स्युं कीधो तैं एह, काज कुमाणम वालौ ,
पडत समान मच्छ एक मोटो, मुख प्रसारि नं वंठो ,
ततखिण तेह कुमर नै गिलीयौ, वलि जल ऊंडै पइंठौ; २ पा०

प्रवहमान उछलित वेलि वसि, पार जलधि नो पायो ;
पुण्यादिक अनुभाव कुमर नो, जलचर निमित्त कहायौ ; ३ पा०
तिहाँ मच्छ नै अभिलाप संचरै, धीवर सायर कूलै ,
तसु दृग बंधन थयौ माछलो, जल प्रायक विण शूलै ; ४ पा०
माया जाल सहु नै सरिखौ, ते सहु कोई जाणै ;
अंतःकरण तजै मीनादिक, द्रव्य जाल अहिनाणै ; ५ पा०
खिण इक मां ते पकड़ि विणास्यो, तीखण कठिन कुडाड़ैं;
यादस आचरणादिक तादृश, फल तेहनै न गमाड़ै ; ६ पा०
तेहना उदर थकी नीकलियौ, उत्तमकुमर सवाई ;
रंच मात्र पिण घाव न लागौ, ए जोवौ अधिकाई ; ७ पा०
सगला धीवर अचरज पाम्या, एस्युं थयौ तमासौ ;
कुमर कहै रे मूढ गमारा, इण वाते स्यौ हाँसौ ; ८ पा०
सदा आपदा पड़ै पुरुष मां, तम ने साचौ भाखुं ;
घण घाते हुँ नवि भेदाणो, तो डर केहनो राखुँ , ९ पा०
धीरवंत कुमर नै निरखी, धीवर पाइ लागा ;
स्वामी पणै थाप्यौ सहु मिलनै, जस ना वाजत्र वागा; १० पा०
रहै कुमार तिहाँ सुख सेती, फल साधन ए राखै ;
जेह वृत्त जिन पक्षै बाधक, तेह कदापि नविभाखै , ११ पा०
मिथ्यादृष्टि तणो उत्थापक, व्यक्त गुगे सुविलासी ,
वलि विरक्त मोहादिक भावै, एक युक्ति अभ्यासी ; १२ पा०
ढाल थई बीजै अधिकारै, तुरत पाचमी पूरी ;
विनयचन्द्र आगलि ते कुमरी, विहुं ढालां मे म्हूरी ; १३ पा०

॥ दूहा ॥

हिव चिरतंत सुणौ सहु, आदरवंत अचूक ;
सेठ तिहाँ ठगनी परै, पडीयौ पाडै कूक ; १
हा ! बांधव हा ! वल्लहा, हा ! मुझ जीवन प्राण ;
पाणी में पडतौ थकौ, इम स्युं थयो अजाण ;
तुझ सरिखा किहांथी मिले, गौरव गुण नै योग ;
मिटसी किम ताहरै विना, माहरै मननो सोग , ३

ढाल (६)

ओलुनी

कोलाहल लोके कियो जी, कुमरी सुणीयो रे ताम ,
सायर माहे नाखीयौ जी, इण निरलज्ज नो काम; १
न करिस्यौ नीच पुरष सुं नेह ;
करसी तेह पछतावसी जी, निश्चै नै निस्संदेह ; २ न०
रोवै अबला एकली जी, खिण खिण मा मुंझाय ;
सहजै अगनि उछालतां जी, लागि उठी क्षण माहि ; ३ न०
झूरइ पूरइ हेज स्युं जी, मांडइ मरण उपाय ;
प्रियु विरहागति झालस्युं जी, देही संतप थाय ; ४ न०
प्रियु नै द्यै ओलंभडा जी, कथन न कीधो मुझ ;
तुं मुझ नै मेल्ही गयौ जी, हिवस्युं कहियै तुझ , ५ न०
हुं तुझ नै कहती सदा जी, विगडन हारी वात ,
ते सांप्रति साची थई जी, दुरजण खेली घात ; ६ न०

तैं भद्रक परिणाम थी जी, सुविशेषै मन लाय ;
ऊपरलै आडंवरे जी, राचि रह्यो मुरझाय ; ७ न०
प्रीतम मारा भमरलां जी, कांइक कीजै संक ,
फुल्या दीसै फुटरा जी, आफु आडै अंक ; ८ न०
नास थयौ जीवतव्यनौ जी, पिण सी पूगी आस ;
तें कलपद्रुम जाणि नै जी, सेव्यो निगुण पलास ; ६ न०
लाज न आवै एहनें जी, वलि न करे निज सूल ;
मुख कालो करि नै रह्यो जी, जिम केसूनो फूल ; १० न०
यतः—धन्ना होइ सुलखणा, कुसती होइ सलज्ज ;
खारा होइ सीयला, वहु फल फलै अकज्ज ; ११ न०
हा हा हिवहुं किम रहुँ जी, ताहरइ विण खिण मात्र ,
विरह व्यथा नी माहरै, हीयडै वूही दात्र ; १२ न०
वीजै अधिकारइं करै जी, ढाल छट्ठी वहुलाज ;
विनयचन्द इम उपदिसै जी, रोयां नावै राज ; १३ न०

॥ दूहा ॥

वारंवार मदालसा, कहै निसासां नांखि
किण आधारै जीवियै, छेदी मांहरी पांख १
इवड़ा वखत किहां थकी, कायम रहै सोभाग
सिर कदि आवै माहरै, अंगूठानी आगि २
पंखिण पंखी वीछडै, जिम शोकातुर थाय ,
तिम कुमरी नै पिउ विना, खिण इक खिण न सुहाय ३

ढाल (७)

कागलीयो करतार भणी सी परिलिखु रे, एहनी

करम तणी गति को नवि लखै सकै रे, सहु जाणै छै एम ;
पिण सयणां रे विरहे हीयडो रे, फाटै हो रन सर जेम , १ क०
कुमरी विचारै रहिनै जीवती रे, स्युं करिस्युं निश दीस ,
मरण नथी का देतो पापीया रे, फिट भुंडा जगदीस , २ क०
सांभलि सजनी प्रिउ नै पाछलै रे, करिस्युं झंपापात ;
वारिधि पिण जाणैस्यै प्रीतड़ी रे, जगि रहसी अखियात , ३ क०
इम सुणि ते आकुल थई रे, इण विध जंपै रोइ ;
कोइ न ऊगै वीरा चांदला रे, एह अधोमुख जोइ , ४ क०
कमल विलासी क्युं विकस्यो नहीं रे, इण तो कर सकोचि ;
हीयड़ा आगलि दे प्रीयुडा तणौ रे, मांड्यौ सबलो सोच ; ५ क०
वलि वनवासी पसुवा हिरणला रे, जोवो मन धरि नेह ;
विरह वियोगइं नयणां मीचिया रे, तिण कारण कहुं एह; ६ क०
इम कहती सहुनै रोवरावियारे, वलि भाखै उपदेश ,
होवणहार पदारथ नवि मिटै रे, मकरि मकरि अंदेश ; ७ क०
बालमरण मन मां नवि आणियै रे, इण साहस नहि सिद्धि ;
जैन तणै आगम जे वारियै रे, तिण सरसी अण किद्ध ; ८ क०
जीवंता मिलस्यी तुझ नाहलौ रे, पंखी नी परि जाण ;
जिम इक हंस सरोवर मा रहै रे, महिला सहित प्रमाण ; ६ क०
एक दिवस सर नैं कूलें गयौ रे, जिहा बहुला सेवाल ,
अणजाणंता माहि अलूझियौ, कंटइ आयौ काल ; १० क०

नेह तणी बांधी तिहां हंसली रे, धसिवा लागी जाम ;
मयण कहै तेहनै पासै थकारे, ए तुं मत करि काम ; ११ क०
तेह तणै वखते तिण रन्न मै रे, आयो पुरुष ज एक ;
तिण सेवाल सहु दूरे कियां रे, हंसण नी रही टेक ; १२ क०
एक घड़ी मां ते सव तौरे, वलि विहुं थया रे सचेत
तुं निश्चय जाणे तेहनी परै रे, पिण एम धरि तुं हेत ; १३ क०
देखो इण पापी कीधी तिका रे, वीजो न करै कोइ ;
कुमरी कहै धिग माहरा रूप नै रे, एहा अनरथ होइ ; १४ क०
वीजे अधिकारइं ए सातमी रे, ढाल कियौ प्रतिभास ;
विनयचंद्र कहै दुखीयां माणसा रे, घटिका जाय छमास; १५क०

॥ दूहा ॥

इम विलपंती देखि नै, आवै सेठ निलज्ज ;
सुवचन कहै संतोप नै, एहवी करै अरज्ज ; १
मित्र हतो ते माहरै, उत्तमकुमर सुजाण ,
हिव तेहनै दीठां विना, छूटै छै मुझ प्राण ; २
ते सरिखा तो पामीयैं, पुण्य तणै संयोग ,
विरह सह्यो जाइ नहीं, जिम घट व्यापै रोग ; ३
ते चिन्तामणि सारिखो, आय चढ्यौ थो हाथ ;
पिण जाणौ छो किम रहै, दालिद्री घर आथ , ४
मन मे किण जाण्यो हतो, इण परि थासी अंत ;
छट्ठी रात तणा लिखत, ते पणि थायै तंत ; ५

ढाल (८)

चाल :—पाटोधर पाटीयइ पधारो, एहनी

सोहागिण रंग रंगीली, तुं प्रेम महारस झीली,
साभलि मुझ वात रसीली ; १

हठीली तेहनें स्युं झूरै, ते नजर थकी थयौ दूरै,
हिव मुझ नै थापि हजूरै ; २ ह०

तसु जाति पाति नहीं काई, नहीं कोई जेहनें भाई ,
वलि बाप न काई माई ; ३ ह०

हुं तुझ नै आवी मिलीयौ, वीतग दुख सहु टलीयौ,
घर अंगण सुरतरु फलीयो, ४ ह०

माहरै हिव था धणीयाणी, तुं हिज मन मांहि सुहाणी,
जिम राजा नै पटराणी ; ५ ह०

माहरौ घर ताहरै सारै, वलि जो सिर मांहे मारै,
तो पिण वलिहारइं थारै, ६ ह०

मुझ थी सुख भोगवि नारी, कहियौ करि मोहनगारी,
थारी सूरति लागै प्यारी; ७ ह०

करता जो प्रीत न कीजै, तो गाढो अपजस लीजै,
वचने कोई न पतीजै ; ८ ह०

जे प्रारथीया निरवासी, जग मा एतलौ ही जरसी,
सगला नर इम हीज कहसी,९ह०

वलि जेह करें उपगार, न गणै ते साझ सवार,
सहु बोल नो ए छै सार, १० ह०

ए यौवन ना दिन च्यार, लटकौ छै इण संसार,
कालांतर नि भलीवार, ११ इ०

मिलतां सुं नयण मिलावै, प्रस्तावै विरह बुझावै,
तेहनै कुण दावै आवै ; १२ इ०

वहु वात कहीजे केही, मुझ मति तुझ चित्त सुरेही,
तुं किम थाइं निसनेही, १३ इ०

दूहा :—कामातुर न कहै किसुं, न करै स्युं न अज्ञान;
कीजै इण वातइं किसौ, विनयचद्र विज्ञान ; १

कामातुर नी सुणि वाणी, कुमरी मन मांहि लजाणी,
एहवी किम वात कहाणी , १४

ढाल आठमी एम वणाई, वीजै अधिकार सुणाई,
पिण विनयचंद्र चित नाई ; १५

॥ दूहा ॥

कुमरी मन मा चितवै, किम रहसी मुझ लाज ;
ए पापी लागू थयौ, करिवो कोय इलाज ; १
सील रयण नें कारणै, अनवछेदक वात ;
जिम तिम करी उपचार ज्यूं, ते विघटै व्याघात ; २
ठीक सील इक राखवौ, मन करि निज अनुकूल,
झूठ वचन पण भाखिनै, एह नें मुख द्युं धूल ; ३

ढाल (९)

चाल :वीर वखाणी राणी चेलणा जी, एहनी,

वीनती सेठ जी सांभलौ जी, सरस पीयूष समान ;
तुझ थकी चित लागी रह्यो जी, लोह चंबक उपमांन ; १
ताहरै माहरै प्रीतड़ी जी, आज थी थई रे प्रमाण,
पिण दस दिवस मुझ कंत नी जी, काइक राखीयै काण ; २
निजर नौ नेह जिण सुं हुवै जी, वीछड्या दुख न खमाय ;
तेह सांप्रति किम वीसरै जी, जेहनो जीवन प्राय ; ३
किण इक नगर मे जाय नै जी, साख धर राखि नै राय ;
मनगमणी रमणी हुस्युं जी, सेवस्युं ताहरा पाय, ४
जेह काचा हुवै मन तणा जी, वात मानै नहिं साच ;
पिण तुमे सगुण सापुरुप छौ जी, मानज्यो अवचल वाच ; ५
इम सुणी सेठ मनि हरखीयौ जी, परखीयौ स्त्री तणो भाव ;
भोडलो एम जाणै नहीं जी, इहा न कोलावन साव ; ६
हिवै रे मनोरथ-मालिका जी, पूरसी वालिका एह ;
सेठ गयौ निज थानकै जी, चित मा चीतवी तेह, ७
तिण समै ते वृद्धा कहै जी, राखीयौ तें भलौ सील,
जेह थकी भय सहु त्रासवै जी, पामियै शिवपुर लील ; ८
वात अनुकूल लेई करी जी, प्रवहण दीयौ रे वलाउ ;
नव नवै पंथ ते संचरै जी, द्वीप सनमुख नचि जाय ; ९
पवन रतन नें पूजिनै जी, अधिक धरी सनमान ;
वेलकूलै सहु आविया जी, मोटपल्ली अभिधान ; १०

मेदनीपति तिहा जाणियै जी, व्यसनवारक नरवर्म ;
परम जिनधरम नै आदरै जी, अवर जानै सहु भर्म ; ११
सात खेत्रे वित्त वावरै जी, छावरै मोस नै मर्म ;
शीतल चन्द्रमा सारिखौ जी, निज प्रजा ऊपरि नर्म ; १२
ध्यान जिनवर तणौ मन धरै जी, साचवै जे षट कर्म ;
ईति उपद्रव दहवटै जी, जेम छाया घन घर्म ; १३
ढाल नवमी रमी हीयड़े जी, अवल बीजै अधिकार,
न्याय राजा करसी भलो जी, विनयचन्द्र इकतार ; १४

॥ दूहा ॥

दरवारै आवै हिवै, सेठ स्त्री ले साथ ;
पेसकसी आगलि करी, प्रणम्यो अवनीनाथ ; १
माह महुत्त घणौ दियौ, राजायें तिणवार,
सुख साता पूछी कहै, वयण एक सुविचार ; २
साभलि सेठ प्रवृत्ति शुभ, कुण नारी छै एह,
सर्वाभरण विभूपिता, सुभगाकार सुदेह ; ३
सेठ कहै ए मइं सग्रही, जिहां छइ चन्द्रद्वीप ;
पति सायर मां पडि मूओ, ए छै हजी अछीप, ४
ए माहरी ग्रहणी हुस्यै, अनुमति द्यौ महाराज ;
कहीयैं न हुवै अन्यथा, राज समक्षे काज ; ५

ढाल (१०)

चाल :—मेरे नन्दना

तिण वेला कुमरी कहै रे हां, वयण विचारी वोलि, सीख किसी कहुं
झूठो स्युँ एहवो भखै रे हां, मूरख निठुर निटोल १ सी०
अगल डगल मुख भाखतो रे हां, किम न हुवै उपसात ; सी०
न्याय करै जौ राजवी रे हां, तौ तोड़ै तुझ दाँत ; २ सी०
सेठ कहै इम का कहै रे हां, वीतग जाणि प्रवन्ध ; सी०
किहा मारग ना वोलड़ा रे हा, स्युँ तुझ वोले वंध ; ३ सी०
करि लज्जा वलती कहै रे हां, धर मन अधिक उमंग ; सी०
महाराज इण पापीयै रे हां, कीधउ मुझ घर भंग ; ४ सी०
पति जलधि माहे नाँखियौ रे हां, धरि मन अधिक उमंग ; सी०
सील रयण खंडण भणी रे हां, माँड्यो घणो रे तरंग ; ५ सी०
पिण हुं सीलवती सती रे हां, केम विटालुँ देह ; सी०
जिम तिम करी ए भोलवी रे हा, राख्यो शील अभंग ; ६ सी०
हिव तुझ सरिखा राजवी रे हा, न करै सुधो न्याय ; सी०
तो मन्दिरगिर डिगमिगै रे हां, धरणि पाताले जाय , ७ सी०
पातक लागै दरसणै रे हा, ए पर स्त्री नो चोर ; सी०
जो सीखावण द्यौ नहीं रे हां, स्युँ करिस्यै जगि जोर ; ८ सी०
सत्य वचन राजा सुणी रे हा, धर्यो वली फिर द्वेप ; सी०
पोत स्थित धन संग्रह्यो रे हा, नवि राख्यो अवशेप ; ९ सी०
जे भावित भवतव्यता रे हां, न चलै तास उपाय ; सी०
जेहवो वावै रूखड़ा रे हा, तेहवा होज फल थाय ; १० सी०

ढाल प्ररूपी हो एह इग्यारमी, वीजै द्विज अधिकार ;
सार्थकता नी हो जे उपमा वहै, विनयचन्द्र गुणधार ; ११ सी०

॥ दूहा ॥

सहु धीवर इण अवसरै, कुमरोत्तम ले संग ,
मोटपल्ली आव्या मिली, कृत्य हेतु उछरंग ; १
मंड़ावै राजा तिहां, नरवर्मा उल्लास ;
निज कुमरी नें कारणै, अनुपम एक आवास , २
द्युति निवेसनी जोवतो, बीजो जाण कैलास ;
ते महल निजरै पड्यौ, आवै तेहनै पास ; ३
कारीगर कारिज करै, पणि गृह माहे हाणि ;
खिण खिण मां चूकै तिके, अंध परंपर जाणि ; ४
वास्तुक शास्त्र तणै वलै, वोलै कुमर सुजाण ;
ए गृह नी चातुर्यता, कुण करसी परमाणि ; ५

ढाल—१२ कंकणानी

तें चित चोर्यो माहरो रसीया, तूं छै पुरुष उदार ।
मोरो मन रीझ रह्यौ ;
हां रे तुझ देखी दीदार, मो० घर मां केही खोड़ छै रे,
एम कहै सूत्रधार ; मो० १
कुमर सीखावै सहु भणी रे, र० मन सुं तजि अहंकार , मो०
खोड़ हती जे गेह मंझार रे, र० न रही तेह लिगार ; मो० २
अचरिज सहु नै ऊपनो रे, र० वलि चींतइ सूतार ; मो०
विश्वकरणनि ओपमा रे, र० एहिज लहै रे कुमार ; मो० ३

भगति युगति करि अति घणुँ रे, र० कुमर भणी हरखेण ; मो०
दीठा विण विलखा थया रे, र० पूरव हेज वसेण ; मो० ४
. . .. ; मो०
.. . . ; मो० ५

कोई अघाहड़ो माहरो रे, र० रतन लह्यो छो जेह ; मो०
ते पिण राख सक्या नहीं रे, र० धिग जमवारो एह ; मो० ६

इत्यादिक वचने करी रे, र० निंदे कर्म स्वकीय ; मो०
ते पहुता निज थानकै रे, र० पिण नवि पायौ प्रीय ; मो० ७

तिण पासे रहता थका रे, र० हुन्नर धरि निज हाथ ; मो०
कुमर करायौ राय नो रे, र० गृह कारीगर साथ ; मो० ८

संपूरण जईयै थयौ रे, र० कुमरी तणो रे निवास ; मो०
राजा निरखण आवियौरे, मन मां धरी विलास ; मो० ६

निरखी अति उच्छक थयो रे, र० हीयड़लो रहीयो हींस ; मो०
कारीगर नें रंग सुँ रे र० करइ सबल बगसीस ; मो० १०

तिण मांहिज कुमर निहालीया रे र० अभिनव जाण अनंग ; मो०
बैठो ऊँचे आसणे रे, र० ओपै रवि जिम अंग ; मो० ११

जिम बालक मृगराजनो रे र० बैसे गिरवर शृंग ; मो०
ए दृष्टान्ते जाणियें रे र० कुमर भणी चित चंग ; मो० १२

बीजै अधिकारै थई रे र० बारमी ढाल अनूप, मो०
विनयचन्द्र कहै एहवु रे र० मन मा रंज्यो भूप ; मो० १३

॥ दूहा ॥

आदर मान देई कै, कुमर भणी ते राय;
इतला माहे देखता, तुं हिज आवै दाय, १
सत्य वचन मुझ आगलै, तूं कुण छै ते भाखि;
एक मनौ मुझ जाणि नै, अंतर मत को राख; २
हूं तो छुं परदेसीयौ, स्वामि वयण अवधार,
जाति न जाणुं रायजी, रहुं तुम नगर मझार, ३
पूरी सी जाणुं नहीं, नाम तणी मन सार;
पेट भराई हुं करुं, कारीगर ने लार; ४
निज मंदिर मां नृप गयौ, मन धरि एम विचार;
दीसै छै निश्चय सही, ए कोई राजकुमार; ५

ढाल (१३)

चाल :—दस तो दिहाड़ा मोनै छोड़ि रे जोरावर हाडा, एहनी

आव्यौ मास वसंत रे रसीयां रो राजा।

सुख द्यै साजा, तरु होइ ताजा

जेहनै तूठां रे मौज लहीजीयै रे।

अधिक पणै ओपंत रे र० मदन तणौ रे मित्र कहीजीयै रे; १
तास थयो प्रारम्भ रे र० थंभ जिसारे तरुवर पालवै रे
दुखियां ने दुरलभ रे र० विरही लोकां रै हीयड़ै सालवै रे; २
वाजै सीतल वाय रे र० लहरी आवै रे सुरंभ तणी घणी रे;
कहतां न वणै काय रे र० सबली रे शोभा वन माहे वणी रे; ३

मउरया जिहा सहकार रे र० ऊपरि बैठी कुहकै कोयली रे ;
महिला मानी हार रे र० एहवी चतुराई मिलता दोहिली रे ; ४
जिहां किण कमल अपार रे र० चापो मरुवो रे दमणो मालती रे
विउलसिरी सुखकार रे र० जाई जूई रे दुखडां पालती रे ; ५
भमर करै गुंजार रे र० निशदिन राचै तेहनी वास थी रे ;
रस आस्वादे सार रे र० संग न छोड़े कहीये पास थी रे ; ६
रूड़ी रीति कहिवाय रे र० रंग थकी परिपूरण छकी रे ;
सहु फली वनराय रे र० एक न फूली निगुणी केतकी रे ; ७
एहवौ जे मधु मास रे र० जाणी नैं राजा रमवा नीसर्यो रे ;
वनमा आवै उल्लास रे र० नयणे देखी रे जसु हीयड़ो ठर्यो रे , ८
सघन सुशीतल छायाय रे र० सरिता वहै रे वन पासै छती रे ;
तिहा खेलै ते राय रे र० राणी रमइं रंगइं राचती रे ; ९
ते वन अति श्रीकार रे र० तुरत मिटै रे मन नी सोचना रे ;
सखीयैं ने परिवार रे र० रावली रमैं रे कुमरी त्रिलोचना रे ; १०
नगरी केरा लोक रे र० फाग गावै रे राग सुहामणौ रे ,
मेली सगला थोक रे र० मन नी रे इच्छा पूरै हित घणौ रे ; ११
वाजै चंग मृदंग रे र० वाजै रे वीणा झीणा तार नी रे ;
वाजं वली उपंग रे र० वार नह विणा हार नी रे ; १२
उडै गुलाल अबीर रे र० नीर छाटै रे माहो मा सहु रे ,
भीजै नवला चीर रे र० प्रेम वणावै नरनारी वहु रे ; १३
तेरमी ढाल प्रधान रे र० एहवै रे वीजै अधिकार रै थई रे ;
विनयचन्द्र विद्वान रे र० एम कहै रे मन मां ऊमही रे ; १४

॥ दूहा ॥

तिहां क्रीडा करतां थकां, कुमरी नै तिण वार ;
डंक दीयौ नागै सवल, करइं ज हाहाकार ;

तिण वन थी उपाड़ि नै, आणी निज आवास ;
नयण विहुं धवला थया, व्यापौ विषनौ पास ; २

तेड्या सगला गारुड़ी, मंत्र तंत्र ना जाण ;
झाड़ौ द्यै पावै सलिल, पणि निकसै तसु प्राण ; ३

राजा फेरावै पड़ह, नगर मांहि इण रीति ;
मुझ कुमरी साजी करै, द्युं तेहनै सुख प्रीति ; ४

राज्य अरध मुझ कन्यका, तिण मांहे नहिं झूठ ;
इम सांभलि उत्तमकुमर, पटह छब्यौ पर पूठि ; ५

ढाल (१४)

आवउ गरवै रमीयै रूड़ा रांम सुं रे, एहनी

कुमर आवै राय मारगै रे कांइ, साथै नर नारी थाट रे ;
चालौ नै रे जइयै कुमरी देखिवा रे ॥ आ० ॥
ए परदेशी जाण छै रे कांइ, जेहनो रूडो रूडो घाट रे ; १ चा०

सगले लोके कुमर नै रे काइ, आण्यौ भूपति पास रे ;
कुमर कहै नृप आगलै रे कांइ, इण परि वचन विलास रे २ चा०

राज्य अरधउ रे ताहरी कन्यका रे कांइ, मुझ देज्यो महाराय रे ;
हुं कुमरी जीवाड़िस्युं रे कांइ, करस्युं दाय उपाय रे ; ३ चा०

पाणी मंत्री नइ छाटियउ रे कांइ, कुमरी थईय समाधि रे ; -
उठै रे आलस मोड़ि नै रे कांइ, दूर गई सहु व्याधि रे ; ३ चा०

कुमर प्रति नृप ओलख्यौ रे, कांइ ए तो तेहिज कुमार रे ,
जनम लगै पुत्री भणी रे, कीधो इण उपगार रे ; ५ चा०

बोल कह्यो ते पालिवारे, कांइ भूपति करै विचार रे ;
पुत्री माहरी त्रिलोचना रे, कांइ द्यु एहनै निरधार रे ; ६ चा०

राज्य प्रमुख सहु सूपिनै रे, कांइ हिव रहीयै निश्चिंत रे ;
इम जाणी तेड़ावी नै रे, काइ जोसीयडो गुणवंत रे ; ७ चा०

जोसी नै राजा कहै रे, काइ परणै कुमरी मुझ रे ;
दिवस लगन कहि रूवड़ौ रे, काइ हुं संतोपिस तुझ रे ; ८ चा०

जोवइ जोसी टीपणो रे, काइ दिवस लगन करि ठीक रे,
जंपै राजा आगलै रे, काइ अमुक दिवस सुप्रतीक रे ; ६ चा०

अति उच्छव राजा करै रे, काइ मंगल हेतु तिवार रे ;
परणावै निज कन्यका रे, कांइ मन मा हरख अपार रे ; १०चा०

कर मुंकावण अवसरै रे, कांइ अरधो दीधो राज रे ;
वलि गृह निज पुत्री तणौ रे, काइ दीधो सुउवा काज रे; ११चा०

तिण गृह मा सुख भोगवै रे, काइ निशदिन स्त्री-भरतार रे ,
श्री परमेसर ध्यान थी रे, काइ कुमर लह्यौ जयकार रे; १२ चा०

ढाल चवदमी ए कही रे, काइ पूरण थयौ अधिकार रे ;
सतगुरु नैं परभाव सुं रे, काइ एह लह्यो पणि पार रे ; १३ चा०

ढाल (१)

दल वादल वूठा हो नदीया नीर चल्या , एहनी

इम वचनइं हो जंपइ कामनी,
माहरी ए वाणी हो सांभलि स्वामिनी ; १

परदेशी कोई हो वस्यो त्रिलोचना सुणा,
जेहना जस बोलइ हो, नर सहु इक मना; २

गुण मणिनो दरीयो हो भरियो हेजि सुं,
जिण हेले जीतो हो सूरिज तेज सुं ; ३

सही सेती ताहरउ हो प्रीतम हीज हुसी,
दिल साख द्यै मांहरो हो तुझ मन उल्हसी; ४

जो अनुमति आपइं हो तो तेहनी खबर करूं,
मुख मटको देखी हो हीयड़ै हरख धरूँ ; ५

तव कुमरी भाखै हो था ऊतावली,
आलस छोड़ी नै हो जा मन नी रली , ६

तेहनै घरि आइ हो दासी नेह सुं,
पणि तसु नवि देखै हो मिलवो जेह सुं , ७

कहै कुमरी नै हो ताहरौ भाग्य फल्यो,
मन नो मानीतो हो वालम आयो मिल्यो ; ८

मुझ नै देखाड़ो हो [illegible] तणो, [illegible]
देखण [illegible] अलजउ [illegible]

ते जोवा चाली हो ऊमही जिसै,
पल्लंक परि सूतो हो कुमर दीठो तिसै ; ११
देखी नै तन नउ हो कीधो पारिखो,
रूपइं पणि दिसै हो उत्तम सारिखौ ; १२
फिर पाछी आवी हो कुमरी नै कहै,
तुझ पति नै सारिखो ते तो गहगहै ; १३
इम सुणि नै कुमरी हो गाढौ हरख धर्यो,
खिण एक तसु रंगइं हो मिलिवा मन कर्यो; १४
वलि चित्त मां विचारै हो ए मैं स्युं कियो,
पर पुरुप न जाण्यो हो तेमां मन दीयो, १५
माहरो मन पापी हो कहुँ अवगुण किसा,
मन पाछो वाल्यो हो एम कहै मदालसा, १६
चतुराई तेहनी हो जे वहिलो भेद लहै,
इम पहिलै ढालइं हो विनयचंद्र कवि कहै; १७

॥ दूहा ॥

कुमर कहै निज रमणि नै, कवन हती ते नारि ;
आवी नै पाछी वली, ए स्युँ थयो प्रकार , १
मुझ नै खवर पड़ी नहीं, नहि तो एणी वार ;
सगली वातां पूछि नै, सही करत निरधार , २
अवसर चूका माणसा, अति पछतावो होइ ,
अवसर चूकै सूंदरि, जगमा जलधर जोइ ; ३

ढाल (२)

नागा किसनपुरी एहनी

प्राणसनेही सुणि मोरी वात, कौतुककारी छै अवदात ;
मीठी वात खरी, इण परि भाखै नृप कुँयरी ;
हे सुंदरि मुझ नैं संभलाइ, सुणतां हीयड़ौ उलसित थाय १ मी०
मुझ थी अधिकी रूप विवेक, परदेसण आई छइं एक,
वइंन करी मानी मैं तास, निश दिन जीव रहै तिण पास, २ मी०
नाह वियोगै दुखणी तेह, भूरि कृस कीधो छै देह,
रहै एकान्ते लेइ आवास, धरम ध्यान मन मांहे जास , ३ मी०
दीन हीननइं आपै दान, द्रव्य घणौ देई सनमान , मी०
करुणा आणी करै उपगार, एहवी काइ नहीं संसार , मी० ४
एतलौ धन नौ दीसै नहीं, क्याई थी काढइ छै सही, मी०
तेहनैं पासे छै कांइ सिद्धि, खरचता खूटै नइं रिद्धि , मी० ५
एह अपूरव छै विरतत, मुझ भगनी सो साभलि कंत, मी०
तास सखी ए वृद्धा नारि, तुझ देखी गई एह विचारि ; मी० ६
सांभलि एहवा वचन कुमार, रागातुर हूवौ तिणवार; मी०
एहवी छैं गुणवंती जेह, मदालसा हुसइं नहीं तेह ; मी० ७
अथवा नारी सुँदराकार, एहवी घणी छैं घर घर वार; मी०
परस्त्री ऊपरि धरीयौ पाप, धिग मुझ नैं निंदइ इम आप ; मी० ८
किहां थी आय मिलै मुझ नारि, समुद्रदत्त ले गयो निरधार; मी०
खोटो मोह करैं स्युं थाय, तन मन थी सगलो सुख जाय; मी० ९

तिण अवसरि मन धरि उछरंग, श्री उत्तमाभिध सगुणनरिंद,मी०
मध्याने जिन पूजा हेत, कुसुमचंदन-लेइ सुगति संकेत ; मी० १०
निज मंदिर पासै प्रासाद, आयौ मन धरतौ आल्हाद ; मी०
जातो किण ही न दीठो तेह, फिर पाछौ नायौ वलि गेह, मी०११
त्रिलोचना कुमरी तिणवार, दुख संपूरित हृदय मझार; मी०
दुखणी दुख भरि करै विलाप, प्रीय विरहागनि तनसताप,१२मी०
निज पति तणी करेवा सार, दासी नै मेली तिण वार; मी०
पिण नवि पायो परम दयाल, नयणे नीर झरै तिण वार; मी०१३
लज्जा छोडी वारवार, ऊंचइ स्वर ते करइं पुकार ; मी०
मन में धारै अधिको सोग, हींयडो फाटइ नाह वियोग ; मी०१४
हिव तिणहीज पुरमाह प्रधान, सकल सुजस गुण तणौ निधान मी०
महेसदत्त नामै धनवंत, सहु वणिक माहे सौभंत , मी० १५
छप्पन कोडि निधान मझार. छप्पन कोड़ि कलांतर धार ; मी०
छपन कोडि नौ करै व्यापार, इतली सोवन कोडि विचार ; मी०१६
एहवी जेहना घरमा रिद्धि, पुण्य-संयोगे दिन दिन वृद्धि ; मी०
सूरिजनी परि झाकझमाल, विनयचंद्र कहै बीजी ढाल ; मी०१७

॥ दूहा ॥

वाहण जेहनै पांचसै, वलीय पांच सइं हाट ;
घर गोकुल पिण पाच सै, तितला सकट सुघाट ; १
गज तुरंग नर पालखी, पाच सयां प्रत्येक ;
कोठा जेहनै पाच सै, वली वणिज सुविवेक ; २

तोरण बंधाव्या मंदिर वारणै जी,
चित्रत कीधो घर मोहणवेलि हो; मां०१०
धवल गीत गावै नारि सुहामणा जी,
श्रवणे साभलतां सहु ने सुहाय हो; मां०
कलश वस मेल्ही काजै वेदिका जी,
मेलि मेल्या सकल उपाय हो ; मां० ११
वर भणी ताजा वला मेला नवा जी,
अम्बर उज्जवल सुन्दर पटकूल हो ; मां०
सोवन आभरण करावै नव नवा जी,
रतन जड़ित भारी मूल हो ; मां० १२
जातीला गजराज तुरी जिण संग्रह्या जी,
यानादिक हाथ मेलावे देय हो ; मां०
सरल मति धारी तीजी ढाल मां जी,
इण परि विनयचंद्र कहेय हो ; मा १३

॥ दूहा ॥

वार्त्ता कौतुक कारणो, पुरमा थई तिण वार ;
वर विण सेठ वीवाह नो, रच्यो सबल विस्तार ; १
एह वचन राजा सुणी, चिंतै इम निज चित्त ;
धन माहेशदत्त गृहपति, जेहनी अविरल मत्ति ; २
देस्यै धन जामात नै, कन्या परणावेह ;
व्रत लेस्यै वयरागियौ, मन धरि परम सनेह ; ३

सुद्ध जमाई नी लहुं, तो तेहनै देई राज,
हुं पिण संजम आदरुं, सारूं उत्तम काज; ४
महेशदत्त सुं राजवी, एहवौ करीय विचार;
पड़ह नगर मां फेरव्यो, उद्घोषणा अपार; ५

ढाल (४)

मुगफली सी वारी आंगुली, एहनी

राजा पुत्री त्रिलोचना, विरहाकुल थई नाह वियोग;
एहवौ राय वचन कहावै छै सही,
तेहनो पति प्याही गयौ तिण कुमरी राखै वहु सोग; १
मदालसा परदेसणी, मैं पुत्री करि मानी तेह। ए०
सहु सम्बन्ध तेहनो कहै, मांडी नै धुर थी नर जेह।२। ए०
राज्य समापुं ते भणी, वलि आपइं महेशदत्त सेठ। ए०
सहस्रकला निज दीकरी, सुरकन्या पिण जेहने हेठ। ३ ए०
एक मास नै अंतरै, सुक पडहो छवीयौ तिणवार। ए०
लोक सहु सुणज्यो तुमे, मुझ वाणी प्राणी हितकार। ४ ए०
मुझ ने ले जावो हिवै, महाराज केरी सभा मझार। ए०
क्षितिपति ना जामात नी, हुं कहिस्यु सगलो ही विरतंत। ५ए०
मदालसा नो पणि तिहा, संभलावीस नृप नें विरतन्त। ए०
राज्य लहीस राजा तणौ, कन्या परणेसुं गुणवन्त। ६ ए०
कौतुक धरि ते आदमी, लेइ आव्या नृप परषद माहि। ए०
राय वोलाव्यौ सूअटो, नर भाषा वोल्यो ते साहि। ७ ए०

परीयछ बंधावौ इहां, त्रिलोचना तुझ पुत्री जेह। ए०
मदालसा पणि तेड़ीयै, जिम भाखुँ आख्यानक एह। ८ ए०
राय वचन तेहनौ सुणी, हरषित थई कीधो तिम हीज ए०
ज्ञान विना तिरजंच तुं, किम जाणसि वीतक नो वीज। ९ ए०
तीन काल नी वारता, जो थारै मन अचरिज होइ; ए०
सावधान थई सांभलो, विच वातां म करज्यो कोइ। ए० १०
रामति जोवा सहु मिल्या, पुर वासी जन मन धरि प्रेम।ए०
मदालसा नी वातड़ी, कहै सुवटो जिम कही छै तेम। ए० ११
वाराणसी नगरी भली, राजा तिहां मकरध्वज नाम। ए०
तेहनो पुत्र पराक्रमी, उत्तमाभिध जाणे रूपै काम। ए० १३
अचरिज नाना देश ना, जोएवा नीकलिया तेह। ए०
भाग्य परीक्षा कारणै, साहस धरि निज देह अछेह। ए० १४
कितले के दिवसे गयौ, भरुअछपुर नृप सुत कुशलेण। ए०
चौथी ढाल सुहामणी, इम भाखी कवि विनयचन्द्रेण। ए० १५

॥ दूहा ॥

मुग्धद्वीप देखण भणी, पोतै चढ्यो कुमार;
आव्यो कितलेके दिने, भर दरीयाव मझार, १
जलकान्तिक पर्वत तिहां, ऊंचो घणो महान;
तिण मांहे कूपक अछै, पाणी सुद्धा समान; २
भ्रमरकेत राक्षसपति, तिणै करायो तेह;
जल अरथै साहसधरी, गयौ तिहां गुण गेह, ३

ढाल (५)

धण रा मारूजी रे लो, एहनी

पर उपगारी कोइ न दीठो एहवो मीठो,
गुणधारी सुविचारी रे लो ; म्हारा राजेसरजी रेलो
वारी मा जल हेते पहुतौ मन गह गहतो,
दीठी तिहा किण नारी रे लो ; १
मदालसा नामै सुकमाली रूप रसाली,
तिहां परणी ते वाली रे लो ; मां
जाली मा थई वाहरि आया नारि सुहाया,
वे गुण मणि नी आली रे लो ; २ मां
समुद्रदत्त नै वाहण चढीया त्या थी खडीयां,
पंच रतन परभावै रे लो ; मां०
जल इंधण अन्नादिक जोई लोक सकोई,
मन मां शाता पावै रे लो ; ३ मा०
अवसर देखी पापी सेठै भुंडो द्रेठै,
रामा धन नो रसीयो रे लो ; मा०
दरीया मांहे नांखी दीधो माठो कीधो,
पड़तो मच्छे ग्रसीयो रे लो ; मां० ४
मगर गलंतो कांठौ आयौ धीवर पायौ,
काढ्यौ पेट विदारी रे लो ; मां०
तुम्ह पुत्रि घर देखि नीपजतो आयो चलतो,
परणायो तिणवारी रे लो , मां ५

सुख भोगवता देव तणी परि किणीक अवसर,
श्री जिनपूजा करिवा रे लो ; मां०
श्री जिनवर नै मंदिर आवै भावन भावै,
भवसायर लहु तरवा रे लो ; मां० ६
फूल भरी चंगेरी नीकी वंस नली की,
मदनैं मुद्रित देखी रे लो ; मां०
उघाड़ी ते हाथे साही लघु अहि मांहि,
कर करड्यौ सुविशेपी रे लो ; मां० ७
तन थी नष्ट सकल वल पडीयौ भुइं तलि अडीयौ
इतली मैं कही वातां रे लो ; मां०
सत्य प्रत्यज्ञा जो छै ताहरी आस्या माहरी,
पूरो तुझ गातां रे लो , मां० ८
पोतानो निरवाहै कहियौ तिण जस लहीयौ,
उत्तम ते जग माहे रे लो ; मां०
विवहारी तुझ पुत्री ल्यावौ मुझ परणावौ,
उच्छव सु कर साहै रे लो ; मा ० ६
ऊतावलि करि मुझ नै दीजै ढील न कीजै,
जग जस भारी लीजइं रे लो ; मां०
तिरजंच जो हुं थाहुं राजा करूं दिवाजा,
रमणी साथि रमीजैं रे लो ; मां० १०
एहवौ कहि मुखि मौन सरागैं वैठो आगैं,
इतलै राय पयंपै रे लो ; मां०

पोपट अंतर हीय म राखो आगै भाखौ,
थास्यइं मन कपड़ं रे लो ; मां० ११
पंडित ते निज बोल्यो पालै कुल उजवालै,
तुम्ह सरिखा गुणवंता रे लो ; मा०
जो नवि आपै तो हुं जास्यु फेर न आस्युं,
मानु पहुँची कंता रे लो ; मां० १२
स्वादवंत फलनो आहारी रहुँ वनचारी,
इण परि काल गमासुं रे लो ; मां०
ढाल पाचमी ए थई पूरी बात अधूरी,
विनयचन्द्र इम भास्युं रे लो, मां० १३

॥ दूहा ॥

मैं जाण्यो नर हुवै अधम, माया कपट निधान ;
स्वार्थ करी जायै नटी, तुम सरिखा राजान ; १
ऊडेवा नै सज्ज थयौ, नृप झाल्यौ ततकाल ;
देईसि राज सु धीर धरि, वर पंडित वाचाल ; २
उत्तमकुमर किहां अछै, आगलि कहि वृतांत ;
जीवै छै किवा मूऔ, भाजि भाजि मन भ्रात ; ३
वली वचन कहै सूवटो, जो तिल मां तेल न होय ;
तो वेलू मे किहां थकी, राय विचारी जोय ; ४
एतली वात कह्या थकां, जौ तुं नापै राज ;
आगलि कह्या हुवै किसुं, कंठ शोप स्यौ काज ; ५

राज देईसि जो मुझ भणी, तो आगै कहिस्युं वात;
कहि कहि देइस तुझ भणी, कन्या राज संघात ; ६

ढाल (६)

हस्ती तो चढिज्यो हाडा राव कुमकुमा माहरा वालमा, ए देशी

तो वारू राजा रे अहि डसीयां पछी मांहरा साहिवा,
अनंगसेना इण नाम रे; वेश्या विगताली।
चंचल चरिताली, योवन मतवाली, गयवर गति गाली
तिण वार निहाली, मांहरो कहियो मानो,
कहीयो मानो रे राज तुमने हुं कहिसुं वंछित फल लहिसुं,
धुरा राज्य नी वहिस्युँ
निज आपद दहिस्युं सुख सेती रहिस्युं गुण अवगुण सहिसुं। मां।
किण एक कारण रे दैव संयोग थी। मां।
ते आवी तिण ठांइ रे मणि नीर झकोली,
तसु काया खोली ॥ १ ॥ मां० ॥
ते तिण ऊपरि रे रीझ्यो अति घणो। मां।
वदनकमल निरखंत रे।
थयो परम सरागी, मिलिवा मति जागी। मां०।
ऊठाड़ी नै आपणै मन्दिर लीयौ। मां०।
चउथी भूमि ठवन्त रे, सुख माहि सदाई,
रहै कुमर सवाई ॥ २ ॥ मां० ॥

हुंतो थयौ मूरख रे दाक्षिणवंत थी । मां० ।
बात कही सहु तुझरे । राज चाहुं पाछै ।
खोटी मति आछै । मां० ।
थाज्यो तो तुझनै रे स्वस्ति महीपति । मां० ।
अपजस आपो मुझ रे जे मंगलपाठी,
मुझ रसना घाठी । मा० ॥ ३ ॥
राजा भापै रे अद्ध वैधक कियै । मा० । जावा न लई वैद्य रे ।
वाचाल तजी नै, मन सुथिर भजी नै । मां० ।
अनंगसेना नो घर जोऊं जेतलै । मां० ।
तू मत काढे कैद रे, कन्या राज आपुं,
तुझ नै थिर थापुं ॥ ४ ॥ मा० ॥
क्षण इक इहां रे हुं वइठो अछुं । मां० । जोवो वेश्या गेह रे ।
नृप आणा लहता, सेवक तिहा पुहता । मां० ।
सहु गृह जोयो रे नवि पामियौ । मां० ।
पूछै सगला तेह रे, किहां राय जमाई, द्यो साच वताई ॥ ५ ॥
अधोदृष्टि जोई रही पण्यांगना । मां० । ऊतर नापै लिगार रे ।
विलखित मुख छाया, संकोचित काया । मां० ।
आवी सहु भाखी रे वात वेश्या तणी । मा० ।
जे छइ गहन विचार रे शुकनै पूछीजै, निश्चय ए कीजै ॥ ६ ॥ मां० ॥
सू विप्रतारै अम्हनै सूवटा । मां० ।
जेहवो छै तेहवो दाखि रे ।

कहि ज्ञान विचारी, तू छै उपगारी । मां० ।

सुणि महाराज रे पोपट वीनवै । मां० ।

वेश्या धर्यो अभिलाप रे ए वर मुझ थास्यै,

भोग अर्थइं आसै ॥ मां० ॥ ७ ॥

इहां वीजो जासी रे किमही न आवसी । मां० ।

एहवो चित्त विचार रे ।

ते मुझ सुक कीधो निद्रावसि वीधो । मां० ।

सोवन केरै पिंजर मां ठव्यो । मां० ।

रंज्युं गुण गीत गाय रे श्लोक कथा कहीनैं,

अवसाण लहीनैं ॥ ८ ॥ मां० ॥

चरणां थी छोडी रे डोरो नर करी । मां० ।

वांध्यो मोहनइ चाल रे ।

तिण सुं सुख माणुं, उदयास्त न जाणुं । मां०

दवरक वांधी रे वलि मुझ शुक करै । मां० ।

इम गयो कितलो काल रे,

मन मांहि विचारुं, तिरजंच भव धारुं ॥ ६ ॥ मां० ॥

परउपगारी रे सहुनो हुं हतो । मां० । निष्टाचार न चोर रे ।

केहनै दुख नवि दीधो कांई विरुद्ध न कीधो । मां० ।

हा हां जाण्यो रे में इणहीज भवै । मां० ।

कीधो पातक घोर रे,

न रह्यो हुं सीधो मैं सुजस न लीधो ॥ १० ॥ मां ।

राक्षसकन्या रे कुमरी मदालसा । मा० । परणावी न तसु वाप रे ।

परणी में छानै लज्जा करि कानै । मां० ।

राक्षस केरी पुत्री रे मइं हरी ।

सायरमां तिण पाप रे, सागरदत्त नांख्यौ,

निजकृत कर्म चाख्यौ ॥ १९ ॥ मां० ॥

धिग धिग मुझनें रे पांच ग्रह्या मणी । मा० ।

राक्षसना अणदीधा रे ।

पापी मुझ सरिखो, नहीं कोई रे परखो । मां० ।

ए तो छट्ठी रे ढाल सुहामणी । मां० ।

विनयचंद्रनी कीधरे, श्रवण सांभळजो,

पातक थी टळज्यो ॥ १२ ॥ मां० ॥

॥ दूहा ॥

तिम त्रिलोचना नें घरे, आवी कुब्जा नारि;
में पूछ्यौं ए कुण अछें, मुझ प्रिया तिण वार; १
सखी बतावी तेहनें, मुझ नारी में जाणि,
राग बुद्धि सुं इक कर्यो, हुं थयो मूढ अजाण; २
मोटो पातक मन तणो, मुझनें लागो तेह;
धर्म कर्यो तिण वार थी, श्री जिनवर नैं गेह; ३

ढाल (७)

साधु कहइ गेहूं पीसार आगल राख्युं केम सुं सोनारि [illegible],
नर फीटी हो थयौ तिरयंच पातकि

शुक कुसुम सही; सुक एम भणी

वली कह्युं छै हो आगम मांहि
नरक वेदन फल संग्रही ; सु० १
महा बलधारी हो रावण जेह,
विश्व जिणै निज वसि कीयौ ; सु०
परस्त्रीनी हो वांछा कीध,
कुलखय नारक पामीयौ ; सु० २
जोई द्रुपद सुतानो हो रूप,
कीचक मन लाई रह्यौ ; सु०
भीम चांप्यौ हो कुंभी हेठि,
अपजस दुर्गति दुख लह्यौ ; सु० ३
इम समरै हो निज कृत पाप,
आतम निंदइ आपणौ ; सु०
हुवइं थोड़ो हो पिण अपराध,
उत्तम मानै करि घणौ ; सु० ४
हिवइं अनंगसेना हो राग,
मास रह्यौ घरि तेहनै ; सु०
आज गई नइं हो किण इक काज,
भावी न सूझै केहनै ; सु० ५
पुण्ययोगै हो मुझ महाराय,
मुँक्यौ उघाड़ौ पींजरौ ; सु०
नीसरीयौ हो अवसर जाणि,
धीरज धरि मन आकरौ ; सु० ६

त्रिकनै हो चोक चचर सर्व्वत्र,
सांभलि पटहनी घोषणा ; सु०
मइं प्रगट निवास्यो हो तेह.
वचन सुणी रलियामणा ; सु० ७
हुं आव्यौ हो ताहरै पास.
वात कही मैं माहरी ; सु०
हिव दीजै हो मुझ सुखवास,
उलट मन मांहे धरी ; सु० ८
हुं तो ते छुं उत्तमकुमार,
पगथी छोड़ो डोरड़ो ; सु०
दिव्य रूपी थयो ततकाल,
जाणै कंदर्प आगै खड़ो ; सु० ६
हर्षित हुवा हो सगला लोक,
सहलकला कन्या वरी ; सु०
तिहां मिलीयौ मदालसा नारि,
वृद्धा युक्त हरख धरी : सु० १०
महोच्छव पुर मां हो करि नै भूरि.
त्रिलोचना कुमरी मिली ; सु०
नारी हो तीन तणौ संयोग,
थयौ मन नी आसा फली ; सु० ११
पुनवान हो पुरुष जे होइ,
तुरत मिटै वहु आपदा : सु०
थई एतलै हो सातमी ढाल,
विनयचन्द्र लही संपदा ; सु० १२

॥ दूहा ॥

प्रीति परस्पर जाणि नैं, वेश्या थापी नारि ;
तिण पणि कीधी आखड़ी, इण भवि ए भरतार ; १
हिव तेड़ी वनमालिका, करि नै वहुविध वंध ;
नलिका मांहे व्याल नो, पूछयौ सहु संवंध ; २
वोलै मालणि वीहती, दोप न को मुझ स्वामि ;
समुद्रदत्त मुझनै दीया, परिप पांचसै दाम ; ३
वोल कीयो जिण एहवौ, भूप जमाई मारि ;
तिण लोभे ए मैं धस्यो, नलिका सर्प्प विचार ; ४
राजा विहुं नै मारिवा, हुकम कीयो करि क्रोध ;
कुमरै राख्या जीवता, देई अति प्रतिवोध ; ५
विहु नो धन लूटी लियौ, देश निकालौ दीध ;
उत्तम कुमर भणी, सइंहथ राजा कीध ; ६

ढाल (८)

लटको थारो रे लोहणी रे, एहनी

नृप हुवो वैरागीयो रे, जीता विपय कपाय ;
खटकौ जेहना रे मनथी टल्यौ रे। आं०
सेट सहित संयम लीयौ रे, सद्गुरु पासै जाय ; ख० १
[l]ोभ रहित जे मुनिवरा रे, निर्मल निरहंकार ; ख०
[ब]ाल वृद्ध गीतार्थ नो रे, वेयावच करै सार ; ख० २

थोड़ै काल भण्या घणुँ रे, धरम ध्यान रस लीन ; ख०
केवलज्ञान लही करी रे, पोहता मुगति अदीन ; ख० ३
तिण अवसर राक्षसपतो रे, भ्रमरकेतु गुण ठाम ; ख०
नैमित्तिक पूछ्यौ वली रे, मुझ वैरी किण ठाम , ख० ४
ते कहै ताहरी पुत्रिका रे, परणी गयौ जेह ; ख०
पंच रतन ताहरा लीया रे, मोटपल्ली छै तेह ; ख० ५
वक्रकूप पाताल मां रे, ते पैठो हसी केम ; ख०
पुत्री किम परणी हस्यै रे, नहिं संभीवीयै एम ; ख० ६
ज्ञान न थाय अन्यथा रे, नैमित्तक कह्यौ सुद्ध ; ख०
तेहनै जीती नवि सकौ रे, जो था तु अति क्रुद्ध ; ख० ७
पहिली शून्यद्वीप मां रे, एकाकी हतो जाम , ख०
तो पण गंजी नवि सक्यौ रे, हिव युद्ध नौ स्यॅ काम ; ख० ८
पंच रतन सुपसाउले रे, तेह थयौ भूपाल ; ख०
मिलीयै पासे जाय नै रे, सी करीयइ तसु आलि ; ख० ६
वलि सगपण मोटो थयो रे, ते माहरौ जामात ; ख०
इम चिंतवि आयौ तिहां रे, मुँकि सकल उतपात ; ख० १०
उत्तम नृप सेती मिल्यौ रे, दुविधा टाली दूर , ख०
पुत्री भीड़ी हीयड़ै रे, निरमल वाध्यी नूर ; ख० ११
मस्तक धारी आगन्या रे, उत्तम नृप नी जेण ; ख०
चाल्यो निज नगरी भणी रे, राक्षसपति हरपेण ; ख० १२
ढाल भणी ए आठमी रे, साभलतां सुख थाय ; ख०
विनयचन्द्र महाराय नौ रे, जस जग मांहि सुहाय ; ख० १३

॥ दूहा ॥

तिहां किण सकल सभा मिली, नृप वैठो मन रंग ;
छत्र विराजै मस्तके, चामर ढले सुचंग ; १
दूत तिहा एक आवोयौ, जास वचन सुपवित्र ;
कर जोड़ी नृप आगलै, मेल्हौ लेख विचित्र ; २
राजा खोली वाचियौ, मन धरि हरख अपार ;
तेमां स्युँ लिखीयौ अछै, ते सुणज्यो अधिकार ; ३

ढाल (६)

चाल—राजा जो मिलै, एहनी,

स्वस्ति थी जिनदेव प्रधान, नमीय वणारसी थी वहुमान ;
राजा वीनवै, प्रेमातुर इम संभलवै
श्री मकरध्वज नृप गुणगेह, सपरिवार सुँ धरीय सनेह ; १
मोटपल्ली नामे वेलाकूल, सकल श्रियानौ जे छै मूल ; रा०
उत्तमकुमर कुमार आरोग्य,
निज अंगज स्नेहपूर्वक योग्य ; २ रा०
आलिंगी निज हृदयसरोज,
घणु घणु प्रेमै रोज ; रा०
समादिसति भूपति कल्याण,
कुशल अत्र वर्त्तइ सुविहाण ; ३ रा०
साता सुख तणा समाचार,
पुत्र तुमे देज्यो निरधार ; रा०

कारज कहीयै एह विशेप,
हीयड़ै धरीज्यो वाची ृ; रा० १५
तूँ अम राज्य तणौ आधार,
करिजे माता पितानी रा०
तुझ नै दुहवियौ कहि केण,
पहुतो तूँ परदेशे जेण ० १६
जिण दिन थी नीसरियौ पूत,
खवर करावी तुझ बहूत
पिण नवि लाधी ताहरी वात,
दुख पाम्या जाणे वज्रघात ; र
तैं तो अमने कीया निरास,
नांखंतां दिन जाय नीसास ; रा०
सास तणीपरि आवै चीति,
साल तणीपरि सालै प्रीति ; रा० ७
प्रायै छोरू न लहै सार,
मावीत्रा नी किण ही वार ; रा०
पिण मावीत्र तपै दिन-राति,
पांणी वल विरहो न खमात ; र
दिवस दुहेला कष्टे जाय,
रयणी तो किमही न विहा ; २
जिम जलधरनै समरै मोर, ार ,
तिम तुमनै समरू ग वार ; ३

॥ दूहा ॥

तिहां किण सकल सभा मिली, नृप बैठो मन रंग ;
छत्र विराजै मस्तके, चामर ढले सुचंग ; १
दूत तिहां एक आवीयौ, जास वचन सुपवित्र ;
कर जोड़ी नृप आगलै, मेल्हौ लेख विचित्र ; २
राजा खोली वाचियौ, मन धरि हरख अपार ;
तेमां य्युँ लिखीयौ अछै, ते सुणज्यो अधिकार ; ३

ढाल (६)

चाल—राजा जो मिलै, एहनी,

स्वस्ति श्री जिनदेव प्रधान, नमीय वणारसी थी बहुमान ;
राजा वीनवै, प्रेमातुर इम संभलवै
श्री मकरध्वज नृप गुणगेह, सपरिवार सुँ धरीय सनेह ; १
मोटपल्ली नामे वेलाकूल, सकल श्रियानौ जे छै मूल ; रा०
उत्तमकुमर कुमार आरोग्य,
निज अंगज स्नेहपूर्वक योग्य ; २ रा०
आलिंगी निज हृदयसरोज,
घणु घणु प्रेमै रोज ; रा०
समादिसति भूपति कल्याण,
कुशल अत्र वर्त्तइ सुविहाण ; ३ रा०
साता सुख तणा समाचार,
पुत्र तुमे देज्यो निरधार ; रा०

कारज कहीयै एह विशेष,
हीयड़ै धरीज्यो वाची ; रा० १५
तूँ अम राज्य तणौ आधार,
करिजे माता पितानी रा०
तुझ नै दुहवियौ कहि केण,
पहुतो तूँ परदेशे जेण रा० १६
जिण दिन थी नीसरियौ पूत,
खबर करावी तुझ बहूत
पिण नवि लाधी ताहरी वात,
दुख पाम्या जाणे वज्रघात ; र७
तैं तो अमने कीया निरास,
नांखंतां दिन जाय नीसास ; रा०
सास तणीपरि आवै चीति,
साल तणीपरि सालै प्रीति ; रा० ७
प्रायै छोरू न लहै सार,
मावीत्रा नी किण ही वार ; रा०
पिण मावीत्र तपै दिन-राति,
पाणी वल विरहो न खमात ; र
दिवस दुहेला कष्टे जाय,
रयणी तो किमही न विहा ; २
जिम जलधरनै समरै मोर,
तिम तुझनै समरूं ण वार ; ३

लेई च्यार अक्षौहिणी, सेना तणौ समूह ;
उत्तम नृप सामौ चल्यो, धरा धड़कै धूह ; ४
उलकापात हुवो वली, थरकै अहिपति ताम ;
मेरु डिगै सायर चलै, कच्छप थयो विराम ; ५
इत्यादिक अपशुकन तजी, गयौ सनमुख तास ;
सीमा सेढै ऊतस्यो, वीरसेन उल्लास ; ६
उत्तम पृथ्वीपति भणी, साम्हो मेली दूत ;
जौ राणी जायौ हुवै, तौ थाजै रजपूत ; ७
इम सुणी कोपातुर थयौ, उत्तम नाम नरिंद ;
वीरसेन ऊपरि अधिक, रूठो जिम असुरिंद ; ८
झंडा दीसै दल तणा, घणा घुरइ नीसाण ;
सूरा पूरा सहु थकी, हूवा आगेवाण ; ९

ढाल—(१०) हो संग्राम राम नै रावण मंडाणौ एहनी

मांहो माहि ते लसकर वे मिलिया, सनद्ध बद्ध संकलीया ;
टंकारव लागै नवि टलीया, भड़ सहु कोई भिलीया रे ; १ मा०
वाजा रण माहे तिहा वाजै, गरजारव करि गाजै ;
लवरि पिण आवण री लाजै, दल रै सघन दिवाजै हो ; २ मा०
हाथी सहु पहिरी हलकारै, हलकंता नवि हारै ;
सूँडा दंड सबल विसतारै, मद उनमत्ता मारै हो ; ३ मा०
जुगति लड़ण री घोड़ा जाणै, दल में ते दोडाणै ;
वापूकार्या वल बहु, टामक वज्जण टाणै हो ; ४ मा०

रिण मांड्यो सूरे रस राते, बट भागै घण घाते ;
मन थी महिर तजे मद माते, विचि विचि आवै वाते हो ; ५
गड़ गड़ नाल विशाल गडूकै, धरणी तुरत धडूकै ;
चन्द्र बाण नाखंता न चूकै, कल कल स्वर करि कूकै हो ; ६ मा०
डिगै न पायक भरतां डाके, छल खेले छिलती छाके ;
· · · · ···ढाहि चढावै ढाकै हो ; ७ मा०
रुंख तणी परि पग आरोपै, लड़ता रिण नवि लोपै ;
चक्षु तणै फुरकारै चोपै, कहर करता न कोपै हो ; ८ मा०
चमकि लगावै वदन चपेटा, लातां तणा लपेटा ;
धरहर नै जिम मंडै घेटा, तिम भरी रीस ल्यै भेटा हो ; ९ मा०
कुहक वाण छूटण रै कडकै, अरीयां साम्हा अडकै ;
भड़ कायर भाजै तिहा भड़कै, त्रेह त्रसै जिम तड़कै हो ; १० मा०
वलि विच मां वंदूक विछूटै, खिण आरावा खूटै ;
तरवारां त्राछंता तूटै, सुभटा रो सिर फूटै हो ; ११ मा०
अरक छिपायो रज ऊडंती, अंबर जिम ओपंती ;
रुहिर खाल तिहा माहि रहंती, वालारुण वहसंती हो ; १२ मा०
असवारै असवार अटक्कै, लल वल लुंचि लटक्कै ;
संभावै समसेर सटक्कै, तोडै, तुंड तटक्कै हो ; १४ मा०
अंग तणै पोरस्स उमाहे, अरियण नै अवगाहै ;
ढाला री ओटा दे ढाहै, सवल सड़ासड़ साहै ; १५ मा०
रथ सेती जूटा रथवाला, मुडै नहीं मछराला ;
मूँछे वल घालै मतवाला, टलि न करै को टाला ; १६ मा०

पासै सर आवंता पालै, भलकंते निज भालै;
नयणे निपट निजीक निहालै, घाव भड़ाभड़ घालै; १७ मा०

इतरै वेढ हुई उपशमती, कलिरो भाव कहंती;
दुइ दल रा तिहां दीसै दंती, बादल घटा वहंती हो; १८ मा०

प्रलय काल रिण मेघ प्रगट्टै, इत तल थल उद्वट्टै;
भलहल विज्जल खड़ग भपट्टै, छट्टा बाण आछट्टइ हो; १६ मा०

उदक वहै रुधिरालउ लोला, गडा रूप ते गोला;
इन्द्र धनुप भण्डा धज ओला, हयवर पवन हिलोला हो; २० मा०

इणपरि युद्ध तणी विधि जाणै, जे सगवट नें जाणै;
परतखि दशमी ढाल प्रमाणै, विनयचन्द्र सुवखाणै हो; २१ मा०

॥ दूहा ॥

संग्रामांगण नै विपै, जीतो उत्तम राय;
वीरसेन नै जीवतो, बांधि लियौ तिणठाय; १

फेरावी निज आगन्या, उत्तम राजा वेगि;
गाल्यो गह वैरी तणो, भला जगाई तेग; २

वीरसेन मनमां चींतवै, माहरी न रही माम;
हुं पिण जोरावर हतो, एह थयौ किम आम; ३

निज अपराध खमाइ नै, पाए लागौ जाम;
राजा छोड़ि दीयो तुरत, फिर वगस्यौ निज ठाम; ४

ढाल (११)

ओलगड़ी

चित्त मां (२) विचारै राजा एह्वो रे,
हो अपजस भाखै लोक ;
तो हिवै (२) आपुं उत्तम राय नै रे,
राज्य प्रमुख सहु थोक ; १ चि०
केह्नो (२) गुमान रहै नहीं साबतो रे,
गंजी नइं कुण जाय ;
परभवि (२) परमेसर पूज्या विना रे,
जेत कहो किम थाय , २ चि०
राजनै (२) गजादिक सूँपीया रे,
उत्तम नृप नै ताम ;
निज मन (२) चाल्यो गृह वंधन थकी रे,
वीरसेन हित काम ; ३ चि०
क्षण समै (२) सुविहित मुनि चूड़ामणी रे,
हो आव्या युगन्धर सूरि ;
नगर नै (२) समीपै वन मे समोसर्या रे,
हो साधु सहित भरपूर , ४ चि०
आवी नै (२) वन पालक दीध वधामणी रे,
गुरु आगमन प्रघोप ,
वांदिवा (२) चाल्यो निज परवार सुं रे,
हो नृप तेह्नै संतोप ; ५ चि०

राज प्रजा सुख चैन मां रे, प्रवर्त्ते दिन राति ;
इम द्वादशमी ढाल मां, कहै विनयचन्द्र अवदात ; १३ च्या०

॥ दूहा ॥

इण प्रस्तावै समोसर्या, केवलधार मुणिंद ;
चित मा अति उच्छक थई, वादण चाल्यो नरिंद , १
मुनिवर पासै आविनै, वांदे वे कर जोड़ ;
धर्म देशना मुनि दियै, मोह तणा दल मोड़ि ; २
जगवासी जन सामलौ, ए संसार असार ;
तिहां तन धन यौवन निफल, जाता न लहै वार ; ३
पाम्यौ जनम मनुष्य नौ, आरिज कुल सुनिहाल ;
रयण राशि कवड़ी सटै, कोई गमावौ आलि ; ४
श्रुत सुणतां अति दोहिलो, राखै तिण मा चित्त ;
सद्दहणा वलि साचवौ, संयम धरि सुपवित्त , ५
धरम च्यार प्रकार नौ, दान शील तप भाव ;
ते दुर्म्मति छोडीजो, द्यौ कृतान्त सिर घाव ; ६
जनम मरण दुख छोडि नें, जेम लहो शिवराज ;
सांभलि एहवो देशना, हरख्या लोक समाज , ७
हिव राजा पूछै इसुं, स्वामी कहो विचार ;
मैं लखमी पामी घणी, राज्य लह्या वली चार ; ८
हुं वारिधि माहे पड्यो, मीनोदर रह्यो केम :
गणिका घरि शुक किम थयो, भाखौ जिम छै तेम ; ९

च्यारे त्रिया चित्त हरइ रे, अधिको अधिको नेह,
दिवस प्रति जे धरइ रें ;
चित चोखो चिहुं नारि नो रे, गुणवंती कहवाय ;
प्रिउ ऊपरि अति रागणी, ते कथन न लोपै काय , २

सेमै रंभा सारिखी रे दासी गृह नै काम ;
माता नी परै नेहलो, पालै टालै दुख ठाम ; ३

सुख आपै निज पति भणी रे, सुकलीणी सिरताज ;
धरम ध्यान पिणसाचवै, अवसर देखि तजि लाज ; ४ च्यारे०

जेहनै लखमी अति घणी रे, कहतां नावै पार ;
जाणि धनद निज आविनै, भरीयो पूरण भंडार ; ५ च्या०

चालीस लक्ष हयवर भला रे, गज पणि लक्ष चालीस ;
स्पंदन पणि जेहनै छै तितला हीज विसवा वीस ; ६ च्या०

च्यार कोड़ि पायक कह्या रे, ग्रामा गर पणि जास ,
चालीस कोड़ि वखाणियै, दिन दिनमा अधिक प्रकाश ; ७ च्या०

धरम करै उच्छव धरै रे, पूजे जिनवर देव ;
धूजै पातिक थी घणुं, इण रीति राखै टेव ; ८ च्या०

भला कराव्या देहरा रे, जिनवर तणा अलेख ;
यात्र करी जिण जुगति सुं, सहु तीरथ नी सुविशेष ; ९ च्या०

पोष्या पात्र सुपात्र ना रे, छोड्यो सगलो दंड ;
साधर्मिकवच्छल कर्या, चावौ थयो च्यारे खंड ; १० च्या०

पुस्तक जेण लिखाविया रे, जिन आगम सुविचार ;
दानशाला मडाविनै, दान देई [illegible] ; ११ च्या०

संसारी सुख भोगवे रे, च्यार [illegible]

राज प्रजा सुख चैन मा रे, प्रवर्त्ते दिन राति ;
इम द्वादशमी ढाल मां, कहै विनयचन्द्र अवदात ; १३ ज्या०

॥ दूहा ॥

इण प्रस्तावै समोसस्या, केवलधार मुणिंद ;
चित मा अति उच्छक थई, वादण चाल्यो नरिंद ; १
मुनिवर पासै आविनै, वादे वे कर जोड़ ;
धर्म देशना मुनि दियै, मोह तणा दल मोड़ि , २
जगवासी जन साभलौ, ए संसार असार ;
तिहां तन धन यौवन निफल, जाता न लहै वार , ३
पाम्यौ जनम मनुष्य नौ, आरिज कुल सुनिहाल ,
रयण राशि कवडी सटैं, कोई गमावौ आलि ; ४
श्रुत सुणता अति दोहिलो, राखै तिण मा चित्त ;
सद्दहणा वलि साचवौ, संयम धरि सुपवित्त ; ५
धरम च्यार प्रकार नौ, दान शील तप भाव ,
ते दुर्म्मति छोडीजो, द्यौ कृतान्त सिर घाव ; ६
जनम मरण दुख छोड़ि नैं, जेम लहो शिवराज ;
सांभलि एहवो देशना, हरख्या लोक समाज , ७
हिव राजा पूछै इसुं, स्वामी कहो विचार ,
मैं लखमी पामी घणी, राज्य लह्या वली चार ; ८
हुं वारिधि माहे पड्यो, मीनोदर रह्यो केम ;
गणिका घरि शुक किम थयो, भाखौ जिम छै तेम ; ६

ढाल (१३)

होलाई वांभणी, एहनी

सुणि नृप गुण रसीया पूरव अर्जित संबन्ध जो,
जे तैं पाम्यौ रे फल इण हीज भवै रे लो। सु०
नवि छूटै निज कृत कर्म बंध जो,
केवलधारी मुनि इण परि चवै रे लो। १ सु०
भूमि हिमालै पासि नजीक जो,
सुदत्त तिहां रे गांम सुहामणो रे लो। सु०
तिण मां रहै कौटंविक गुण गेह जो,
धनदत्त नाम अति रलीयामणो रे लो। २ सु०
तेहनै रमणी चार सरूप जो,
लखमी तो लाखे गाने गेह मां रे लो। सु०
कितलै दिवसे थयो विरूप जो,
कवडी नौ वित्त मिलै नहीं जेहमां रे लो। ३ सु०
भूख मरंतां कृश थयो अंग जो,
वली जरायै ते थयौ जाजरो रे लो०। सु०
तसु घर आव्या मुनि मन रंग जो,
कौटंबी जाण्यो धन दिन आज नो रे लो। ४ सु०
ते तो च्यारे साधु सुजाण जो,
चोरे लूट्या रे मारग चालतां रे लो। सु०
टाढइं धूजइं तेहना प्राण जो,
महिर आवी रे तास निहालतां रे लो। ५ सु०
वहिराव्या तिण वस्त्र प्रधान जो,
अनुकंपा कीधी रे च्यारे अगना रे लो। सु०

धन धन तुं प्रिय गुणनिधान जो,
मुनि पड़िलाभ्या वस्त्र सुचंगना रे लो। ६ सु०
तिण प्रभावै धनदत्त राय जो,
तूंतौ थयो रे सहु नो अधिपति रे लो। सु०
ताहरै स्त्री पुण्य पसाय जो,
ते ही च्यारे रे अभिनव सरसती रे लो। ७ सु०
देखी किण एक भवि मुनि आन जो,
निंदा कीधी रे तेहनी वणु घणी रे लो। सु०
एतो मीनक नी परि म्लान जो,
मछ जिम वासै गंध देही तणी रे लो। ८
तसु कर्मे काल निवास जो,
तूं तो वसीयो रे मछ ना पेट मां रे लो। सु०
रहीयौ वलि मेनिक आवास जो,
आन पड्यौ रे दुखनी फेट मा रे लो। ९ सु०
इण भवि थी सूवडो कोइ जो,
राख्यो रे तैं तो सहस्रतमै भवै रे लो। सु०
घाल्यो पंजर मां गुण जोइ जो,
हूवो रे पोपट तू पिण तिण ढवै रे लो। १० सु०
वलि अनंगसेना नै पास जो,
पइंलंतर आवी सहीयर सभि भली रे लो। सु०
तिण इण परि कीधो हास जो,
आवौ रे बाई वेश्या लाडिली रे लो। ११ सु०
तिण कर्म तणै वशि एह जो,
अनंगसेना रे गणिका ऊपनी रे लो। सु०
इम सुणि राजादिक तेह जो,
सकल विटंबन जाणी कर्मनी रे लो। १२ सु०

थई पूरी तेरमी ढाल जो,
भाख्यो रे पूरव भव जिण शुभमती रे लो। सु०
एतौ विनयचन्द्र दयाल जो,
नृप परसंसा जेहनी कृत छती रे लो। १३ सु०

॥ दूहा ॥

राज देई निज सुत भणी, उत्तम नृप जिन भक्त ;
गुरु पासे संजम लीयौ, च्यारे स्त्री संयुक्त ; १
चारित पालै निरमलो, तप करि सोपे काय ;
पूरव पाप पखालता, कर्म्म निर्जरा थाय ; २
प्राते अणसण आदरी, पहुता वर सुर लोक ;
च्यार पल्योपम आउखो, जिहाँ छै वहु विह्वोक ; ३
तिहा थी चवि नै सीझसी, महाविदेह मझार ;
अविचल शिव सुख पामसी, नहीं जिहा दुख लिगार ; ४

ढाल (१४)

गूजरी रागे

वस्त्र दान नैं ऊपरै रे, उत्तम चरित्र कुमार ;
सुख संपत लही, हा रे सुख पाम्या श्रीकार ; सु०
इम जाणी नै दान द्यो रे, मन धरि हरख अपार ; १ सु०
गुण गाया मुनिराय ना रे, धन्य दिवस मुझ आज ;
रास कीयौ मन रंग सुं रे, सीधा वछित काज ; २ सु०
चारुचंद्र मुनिवर कीयौ रे, उत्तमकुमर चरित्र ; सु०
ते संबंध निहालनैं रे, जोड्यौ रास विचित्र ; ३ सु०
ओछौ अधिको जे कह्यो रे, कवि चतुराई होइ ; सु०
मिथ्यादुष्कृत वलि कहुं रे, ते सुणज्यो सहु कोइ ; ४ सु०

वचन प्रमाणै जाणि नै रे, मन थी टाली रेख ; सु०
ढाल भली देशी भली रे, कहिज्यो चतुर विशेप ; ५ सु०
श्री खरतर गच्छ जगतमां रे, प्रतपै जाणि दिणद ; सु०
सहु गच्छ मांहे सिर तिलौ रे, ग्रह गण मां जिम चंद ; ६ सु०
गुण गिरुवौ तिहां गच्छपति रे, श्रीजिणचंद सुरिंद ; सु०
महिमा मोटी जेहनी रे, मानै वड़ा नरिंद ; ७ सु०
ज्ञान पयोधि प्रतिबोधिवा रे, अभिनव ससिहर प्राय , सु०
कुमुद चन्द्र उपमावहै रे, समयसुन्दर कविराय ; ८ सु०
तत्पर शास्त्र समर्थिवा रे, सार अनेक विचार ; सु०
वली कलिंदिका कमलनी रे, उल्लासन दिनकार ; ९ सु०
विद्या निधि वाचक भला रे, मेघविजय तसु सीस ; सु०
तस सतीर्थ्य वाचकवरू रे, हर्षकुशल सुजगीश , १० सु०
तासु शिष्य अति शोभता रे, पाठक हर्षनिधान ; सु०
परम अध्यातम धारवा रे, जे योगेन्द्र समान ; ११ सु०
तीन शिष्य तसु जाणियै रे, पंडित चतुर सुजाण ; सु०
साहित्यादिक ग्रंथ ना रे, निर्वाहक गुण जाण ; १२ सु०
प्रथम हर्पसागर सुधी रे, ज्ञानतिलक गुणवंत ; सु०
पुण्यतिलक सुवखाणतां रे, हियड़ो हेज हरखंत ; १३ सु०
तास चरण सेवक सदा रे, मधुकर पंकज जेम , सु०
प्रमुदित चित नी चूपसु, रे, रास रच्यौ मैं एम , १४ सु०
संवत सतरै बावनै रे, श्री पाटण पुर माहिं , सु०
फागुण सुदि पांचम दिनै रे, गुरुवारे उच्छाहि ; १५ सु०

ढालों में प्रयुक्त देसी सूची

महिंदी रंग लागौ	१
हमीरा नी	२,११६
धणरा मारुजी रे लो	२,१८१
घण री विन्दली मन लागौ	४
चात म काढौ व्रत तणी	५
योधपुरीनी	५
चारू नइ विराज हो हजा मारू लोवड़ी	६,१६३
आघा आम पधारो पूज अम घरि विहरण वेला	८,६५
विंदली नी, नणदल विंदली दे	८,६४,१३४
वेगवती ते बाभणी	१०
राजमती तें माहरो मनडौ मोहियो हो लाल	११
वधावानी	१२
चतुर सुजाणा रे सीता नारी	१३
पथीड़ा नी	१४,६०
सासू काठा हे गोहुं पीसाय आपण जास्यु मालवइ, सोनार भणइ	१६,१८७
विछिया नी	१७,१११
ईडर आवा आमली रे	१८
मोतीनी	१६
राजिमती राणी इण परि बोलइ	२०
ओलूनी	२२,१५३
भाभीजी हो डुगरिया हरियाहुवा	२२
ऊभी राजलदे राणी अरज करै छै	२४
इण रिति मोनइ पासजी साभरइ	२५,२२३
हाडा नी	२७,७४

शाति जिन भामणइ जाऊ	२८,४६
रसिया नी	३०,८७,११८
नाटकिया नी	३१
योगिना नी	३२,१२८
छीडी नी	३३
झाझरिया मुनिवर नी	३४
लाछल देवी मल्हार	३५
आवौ आवौजी मेहलै आवतइ	३५
चद्राउला नी	३६
माहरी सही रे ममाणी	३७
थारे महिला ऊपरि मेह झरोखे वीजली हो लाल झरोखे	३८
हजा मारु हो लाल आवउ गोरी रा वाल्हा	३९
फाग	४०
त्रिभुवन तारण पास चिंतामणि रे कि	४१
झूबखड़ा नी	४२
थारै माथै पिचरग पाग सोना रो छोगलउ मारूजी	४३
कर्म हीडोलणइ माई झूलइ चेतन राय (हीडोलणा री)	४४
कड़खा नी	४५
चवर ढुलावै हो गजसिंहजी रो छावौ महुलमंजी	४६
काची कली अनार की रे हा	४७
वीर वखाणी राणी चेलणा	४८,७२,९४,१५९
कत तवाकू परिहरो	५०,१४३
फूली ना गीत नी	५४
मासी नी	५५,१०१
प्रोहितिया नी, प्रोहितिया रै गले जनोई पाट की रे	५७,१४८
जिनजी हो हगत वदन मन मोहतउ हो लाल	५८
जे हट[illegible] मांजगी	५९

अवकउ चौमासौ थे घर आवौ जावइ कहउ राजि	५९
कोइलउ परवत धूंधलउ	६४
देहु देहु नणदल हठीली	६६
सूवरदेना गीतनी	६७
आज माता जोगणी नै चालो जोवा जइयै	७२
सरवर खारो है नीरस-नयणा रो पाणी लागणो है लो	७३
आठ टके ककण लीयो री नणदी थिरकि रह्यउ मोरी बाँह ककणउ मोल लीयउ	७६,८८
भेरे नन्दना	७९,१०६,१६१
चउमासियानी	८०
इठीला वयरी नी	८६,१०४
थारे महिला ऊपरि मोर झरोखे कोइली हो लाल	८९
कित लाख लागा राजाजी रे मालीयइजी	९१,१७६
तारि करतार ससार सागर थकी	९६,१२०
अयोध्या हे राम पधारिया	९८
चीवी दूर खड़ी रहि लोका भरम धरेगा	९९
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड	१०१
जोसीडा नी	१०२
मोहन सुन्दरी ले गयउ	१०३
सोरठ देस सुहामणउ	१०५
हरिया मन लागउ	१०६
यत्तिनी	१०७
गौतम स्वामी समोसर्या	१०९
धण नी मोरठी	११४
मृगनयणी राधाजी रे कत कहा रति माणि राजि	१२६
जिनवर सु मेरो मन लीनो	१३२
नणदल नी	१३७

सीयालाहे भलइ आवीयौ १३६
मेरी वहिनी कहि काई अचरिज वात १४१
हा चन्द्रवदनी हा मृगलोयण हा गोरी गज गेल १४६
विडलै भार घणौ छै राजि १५१
कागलीयो करतार भणी सी परि लिखू रे १५५
पाटोधर पाटीयइं पधारो १५७
कंकणा नी १६४
दस तो दिहाडा मोनै छोड़ रे जोरावर हाडा १६६
आवउ गरवे रमीये रूडा राम सु ं रे १६८
दल वादल वूठा हो नदीया नीर चल्या १७२
नागा किसन पुरी १७४
मुगफली मी वारी आगुली १७६
हस्तीतो चढिज्यो हाडा राव कुमकुमा माहरा वालमा १८४
लटको थारो लोहणी रे १९०
राजा जो मिलै १९२
हो सग्राम राम नै रावण मंडाणो १९६
योलगडी १९९
तवोलणि नी २०१
होलाई वामणी २०४

कठिन शब्दकोष

अ

अकरार=अशक्ति
अकज्ज=निकम्मा, अकार्य
अकीकी=लालरंग का पत्थर
अक्खरा=अक्षर
अखियात=अक्षय, आख्यात, आख्यान, कहावत
अगल-डगल=अटसट
अछइ, अछउ=है, हो
अछीप=अस्पृष्ट
अजेस=आज भी
अटिल=अटल
अडकै=भिडते हैं
अड=आठ
अढारह=अठारह
अणख=ईर्ष्या, नहीं सुहाना
अणदीठी=विना देखी
अणियाला=तीखा
अथाग=अथाह
अदत्तादान=चोरी
अनड=स्वाभिमानी, अनम्र
अनुयोग=जोडना
अनेरी=दूसरी
अपछर=अप्सरा
अपजात=हीन जाति
अबीह=भयरहित
अभ्भटै=आभिडे
अभिग्रह=नियम
अम=हम
अमी=अमृत
अमरप=अमर्ष, खेद, प्रचण्ड
अमीना=हमें
अमोलख=अमूल्य
अम्हाणी=हमारी
अयाण=अज्ञान
अरइ=आरामें (कालचक्र=६ आरे)
अरियण=अरिजन, शत्रु
अलजउ=हस
अलवेसर=प्रभु, प्रियतम
अलजो=उत्कट अभिलाषा
अलूंझयो=उलझ गया
अलवि=सहज
अवगाह=व्याप्त, डुबकी लगाना, लीन होना
अवदात=शुभ, सुन्दर यश
अवचल=अविचल, निश्चल
अवधारो=स्वीकार करो
अवर=अपर, और, दूसरे ।

अविहड़=अविघट, निश्चय
अवहटै=दूर करता है
असाता=असमाधि, अशान्ति
अहिनाण=अधिनान, चिह्न, पहिचान

आ

आउल=आवल, काटेदार वृक्ष
आखडी=नियम
आगेवाण=आगीवान, प्रधान
आगलै=आगे
आगल=अर्गला
आगन्या=आज्ञा
आचर्या=आचरण किया
आछटइ=छूटते हैं
आँजु=अजन डालता हूँ
आडी=प्हेली, काम में आना, रुकावट डालना
आड़ौ=जिद्द, हठ
आणी=लाकर
आदरया=स्वीकार किया
आधाकर्मिक=अधोकर्मिक, जो साधु के निमित्त बना हो।
आन=अन्य
आपइ=स्वय, देता है
आपउ=दो
आफाणी=अपने आप
आविलतप=रूखा व अलोना एक धान्य दिन मे एक ही बार खाना
आम=ऐसा
आराहु=आराधन करता हूँ
आरावा=एक प्रकार का शस्त्र
आलविया=अवलम्बित
आली=सखी
आलइ=व्यर्थ
आलि=छेड़छाड़
आलोचि=विचार कर
आसरौ=आश्रय

इ

इकताई=एकत्व
इवड़ी=ऐसी

उ

उघाड़ी=खोली
उछाहि=उत्साह से
उच्छवक=उत्सुक
उच्छक=उत्सुक
उजमाल=उज्ज्वल, तेजस्वी
उफड़वाट=उजड़ मार्ग
उंठ=साढे तीन
उदाल=नष्ट करना
उदग्र=जोरदार
उदवट्टै=उलटना
उद्देशा=अध्याय
उपस्यउ=उपशात हुआ
उपधान=श्रुताराधनार्थ किया जाने वाला तप

उपाडिनै=उठाकर
ऊपजस्यै=उत्पन्न होगा
उवरा=उमराव
उमाही=उमग, उल्लसित
उयर=उदर, गर्भ
उलटइ=उल्लसित होना
उवग=उपाग
उवावण=उपार्जन
उवेख्यउ=उपेक्षित
उसन्नउ=शिथिलाचरी
ऊठाड़ी=उठाकर
ऊडेवा=उडने के लिए
ऊतावलि=शीघ्रता
ऊधरउ=उद्धार करो
ऊभी=खडी हुई

ए

एकरस्यउ=एक बार
एकलड़ा=अकेले
एहवउ=ऐसा

ओ

ओछउ=न्यून
ओलग=सेवा
ओलइ=ओट, मिस
ओसर्यो=हटना
ओखाणो=कहावत

अं

अंभ=पानी
अंतेउर=अन्त:पुर
अंतगड़=अन्त:कृत, अंतिम समय में कार्य सिद्ध कर मोक्ष जानेवाले
अंदेसउ=आशंका
अंदोह=अंदोलन, कंपन

क

कचोला=प्याला
कड़कै=शब्द करना, कड़कड़ाहट
कन्है=पास, निकट
कडव=कटुक
कड़ा=कृता
कण=धान्य, अंश
कबाण=कमान
कमणा=कमी, न्यूनता
करड़्यो=काटखाया
करण=क्रिया
करसणी=कृपक, किसान
कल=अटकल, उपाय
कवडी=कौड़ी
कवियण=कविजन
कहर=आफत
कन्ता=कान्त, पति
काकर=कंकड़
कोंकल=ललकार
कागल=पत्र
काठो=दृढ
काढतो=निकालते हुए

काढूं=निकालूं
काण=लिहाज, कायदा, इज्जत
कारिमउ=व्यर्थ
कारिज=कार्य
कामल=कश्मल, पाप
किंपाक=एक विष परिणामी मधुर फल
किम=कैसे
किराड़े=किनारे
किसी=कौन सी
कीकी=आँख की पुतली
कुढना=भीतर ही भीतर जलना
कुण=कौन
कूकइ=चिल्लाते, पुकारते है
कूड=झूठ, मिथ्या
कूरम=अक्रूर
केडइ=पीछे
केरी=की
केलवि=प्रयत्न करके, खोज करके
केहना=किसके
केही=कैसी
कोड=उत्कण्ठा
कोतिल=सजावटी (घोड़े)
कोरं=कोने में

ख

खमणा=क्षपणक, दिगम्बर
खमात=सहन होना
खमिजे=क्षमा करना
खरउ=सत्य
खाटइ=भोगता है
खाणी=खान
खातर=खाता वही
खातइ=ख्यातिपूर्वक
खामी=त्रुटि
खिजमति=सेवा
खिण=क्षण
खिसइ=हटता है
खीणउ=क्षीण
खुद=अपराध
खूटि (गयो)=समाप्त (हो गया)
खेड़=हांक कर, चला कर
खेह=धूलि
खोड=त्रुटि
खोली=प्रक्षालित कर

ग

गइन=गगन
गडा=ओले
गणपिटक=द्वादशांगी
गभारे=गर्भगृह
गमइ=सुहाना
गमा=भेद
गरूआ=बड़े
गलगलि=गद्‌गद्
गवाणी=गायी गई

गहकइ=प्रफुल्लित होता है
गहगाटइ=उत्साह से, समारोह से
गहेली=पागल, ग्रथिल
गाने=प्रमाण मे
गाह=गाथा
गीतारथ=गीतार्थ, वहुश्रुत विद्वान
गुडे=लुढकता है
गुणीयण=गुणी जन
गुल=गुड़
गूँगा=मूक, अवोल
गोचरी=मधुकरी, भिक्षार्थ भ्रमण
गोठ=गोष्ठी

घ

घटइ=चाहिए
घाठी=घृष्ट, घसी
घाणी=कोल्हू
घालता=प्रविष्ट करते, लगाते
घाल्यो=डाला
घालिस=डालूगी
घुरइ=बजते हैं
घेटा=मीढा

च

चइन=चैन, आनन्द
चउमाल=चमालीस
चटकउ=उत्साह
चवि=च्यवकर
चरण=चारित्त, चर्या
चरवी=चरी, वटलोइ
चदूआ=चदरवो
चग=अच्छा
चहुटी=चिपकी, लगी
चापइ=दवाना
चारित=सयम, दीक्षा
चावो=प्रिय, चाहवाला
चीत=चित, चिन्ता, याद
चीर=वस्त्र, ओढणा
चुलसी=चौरासी
चूप=इच्छा, चेष्टा, युक्ति
चूरउ=चूर्ण करो
चीगटइ=चिकने, स्निग्ध
चोला=मजीठ, लाल
चौरी=विवाह मण्डप
चौमाल=होसियार, चतुर

छ

छती=रहीहुइ
छब्यो=स्पर्श किया
छाजइ=सुशोभित
छाडस्यु=छोड़ूगा
छाने=गुत
छावरै=छोडे
छाहडी=छाया
छीपे=स्पर्श करे
छेहडइ=अन्त में
छोकरवाद=लडकपन

छोरी=लड़की
छोरू=लड़का

ज

जइयै=जब
जड़ी=मिली
जमवारो=भव, जन्म
जमवारइ=जन्म भर
जलहर=जलधर, मेघ
जसथम=कीर्ति स्तम्भ
जाइगा=जगह
जागरिका=जागरण
जाजरो=जर्जर
जाणपन=ज्ञान
जाति=जन्म से
जाम=जहातक
जाया=जन्मे
जपै=बोलै
जात=यात्रा
जास्यौ=जाओगे
जीत्या=जीते
जीमणी=दाहिनी
जीवाडिस्यु=जिला दूगा
जूअर=जुआ
जेत=जीत, विजय
जेम=जैसे
जेहवी=जैसी
जैत=जय-जीत
जेर=परास्त, निर्जित
जोगता=योग्य, योग्यता
जोड़इ=समकक्ष
जोतरीया=जोड़े गए
जोसीयडो=ज्योतिषी
जोय=देखना
जोवइ=देखता है

झ

झकझोल=झकझोरना, झीलना
झखै=थकता है
झखि झखि=घिस घिसकर
झबूकै=चमकै
झाकझमाल=तेज, जगमगाहट
झाडो=मन्त्र फूक
झाली=पकड़ कर
झाले=पकडे
झीलया=स्नान किया
झूलइ=झूलते हैं
झूली=डोलना, मडराना
झूझ=युद्ध

ट

टलवलै=उत्सुक, व्याकुल
टाढइ=शीत मे
टाढी=शीतल
टामक=ढोल
टालउ=दूर करना, टालना
टाणै=अवसर पर

ठ

ठाणा=स्थान
ठवना=रखना, स्थापित करना
ठीगो=जबरदस्त
ठाढी=ठढी, शीतल
ठारू=शीतल करूँ
ठावा=निश्चित स्थान
ढूकइ=जचता है

ड

डसीया (अहि)=सर्पदश
डाबी=आँधी
डोकरी=बुढिया
डोहला=दोहद
डोलु=डोलना
डाहला=डालियाँ

त

तक=अवसर
तणी=की
तडकै–धूप मे
तत=तत्त्व
तड्की=गर्ज कर
तरफलै=तडफडै, व्याकुल
तलावडी=तलाइ, छोटा सरोवर
तल्पिका=शय्या
तागत=बल
ताग=यज्ञोपवीत
ताणीनइ=तानकर, खींचकर
तिरस=प्यासा, तृषा
तीखी=तीक्ष्ण
तुमचउ=तुम्हारा
तूटै=टूट पडै (आक्रमण)
तूठा=तुष्ट हुए
तेडनइ=बुलाकर
ते तउ=वह तो
तेडावी=बुलाकर
तेवडउ=मानो, निश्चय करो
तेहवउ=वैसा
त्रस=चलते फिरते जीव
त्रसै=फट जाती है
त्राछन्ता=तडाछ से
त्रेह=तह, अन्तर मे प्रविष्ट होना
(पृथ्वी मे पानी का)

थ

थकी=से
थया=हुआ
थाटइं=ठाठ से
थानकइं=स्थान मे
थापइ=स्थापित करे
थापी=स्थापित की
थाय–होता है
थावर=स्थिर जीव
थांरउ=आपका
थासी=होगा
थिर=स्थिर

थुड=वृक्ष का तना; धड़
थुणिया=स्तुति की
थुणु=स्तुति करता हूँ
थेट=ठेठ
थोभ=स्तम्भ

द

दड़ीगो=जबरदस्त
दमिया=दमन किया
दवरक=डोरी
दशऊठण=दसोठन, पुत्र जन्म के १० वें दिन का उत्सव
दहिस्यु=नष्ट करुंगा, जलाऊँगा
दाखवी=दिखाकर
दाखविस्यौ=दिखाओगे
दाझै=दग्ध हो रहा है
दाढगलै=मुंह में पानी आवै
दाव=अवसर
दिवाजइ=प्रकाशित
दिदृक्षायें=देखने की इच्छा से
दिहाड़ला=दिवस
दिसा=दिशि, तरफ
दीकरी=पुत्री
दीठ=देखा, दृष्टि
दीसइ=दिखाई देता है
दीसउ=दीखते हो
दुक्कर=दुष्कर
दुत्तर=दुस्तर
दुहेला=दुखदाई
दूठ=दुष्ट
दूओ=हटने का आदेश, निकालना, ललकारना
दुहवियौ=दुखित किया
देवा=देने के लिए
देसण=देशना, उपदेश
देशना=उपदेश
देहड़ी=शरीर
देहरा=देवगृह, मन्दिर
दोगंधक=इन्द्र के गुरु स्थानीय देव
दोर=डोरी, रस्सी
दोरड़ो=डोरी
दोहिला=दुर्लभ

ध

धणीयाणी=स्वामिनी, स्त्री
धमियउ=तप्त
धरमीण=धर्मात्मा
धवलड़ो=सफेद
धसिवा लागी=प्रविष्ट होने लगी
धीणो=धेनु आदि दुधारु पशु
धीरप=धैर्य्य
धींगो=जबरदस्त
धुखइ=सुलगता है
धुरीण=धुरन्धर, प्रधान
धोरी=प्रधान, संचालक, अगुआ
धंध=जंजाल

न

नटी (जावै)=इनकार करैं
नहै=नमै
नथी=नहीं
नमिया=नमन किया
नय=जानने का प्रकार, तत्व जानने का साधन
नवि=नही
नानडी=बच्ची
नाखइ=गिराता है
नाखता=डालते हुए
नाठउ=नष्ट हुआ
नाठो=भग गया
नाणइ=नहीं लाता है
नाणु=द्रव्य
नालइ=नही देता है
नासंता=भगते हुए
निकाचित=वे कर्म जो भोगे विना न छूटे
निचत=निश्चित
निचोल=निचोड़
निजुत्ति=निर्युक्ति
निटुल=निष्ठुर
निटोल=निश्चित, व्यर्थ
निबद्ध=दृढ बंध (कर्म) जो भोगे विना न छूटे
निरख=दृष्टि
निरूवणा=निरूपण
निरान्ति=निश्चिन्त
निलवट=ललाट
निलौ=निलय, घर
निहाली=निहारकर, देखकर
निहेजा=निस्नेही
निक्षेप=वस्तु सिद्ध करने के प्रकार
नीगमियइ=निर्गमन करना
नीठ=कठिनता से
नीम=नियम
नीसरइ=निकले
नीसरणी=सीढ़ी, निसैनी
नीसाण=उठ पर बजनेवाली नौबत, नगाडे
नेट=अन्तमें
नेम=नियम, त्याग
नेहलउ=स्नेह, प्रेम
नैडौ=निकट

प

पखालता=प्रक्षालित करते
पखी=पक्ष, तरफ की
पगला=चरण पादुका
पचखाण=प्रत्याख्यान, त्याग
पजर=पिंजड़ा
पटली=पट्टी
पटोलैं=पटकूल
पडवज=प्रतिबंध

पड़हो=पटह
पडिवत्ति=प्रतिपत्ति
पडिलाभ्या=प्रतिलाभ्या, साधुओं को दान दिया
पडूर=प्रचुर
पणयालीस=पैंतालीस
पणि, पिण=भी
पतगर्यो=प्रतीति प्राप्त
पतियावै=विश्वास दिलावै
पतीजै=विश्वास करै
पथीडा=पथिक
पन्नता=प्ररूपित, कथित
पयपइ=कहता है
पर्यवा=पर्याय
परइ=जैसी, तरह, भांति
परखियइ=परीक्षा करें
परचावें=कहलाता है
परणी=विवाहिता
परगडउ=प्रगट
परिवल=प्रचुर, बहुत
परिख=जो, परसों
परीयछ=पड़दा
परित्त=असंख्य
परूवणा=प्ररूपणा
पलाद=मांसभोजी, राक्षस
पहुतो=पहुँचा
पाउटीए=सीढ़ियाँ, पगथिए
पाउधारउ=पधारो
पाउले=चरणों में
पाखइ=विना
पाखती=ओर, निकट
पाच=हीरा, रत्न
पाज=पद्या, सेतु
पाड=एहसान
पातरै=अन्तर
पाति=पंक्ति, जातपात
पादपोपगमन=एक विशेष प्रकार का अनशन
पाधरो=सीधा
पानै पड्या=पाले पड़े, धक्के चढ़े
पामीयइ=प्राप्त करें
पामी करी=पाकर
पारेवो=कबूतर
पारिखो=परीक्षा
पालोकड़=पालतू
पासत्था=शिथिल आचारी
पाहण=पाषाण, पत्थर
पिचरकी=पिचकारी
पीठ=पैठ
पीधी=पान की
पीलण=पीलना
पूठा=पीछा
पूठल=पिछली
पूरउ=पूर्ण

पूरवइ=पूर्व दिशा में, पूर्ति करना
पूरस्यइ=पूर्ण करेगा
पूरेस्यै=पूर्ण करेगा, भरेगा
पेसी=प्रवेश कर
पैसता=प्रवेश करते
पोइण=पद्मिनी, कमलिनी
पोतानी=अपनी
पोतानउ=अपना
पोपट=शुक
पोरस, पोरस्स=पौरुष, वल, पुरुषार्थ
प्रभावना=ख्याति
प्रयुजइ=प्रयुक्त करते हैं
प्रहरण=हथियार
प्राहुणा=मेहमान, पाहुने

फ

फरस्या=स्पर्श किया
फलस्यइ=फलेगी
फाटै (मुह)=खुले मुह
फाटै (हृदय)=(हृदय) फटता है
फिटक रयण=स्फटिक रत्न
फीटै=नष्ट होते हैं
फूटरा=सुन्दर
फूंमो=फैल (रूई का)
फेट=फंदा
फेटि=सम्बन्ध
फेड्या=दूर किया
फेरवी=घुमाकर, घुमाई

व

वकोर=शोर, हल्ला
वटका=टुकड़ा
वणस्यै=वनेगी
वधत=वृद्धि
वहिराव्या=दान दिया, अर्पित किया
वारस=द्वादसी
वाकडी=टेढी
वारणे=द्वार पर
वाची=पढकर
वाडी=वाटिका
वाधइ=वढता है
वाधइ=बाधा देना
वाजै=लगना
वावइयै=पपीहा
वार=द्वार
वाभण=ब्राह्मण
वापडा=विचारे
विंव=प्रतिमा
विभाड=विभाजक
विवणी=द्विगुनी
विहूणा=रहित
वीटाणउ=वेष्टित
वीजा=दूसरा
वीझाय=व्यजित होना
वीहती=डरती हुई
वूठा=वृष्टि हुई

पड़ही=पटह
पडिवत्ति=प्रतिपत्ति
पडिलाभ्या=प्रतिलाभ्या, साधुओं को दान दिया
पडूर=प्रचुर
पणयालीस=पैंतालीस
पणि, पिण=भी
पतगस्यो=प्रतीति प्राप्त
पतियावै=विश्वास दिलावै
पतीजै=विश्वास करै
पथीडा=पथिक
पन्नता=प्ररूपित, कथित
पयपइ=कहता है
पर्यवा=पर्याय
परइ=जैसी, तरह, भांति
परखियइ=परीक्षा करें
परचावें=कहलाता है
परणी=विवाहिता
परगडउ=प्रगट
परिवल=प्रचुर, बहुत
परिख=लो, परखो
पगीयछ=पडदा
परित्त=असख्य
परूवणा=प्ररूपणा
पलाद=मांसभोजी, राक्षस
पहुतो=पहुँचा
पाडड़ीए=मींडुएँ, पगथिए
पाउधारउ=पधारो
पाउले=चरणों में
पाखइ=विना
पाखती=ओर, निकट
पाच=हीरा, रत्न
पाज=पद्या, सेतु
पाड=एहसान
पातरै=अन्तर
पाति=पंक्ति, जातपात
पादपोपगमन=एक विशेप प्रका का अनश
पाधरो=सीधा
पानै पड्या=पाले पडे, धक्के चढे
पामीयइ=प्राप्त करें
पामी करी=पाकर
पारेवौ=कबूतर
पारिखो=परीक्षा
पालोकड़=पालतू
पासत्था=शिथिल आचारी
पाहण=पापाण, पत्थर
पिचरकी=पिचकारी
पीठ=पैठ
पीनी=पान की
पीलण=पीलना
पूठा=पीछा
पूठला=पिछली
पूरड=तृण

पूरवइ=पूर्व दिशा मे, पूर्ति करना
पूरस्यइ=पूर्ण करेगा
पूरेस्यै=पूर्ण करेगा, भरेगा
पेसी=प्रवेश कर
पैसता=प्रवेश करते
पोइण=पद्मिनी, कमलिनी
पोतानी=अपनी
पोतानउ=अपना
पोपट=शुक
पोरस, पोरस्स=पोरुष, वल, पुरुपार्थ
प्रभावना=ख्याति
प्रयुजइ=प्रयुक्त करते हैं
प्रहरण=हथियार
प्राहुणा=मेहमान, पाहुने

फ

फरस्या=स्पर्श किया
फलस्यइ=फलेगी
फाटे (मुह)=खुले मुह
फाटे (हृदय)=(हृदय) फटता है
फिटक रयण=स्फटिक रत्न
फीटै=नष्ट होते हैं
फूटरा=सुन्दर
फूंभो=फैल (रुई का)
फेट=फंदा
फेटि=सम्बन्ध
फेड्या=दूर किया
फेरवी=घुमाकर, घुमाई

व

वकोर=शोर, हल्ला
वटका=टुकड़ा
वणस्यै=बनेगी
वधत=वृद्धि
वहिराव्या=दान दिया, अर्पित किया
वारस=द्वादसी
वाकडी=टेढी
वारणे=द्वार पर
वाची=पढकर
वाडी=वाटिका
वाधइ=बढता है
वाधइ=बाधा देना
वाजै=लगना
वावइयै=पपीहा
वार=द्वार
वाभण=ब्राह्मण
वापडा=विचारे
विंव=प्रतिमा
विभाड=विभाजक
विवणी=द्गुनी
विहूणा=रहित
वीटाणउ=वेष्टित
वीजा=दूसरा
वीझाय=व्यजित होना
वीहती=डरती हुई
वूठा=वृष्टि हुई

वूडो=डूब गया
वेउ=दो
वैसो=बैठो
वोलाइ=डूबना
वोहइ=बोध देते हैं
व्रजस्यइ=चलेगा, जायगा, वर्जित होगा

भ

भजउ=भागो, भागते हो, दूर करते हो
भड=भट, योद्धा
भणी=को
भज्यउ=भजन किया
भरड़ाक=तुरन्त
भलाव=सभालना
भलेरी=अच्छी
भविया=भव्य जीवो का
भमता=भ्रमण करते
भरेज्यो=भरना
भागा=भेद
भाउ=भाव
भणवा=नढने के लिए
भाणी=सुहाइ
भाणी=पसन्द आइ
भामणि=भामिनी, स्त्री
भारणि=भारी
भामणा=वारणा लेना
भावठ=सकट
भावइ=चाहे, भले ही
भासइ=कहता है
भीडीयउ=दुखित
भुंइ=पृथ्वी
भुडी=बुरी
भेटा=भिडना, मिलाप
भेट्या=मिला
भोडलो=बुद्धू, भोला
भोलइ=भूलकर
भोलवी=भूलाकर

म

मउज=सुख
मग=मूंग
मच्छर=मात्सर्य
मछरालो=जोरावर
मछराला=गुमानी
मटकार=नेत्रो का सौम्य कटाक्ष
मटकउ=बणाव
मण्ड्यउ=छिड़ गया
मडावै=(मकान) वनवाता है
मल्हार=प्रिय
मलपइ=मस्त, आनन्द करता
महियल=महीतल, पृथ्वी मे
माज=इज्जत
माठी=बुरी, निकृष्ट
माठो=ढुग
मांडिस्यु=करूँगा

माडी=विगतवार
माणु=भोगू
माणे=भोगे
माण=त्रान
माणसां=मनुष्यों को
माण=मान
मातो=मत्त
मानीता=मान्य
माम=अहंकार
माम=सम्मान
मारकी=हिंसक
माल्हु=मौज करू
मावे=समावे, अटै
मावीत्र=माता-पिता
मावीत=माता-पिता
माहोमाहि=परस्पर
माहरा=मेरे
मिसि=न्हाने
मिश=न्हाना
मीचिया=मुद लिये, बन्द कर लिये
मीट=दृष्टी
मीता=मित्र
मीनति=बीनती, प्रार्थना
मुद्‌गशेलिक=मगसिलिया पाषाण (हरे रङ्ग का एक रूखा पत्थर)
मूघ=मुग्ध, मूढ
मुलके=मुस्कराहट
मुहडइ=मुख से
मूओ=मर गया
मूकाय=छोडा जाना
मूकइ=छोड़ता है
मूझाणी=उलझन
मूझि=मुग्ध होकर
मूलिका=उखाडने वाली
मेटि=मिटाओं
मेनिक=मछुवा
मेल्हियइ=लगावेगा
मेलू=छोडू
मेल्हि=छोडो
मेहडा=मेघ
मोटिम=महत्ता
मौड=मुकुट
मोनइ=मुझे
मोरा=मेरा
मोरियउ=मुकुलित हुआ
मोसा=ताना
मोहणी=मोहिनी
मोहनगारउ=मोहित करनेवाला

य

यानी (जानी)=जागती
युगतइ=युक्ति पूर्वक

र

रंगरेल=हर्ष
रङ्गाणी=रङ्गी हुई

रज्जु=रस्सी
रन्न=अरण्य
रमिया=रमण किया
रयण=रत्न
रयणा=रचना
रलियामणा=सुन्दर
रलियालउ=सुन्दर
राखउ=रक्षा करो
राखेवा=रखने के लिए
राची=रंजित होकर
राढू=मोटीडोर, रढू
रातो=रक्त, रचा हुवा
रामति=खेल
रास=राशि, समूह
रीझवइ=रिझाते हैं, रंजन करते हैं
रीव=चिल्लाहट
रीस=रोष
रू=रुई
रूखड़ा=वृक्ष
रूठा=रुष्ट हुए
रूडा=अच्छा
रूवडी=अच्छी
रुहिर=रुधिर, रक्त
रेलि=प्रवाह
रेह=रेखा
रोवराविया=रुला दिया

ल

लगइ=पर्यन्त
लटकउ=चाल
लछन=चिह्न
ललना=लाल, लालन
लच्छि=लक्ष्मी
लवधि=लब्धि, २८ प्रकार
तपस्या से प्राप्त आत्म-शक्ति
लपटाणा=लुब्ध
लखाय=लक्षित होना
लसाय=लिप्त
लवन=छेदन, काटना
लगार=लेश
ललि-ललि=नमन कर
लाग=अवसर
लाघै=उल्लंघन करै
लाछि=लक्ष्मी
लाड=प्यार
लाडिली=प्रिय, प्यारी
लाधी=मिली
लाबो=दीर्घ
लार=साथ, पीछे
ल्यावइ=लाता है
लाव=लेना
लाहइ=लाभ
लाहउ=लाभ
लीणो=लीन हुई

लीधउ=लिया
लूखो=रूखा
लूवरि=लू
लेखवइ=गिनती
लेखइ=हिसाब से
लेवा=लेने के लिए
लोयण=लोचन, नेत्र

व

वइ=अवस्था, वय
वईयर=स्त्री
वउलावता=भेजते, लौटते
वखाण=व्याख्यान
वछ=वत्स
वज्जण=बजने के
वडम=महती
वन=वर्ण
वमिया=वमन किया
वयण=वचन
वरसाला=बरसने वाला
वलू=बलवान
वलि=फिर
वल्या=लौटा
व्यवहारी=व्यापारी
वसीला=निवासी
वहियइ=वहन किया
वहिला=शीघ्र
वाइ=वायु करना
वाच=वचन
वाचना=वाक्य, परम्परा, वाचन
वाची=पढ कर
वाधइ=बढता है
वाटला=कटोरा, वाटका
वाणोत्तर=वाणिज्य करने वाला, गुमास्ता
वातडी=वार्ता
वारू=सुन्दर
वारेवो=वारण करना
वालभ=वल्लभ
वाल्हा=वल्लभ
वालेसर=वल्लभ, प्रियतम
वावत=बजाते हैं
वावरै=व्यय करता है
वासना=बाध
वास=पीछे
वाहला=जल प्रवाह
विगताली=पिछली
विगोवइ=नष्ट करता है
विचरइ=विचरण करता है
विछूटो=वियोग (जीव विछूटो मरना)
विज्जल=विजली
वींद=वर
वींदणी=वधू
विमासण=विमर्श

विषहर=विषधर, साप
विहरमान=विचरते हुए
विचरता=विचरते हुवे
विकूरवो=वैक्रिय लब्धि से उत्पन्न कर के
विरूओ=विरूप, विद्रूप
विरच्चइ=विरक्त होना
विरहण=विरहिनी
विलूधो=विलुब्ध
विहडे=विघटित होना
विह=प्रकार
वेम्फु=छिद्र
वेगलऊ=दूर
वेढ=युद्ध
वेलू=बालूका
वेधाले=वेधक
वेगला=दूर
वोली=बीती

स

सइमुख=सम्मुख
सइण=सज्जन
सइन=स्वय, साथ, सज्जन
सइहथ=अपने हाथ से
सकज=काम का
सगहणो=संक्षिप्तसार
सगला=सभी
संकलि=जंजीर
सकलिया=संकलित हुए
सगवट=रूपक
सघातइ=साथ में
सघाते=साथ में
सद्दहै=श्रद्धा करता है
संपै=सपजै, सम्प्राप्त हो
सभावइ=स्वभाव से
समवड=समान, समकक्ष
समुद्देशा=अध्याय का एक भाग
समवाय=समूह
समय=सिद्धान्त
समास=प्रकरण
समकित=सम्यक्त्व
समाणी=समान, समाविष्ट होना
समियउ=शान्त हुआ
समूर्छिम=स्वतः उत्पन्न जन्तु
स्यु=क्या
सरजित=कर्म, भाग्य
सरिस्यइ=सरेगा, सिद्ध होगा
सरिखा=समान
सलहै=सराहना
सलेहण=सलेखना
सलहेस=सराहना
सलूणा=सलोने, सुन्दर
सवार=सवेरा
ससत्तउ=शिथिलाचारी
ससरण=संसार, सांसारिक

सशिहर=चन्द्र
ससनूर=विशेष सुन्दर
सहगुरू=सद्गुरु
सहीयर=सखि
सहिनाणी=चिन्ह, लक्षण
सहेजा=प्रीतिवाले
साकर=मिश्री
साँक=शका
सागी=सगा
साचवै=रक्षा करता है
साधइ=सिद्ध करता है
साभलो=ध्यानपूर्वक सुनो
साभरिया=स्मरण किया
सामेलो=स्वागत
साहमी=स्वधर्मी
साम्हो=सामने
सामुही=समक्ष
सायक=बाण
सायर=सागर
साल=सल्य
सारेवौ=सुधारना
सारै=भरोंसे
साले=खटके
साव=सर्व, बिलकुल
सासय=शाश्वत
शासता=शास्वत
साहु=साधन करना
साही=पकड़कर
सिलोक=श्लोक
सिझाय=स्वाध्याय
सिझातर=शय्यातर (साधु जिसके घर ठहरे हो वह व्यक्ति
सीझइ=सिद्ध हो
सीझसी=सिद्ध होगा
सुइवो=शयन करना
सुकलीणो=कुलीन
सुकियारथउ=सुकृतार्थ
सुजगीस=अच्छी
सुजान=सुज्ञानी
सूतार=सूत्रधार, मिस्त्री
सूंघा=सुगन्धित
सुयक्खध=श्रुतस्कध
सूम=त्याग
सुहडा=सुभटों मे
सुहणा=सपना
सूअटो=शुक
सूकइ=सूखता है
सूपीया=सौंपे
सुविहित=सुव्यवस्थित
सुहकर=शुभकर
सुहामणी=सुहावनी
सूल=अच्छी तरह
सेषइकाल=चातुर्मास के अतिरि का समय

सेजडी=शय्या
सेजवाला=वाहन विशेष
सेझै=शय्या में
सेलडी=ईख
सेहरो=शेखर, मुकुट
सोगी=शोकीले, दुःखी
सोढो=वर, साथी, नायक
(राजपूतों की एक जाति)
सोरभ=सौरभ, सुगन्ध
सोवन=स्वर्ण
सोस=सोच
सोहग=सौभाग्य
सोहन=शोभन
सोह=शोभा

ह

हलवेहलुवे=धीरे-धीरे
हसलउ=हंस
हाथ मुकावण=हथलेवा छुडाना
हाथ मेलावे=हस्त मेलापक
हाम=स्वीकृति, हैंकारा
हिलोल्यउ=आन्दोलित
हिंडोलणा=हिंडोला, झूला
हितूयउ=हितैषी
हिव=अब
हिवणा=अब
हीणउ=हीन
हीणो=रहीत
हींचिता=झूलते हुए
हीर=हीरा
हीयडा=हृदय
हीसत=हर्षित होता है
हूंस=उमंग
हुतउ, हतउ=था
हेज=प्रेम, स्नेह
हेजालू=प्रेमी
हेठ=नीची
हेलड=सहज